उदाना

तिपिटक >> सुत्त पिटक >> खुद्दक निकाय >> उडान
पाली भाषा से डॉसन मेलान्चथॉन स्ट्रॉन्ग द्वारा अनुवादित

अंतर्वस्तु

1अध्याय 1 - प्रबोधन काल
2अध्याय 2 - मुसिलिंडा
3अध्याय 3 - "नंदा"
4अध्याय 4 - "मेघिया"
5अध्याय 5 - सोना थेरा
6अध्याय 6 - जकन्द
7अध्याय 7 - कुला
8अध्याय 8 - पातालगामी
9अंग्रेजी डाउनलोड करें/देखें
10मूल पाली संस्करण
10.1पाली-अंग्रेजी संस्करण
10.2पाली-देवनागरी संस्करण (संस्कृत/हिन्दी लिपि)

अध्याय 1 - प्रबोधन काल

पाली संस्करण: पाली-अंग्रेजी संस्करण और पाली-देवनागरी संस्करण

1. मैंने ऐसा सुना है। एक बार भगवान बुद्ध ने बुद्धत्व प्राप्त करने के तुरंत बाद उरुवेला में नेरंजारा नदी के किनारे, ज्ञान के वृक्ष की तलहटी में निवास किया। उस समय भगवान बुद्ध सात दिनों तक बैठे रहने के बाद मोक्ष के आनंद का अनुभव किया।

जब सात दिन पूरे हो गए, तो भगवान बुद्ध समाधि की अवस्था से उठे और रात के पहले पहर में, कारण और परिणाम की श्रृंखला का क्रमवार गहन चिंतन किया, इस प्रकार: यदि यह (अवस्था) है, तो दूसरी (अवस्था) उत्पन्न होती है, इस (अवस्था) के उत्पन्न होने से एक (अवस्था) उत्पन्न होती है, अर्थात्:

अज्ञान से कल्पनाएँ उत्पन्न होती हैं, कल्पनाओं से चेतना उत्पन्न होती है, चेतना से मन और भौतिक रूप उत्पन्न होते हैं, मन और भौतिक रूप से छह इंद्रियाँ उत्पन्न होती हैं, छह इंद्रियों से स्पर्श उत्पन्न होता है, स्पर्श से संवेदनाएँ उत्पन्न होती हैं, संवेदनाओं से इच्छा उत्पन्न होती है, इच्छा से आसक्ति उत्पन्न होती है, आसक्ति से जन्म उत्पन्न होता है, जन्म से क्षय, मृत्यु, दुःख, विलाप, पीड़ा, शोक और निराशा उत्पन्न होती है। इस प्रकार दुखों का संपूर्ण समूह उत्पन्न होता है।

और इस संदर्भ में, उस अवसर पर, भगवान बुद्ध ने यह गंभीर वचन कहा:

जब परिश्रमी ध्यानमग्न ब्राह्मण को अस्तित्व की परिस्थितियाँ स्पष्ट हो जाती हैं, जब वह कारण और परिणाम की प्रकृति को समझ लेता है, तब सभी संदेह दूर हो जाते हैं।

2. मैंने ऐसा सुना है। एक बार भगवान बुद्ध ने बुद्धत्व प्राप्त करने के तुरंत बाद उरुवेला में नेरंजारा नदी के किनारे, ज्ञान के वृक्ष की तलहटी में निवास किया। उस समय भगवान बुद्ध सात दिनों तक बैठे रहने के बाद मोक्ष के आनंद का अनुभव किया।

जब सात दिन पूरे हो गए, तो भगवान बुद्ध समाधि की अवस्था से उठे और रात के मध्य पहर में उन्होंने कारण और परिणाम की श्रृंखला का अप्रत्यक्ष क्रम में गहन चिंतन किया, जो इस प्रकार है:

"यदि यह (अवस्था) मौजूद नहीं है, तो दूसरी (अवस्था) उत्पन्न नहीं होती; इस (अवस्था) के उत्पन्न न होने से कोई (अवस्था) उत्पन्न नहीं होती, अर्थात्;"

अज्ञान के नाश से सृजनात्मक विचार (संहार/संस्कार) नष्ट होते हैं, सृजनात्मक विचारों के नाश से चेतना नष्ट होती है, चेतना के नाश से मन और भौतिक रूप नष्ट होते हैं, मन और भौतिक रूप के नाश से छह इंद्रियां नष्ट होती हैं, छह इंद्रियों के नाश से स्पर्श क्रिया नष्ट होती है, स्पर्श क्रिया के नाश से संवेदनाएं नष्ट होती हैं, संवेदनाओं के नाश से इच्छाएं नष्ट होती हैं, इच्छाएं नष्ट होने से आसक्ति नष्ट होती है, आसक्ति के नाश से सृजन क्रिया नष्ट होती है, सृजन क्रिया के नाश से पुनर्जन्म नष्ट होता है, और पुनर्जन्म के नाश से क्षय, मृत्यु, दुःख, विलाप, पीड़ा, शोक और निराशा नष्ट होती हैं। इस प्रकार दुखों का संपूर्ण समूह समाप्त हो जाता है।

और इस संदर्भ में, उस अवसर पर भगवान बुद्ध ने यह गंभीर वचन कहा:
जब परिश्रमी, ध्यानमग्न ब्राह्मण को अस्तित्व की अवस्थाओं का ज्ञान हो जाता है, जब वह कारणों के विनाश को समझ लेता है, तब सभी संदेह दूर हो जाते हैं।
3. मैंने ऐसा सुना है। एक बार भगवान बुद्ध ने बुद्धत्व प्राप्त करने के तुरंत बाद उरुवेला में नेरंजारा नदी के किनारे, ज्ञान के वृक्ष की तलहटी में निवास किया। उस समय भगवान बुद्ध सात दिनों तक बैठे रहने के बाद मोक्ष के आनंद का अनुभव किया।
सात दिन बीत जाने पर, भगवान बुद्ध समाधि अवस्था से उठे और रात्रि के अंतिम पहर में प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष दोनों प्रकार के कर्मों के क्रम का गहन चिंतन किया। अब अज्ञान के पूर्ण नाश से सृष्टि का अंत हो जाता है। और इस अवसर पर, भगवान बुद्ध ने यह गंभीर वचन कहा:
"जब परिश्रमी, ध्यानमग्न ब्राह्मण को अस्तित्व की परिस्थितियाँ ज्ञान प्राप्त होती हैं, तो वह प्रलोभक की सेनाओं को तितर-बितर करते हुए सूर्य के समान, अंतरिक्ष में अपनी किरणों को फैलाता है।"
4. मैंने ऐसा सुना है। एक बार भगवान बुद्ध ने बुद्धत्व प्राप्त करने के तुरंत बाद उरुवेला में नेरंजारा नदी के किनारे, 'बकरी चराने वाले' बरगद के वृक्ष की तलहटी में निवास किया। उस समय, भगवान बुद्ध सात दिनों तक बैठे रहने के बाद मोक्ष के आनंद का अनुभव किया। और सातवें दिन के अंत में भगवान बुद्ध समाधि की अवस्था से उठे।
अब एक अभिमानी ब्राह्मण भगवान बुद्ध के पास गया और उनके निकट आकर उन्हें प्रणाम किया। मित्रता और शिष्टाचार का आदान-प्रदान करने के बाद, वह आदरपूर्वक एक तरफ खड़ा हो गया और इस प्रकार खड़े होकर उसने भगवान बुद्ध से कहा, “हे गौतम जी, ब्राह्मण के लिए श्रेष्ठता का मानक क्या है और उसे किस प्रकार के कर्म करने चाहिए?”
और इस संदर्भ में, उस अवसर पर, भगवान बुद्ध ने यह गंभीर वचन कहा:
जो व्यक्ति बुराई का त्याग कर लेता है, जो विनम्र, अपवित्रता से मुक्त, आत्मसंयमी, ज्ञानवान और पवित्र ब्रह्मचर्य जीवन व्यतीत करता है, वही वास्तव में ब्राह्मण कहलाता है। उसके लिए संसार में कहीं भी कोई इच्छा नहीं होती।
5. मैंने ऐसा सुना है। एक बार भगवान बुद्ध सावत्थी में जेतवन में, अनाथपिंडिका के उद्यान में निवास कर रहे थे। उस समय पूज्य भिक्षु सारिपुत्त, महामोगल्लन, महाकस्सपा, महाकच्चयन, महाकोत्थिता, महाकप्पिना, महाचुंड, अनुरुद्ध, रेवता, देवदत्त और आनंद भगवान बुद्ध के पास आए। भगवान बुद्ध ने दूर से ही पूज्य भिक्षुओं को आते हुए देखा और उन्हें देखकर अपने शिष्यों को पुकार कर कहा, "हे भिक्षुओं, देखो, ये पूज्य ब्राह्मण आ रहे हैं, देखो, हे भिक्षुओं, ये पूज्य ब्राह्मण निकट आ रहे हैं।"
जब ये शब्द कहे गए, तो जन्म से ब्राह्मण एक भिक्षु ने भगवान बुद्ध से कहा, "ब्राह्मण से अपेक्षित आचरण का मानक क्या है और उसे किस प्रकार के कार्य करने चाहिए?"
और इस संदर्भ में, उस अवसर पर, भगवान बुद्ध ने यह गंभीर वचन कहा:
"जो सदा सचेत होकर चलते हैं, जिन्होंने बुराई का त्याग कर दिया है, जिन्होंने बंधनों को तोड़ दिया है, जो ज्ञानी हैं, वे ही इस संसार में ब्राह्मण हैं।"
6. मैंने ऐसा सुना है। एक बार भगवान बुद्ध कलंदिका-निवापा में बांस के वन में स्थित राजगृह में निवास कर रहे थे। उस समय पूज्य महाकस्सपा पिप्पली गुफा में निवास कर रहे थे और एक गंभीर बीमारी से पीड़ित थे। बाद में पूज्य महाकस्सपा रोग से ठीक हो गए और स्वस्थ होने पर उनके मन में यह विचार आया: "यदि मैं भिक्षा मांगने के लिए राजगृह में प्रवेश करूं तो क्या होगा?" उस समय पूज्य महाकस्सपा की सेवा में लगभग 500 देवता थे, जो उनके लिए भिक्षा जुटाने में तत्पर थे। पूज्य महाकस्सपा ने उन 500 देवताओं को विदा करके सुबह के समय वस्त्र धारण किए और अपने साथ भिक्षापात्र और वस्त्र लेकर भिक्षा मांगने के लिए राजगृह में प्रवेश किया और झुग्गी-झोपड़ियों, गरीबों की गलियों और बुनकरों के निवास वाले रास्तों पर गए।
और भगवान बुद्ध ने पूज्य महाकस्सपा को राजगृह में भिक्षा मांगते हुए, झुग्गी-झोपड़ियों में, गरीबों की गलियों में और बुनकरों के निवास वाले रास्तों में घूमते हुए देखा।
और इस संदर्भ में, उस अवसर पर, भगवान बुद्ध ने यह गंभीर वचन कहा:
"जो त्यागे हुए और अज्ञात को प्यार करता है, जिसने स्वयं को वश में कर लिया है, जो सत्य में दृढ़ रहता है, जिसने बुराई का नाश किया है और पाप को दूर किया है, उस व्यक्ति को मैं ब्राह्मण कहता हूँ।"
7. मैंने ऐसा सुना है। एक बार भगवान बुद्ध पताली में, अजकालपका मठ में, अजकालपका नामक यक्ष की कुटिया में ठहरे हुए थे। उस समय भगवान बुद्ध खुले में बैठे थे, रात का घना अंधेरा था, और एक बादल से एक-एक करके बारिश की बूँदें गिर रही थीं। अजकालपका नामक यक्ष, भय, कंपकंपी और रोंगटे खड़े करने की इच्छा से भगवान बुद्ध के पास आया, और जब वह उनके बिल्कुल करीब पहुँच गया, तो उसने तीन तीखी चीखें मारते हुए कहा, "हे समना, यह तुम्हारी दुष्ट आत्मा है।" इस संबंध में, उस अवसर पर, भगवान बुद्ध ने यह गंभीर वचन कहा:
"जब ब्राह्मण ज्ञान में लीन होकर अस्तित्व की अवस्थाओं से परे चला जाता है, तो न तो भूत-प्रेत उसे डरा सकते हैं और न ही राक्षस।"

8. मैंने ऐसा सुना है। एक बार भगवान बुद्ध सावत्थी में, जेतवन में, अनाथपिंडिका के उद्यान में निवास कर रहे थे। उस समय पूज्य संगमजी भगवान बुद्ध के दर्शन करने सावत्थी आए थे।

अब पूज्य संगमजी की वृद्ध पत्नी ने सुना कि उनके स्वामी संगमजी सावत्थी पहुँच गए हैं, इसलिए वह अपने बच्चे को साथ लेकर जेतवन चली गईं।

उस समय पूज्य संगमजी एक वृक्ष के नीचे दोपहर के विश्राम का आनंद ले रहे थे। उनकी वृद्धाश्रम उनके पास गईं और उनके निकट आकर बोलीं, "हे समना, यह आपका छोटा पुत्र है, आप इसे प्यार से पालें।"

जब उसने ऐसा कहा, तो पूज्य संगमजी मौन रहे। उसने दूसरी और तीसरी बार कहा, "हे समना, यह तुम्हारा छोटा बेटा है, इसका प्यार करो।" जब उसने ऐसा कहा, तो पूज्य संगमजी मौन रहे। तब वृद्धा ने बच्चे को पूज्य संगमजी के समक्ष रखकर यह कहते हुए प्रस्थान किया, "हे समना, यह तुम्हारा बेटा है, इसका प्यार करो।" पूज्य संगमजी ने न तो बच्चे की ओर देखा और न ही उससे बात की। तब वृद्धा ने पूज्य संगमजी की सहमति से थोड़ी दूर जाकर देखा कि पूज्य संगमजी न तो बच्चे की ओर देख रहे हैं और न ही उससे बात कर रहे हैं, तो उसके मन में यह विचार आया, "यह समना अपने बेटे की परवाह नहीं करता", और मुड़कर वह अपने बेटे को लेकर चली गई।

और भगवान बुद्ध ने, मनुष्यों की दृष्टि से परे स्पष्ट और दिव्य दृष्टि से, पूज्य संगमजी की वृद्ध पत्नी की इस विपत्ति को देखा।

और इस संदर्भ में, उस अवसर पर, भगवान बुद्ध ने यह गंभीर वचन कहा:

"वह न तो अपने आगमन पर प्रसन्न होता है, न ही अपने प्रस्थान पर शोक करता है: इस संगमजी को, जो आसक्ति से मुक्त है, मैं ब्राह्मण कहता हूँ।"

9. मैंने ऐसा सुना है। एक बार भगवान बुद्ध गया के पास गयासिस में निवास कर रहे थे। उस समय गया के पास जटाधारी तपस्वियों का एक बड़ा समूह था, जो बर्फीली सर्दियों की रातों और सुबह की ठंड में गया के पास पानी से बाहर निकलते और उसमें डुबकी लगाते, एक दूसरे का अभिषेक करते और अग्नि से यज्ञ करते थे—वे इस प्रकार शुद्धि प्राप्त करने का विचार रखते थे।

और भगवान बुद्ध ने जटाधारी तपस्वियों को गया के पास पानी से निकलते और उसमें डुबकी लगाते हुए देखा, वे एक दूसरे का अभिषेक कर रहे थे और अग्नि से यज्ञ कर रहे थे, यह सोचकर कि इस प्रकार वे शुद्धि प्राप्त करेंगे।

और इस संदर्भ में, उस अवसर पर, भगवान बुद्ध ने यह गंभीर वचन कहा:

"जल से शुद्धि नहीं होती, चाहे लोग कितनी भी देर तक स्नान करें; जिसमें सत्य और धर्म का वास होता है, वही मनुष्य शुद्ध होता है, वही ब्राह्मण होता है।"

10. मैंने ऐसा सुना है। एक बार भगवान बुद्ध अनाथपिंडिका के जेतवन, सावत्थी में निवास कर रहे थे। उस समय बाहिया दारुचिरिया सुप्पारिका (मुंबई/बॉम्बे के पास) में समुद्र तट पर रहते थे। उनका आदर, सम्मान और आदर किया जाता था। उन्हें भिक्षुओं की सभी आवश्यक वस्तुएँ, जैसे वस्त्र, भिक्षा, बिस्तर और रोग होने पर दवा, प्राप्त होती थीं। बाहिया दारुचिरिया के मन में यह विचार आया: "क्या मैं वास्तव में इस संसार में संतों में से एक नहीं हूँ, या कम से कम उन लोगों में से एक नहीं हूँ जिन्होंने संतत्व के मार्ग पर चलना शुरू कर दिया है?"

कुछ देव, जो बाहिया दारुचिरिया के पूर्व रक्त संबंधी थे और उन पर दया करते थे तथा उनके कल्याण में रुचि रखते थे, उन्होंने स्वयं बाहिया दारुचिरिया के मन में आए विचार को जान लिया। वे उनके पास गए और उनके निकट आकर बोले, “हे बाहिया, तुम न तो संत हो और न ही तुमने संतत्व के मार्ग पर चलना शुरू किया है। तुम्हारा मार्ग ऐसा नहीं है जिससे तुम संत बन सको या संतत्व के मार्ग पर चल सको। परन्तु इन दिनों, इस लोक में और देवताओं के लोक में, संत और संतत्व के मार्ग पर चलने वाले लोग विद्यमान हैं। हे बाहिया, उत्तर देश में सावत्थी नामक एक नगर है। वहाँ इस समय परम पूज्य (भगवान बुद्ध), वह संत, परम बुद्ध निवास करते हैं; और वह भगवान बुद्ध, वह संत, संतत्व का उपदेश देते हैं।” इन देवताओं द्वारा उकसाए जाने पर बाहिया सुप्पारिका से निकलकर एक ही रात में सावत्थी पहुँच गया, जहाँ भगवान बुद्ध अनाथपिंडिका के जेतवन में निवास करते थे। उस समय बहुत से भिक्षु खुले में व्यायाम कर रहे थे। बाहिया भिक्षुओं के पास गया और उनके निकट आकर बोला, “हे पूज्यवर, भगवान बुद्ध, वह संत, परम बुद्ध, अब कहाँ हैं? मैं उनके दर्शन के लिए व्याकुल हूँ।”

"हे बाहिया, परम पूज्य भगवान बुद्ध भिक्षा ग्रहण करने के लिए भीतरी प्रांगण में प्रवेश कर चुके हैं।"

बाहिया व्याकुल होकर जेतवन से निकलकर सावत्थी में भगवान बुद्ध को भिक्षा मांगने के लिए विचरण करते हुए देखा। भगवान बुद्ध कृपालु, सुंदर, शांत और संयमित थे, मानो उन्होंने आत्म-विजय की परम शांति प्राप्त कर ली हो। उन्हें देखकर बाहिया उनके पास गए और उनके चरणों में सिर झुकाकर प्रणाम किया और कहा, “हे भगवान बुद्ध, मुझे उपदेश दीजिए; हे सुखी, मुझे उपदेश दीजिए, ताकि जीवन भर यह मेरे सुख और कल्याण का कारण बने।” ये शब्द सुनकर भगवान बुद्ध ने बाहिया से कहा, “यह समय उपयुक्त नहीं है, मैं भिक्षा मांगने के लिए नगर में प्रवेश कर चुका हूँ।”

दूसरी बार बाहिया दारुचिरिया ने भगवान बुद्ध से कहा: "हे प्रभु, यह जानना कठिन है कि हम में से पहले मृत्यु किसे आएगी; भगवान बुद्ध को या मुझे; हे भगवान बुद्ध, मुझे यह सिद्धांत सिखाइए; हे सुखी, मुझे यह सिद्धांत सिखाइए, ताकि मेरे पूरे जीवन में यह मेरे कल्याण और सुख के लिए हो।"

दूसरी बार भगवान बुद्ध ने बाहिया से कहा: "समय ठीक नहीं चुना गया है, मैं भिक्षा मांगने के लिए शहर में आया हूं।"
हे बाहिया, तुम्हें यह सीखना चाहिए कि जो देखा जाता है, उसका थोड़ा ही देखा जाता है, जो सुना जाता है, उसका थोड़ा ही सुना जाता है, जो सोचा जाता है, उसका थोड़ा ही सोचा जाता है, और जो जाना जाता है, उसका थोड़ा ही जाना जाता है; इसलिए, हे बाहिया, यह सीखना चाहिए कि क्योंकि जो देखा जाता है, उसका थोड़ा ही देखा जाता है, इत्यादि। [यहाँ पाठ त्रुटिपूर्ण है और व्याख्या अपूर्ण है। अनुवादक]; यही दुख का अंत है।
भगवान बुद्ध द्वारा धर्म के संक्षिप्त उपदेश से बाहिया का हृदय आसक्ति और पापों से मुक्त हो गया। भगवान बुद्ध ने बाहिया को इस प्रकार संक्षिप्त उपदेश देकर प्रस्थान किया। फिर हुआ यह कि भगवान बुद्ध के प्रस्थान के कुछ ही समय बाद, बाहिया को एक जंगली बछड़े ने गिरा दिया और उसकी मृत्यु हो गई। जब भगवान बुद्ध ने भिक्षा मांगने के बाद अपना दिन का भोजन समाप्त कर लिया, तो वे भिक्षुओं के एक बड़े दल के साथ नगर से निकले और उन्होंने बाहिया दारुचिरिया को मृत पाया। उन्होंने भिक्षुओं को अपने पास बुलाया और कहा, "हे भिक्षुओं, बाहिया के शरीर को ले आओ, उसे पलंग पर रखो, ले जाओ और उसका दाह संस्कार करो, और बाद में अवशेषों पर एक टीला बनाओ - क्योंकि हे भिक्षुओं, यह एक साथी संत है जिसका निधन हो गया है।"
“ऐसा ही हो, प्रभु,” भिक्षुओं ने भगवान बुद्ध की बात मानते हुए कहा। फिर उन्होंने बाहिया के शरीर को उठाया, पलंग पर रखा, उसे ले गए और उसका अंतिम संस्कार किया तथा बाद में अवशेषों पर एक टीला बनाया।
और वे भगवान बुद्ध के पास गए और उनके निकट आकर उन्हें प्रणाम किया और आदरपूर्वक एक तरफ बैठ गए। इस प्रकार बैठे हुए उन भिक्षुओं ने भगवान बुद्ध से कहा, “हे प्रभु, बाहिया का शरीर दाह संस्कार कर दिया गया है और टीला बना दिया गया है; वे कहाँ गए हैं और उनका भविष्य क्या होगा?”
"हे भिक्षुओं, एक बुद्धिमान व्यक्ति बाहिया था; उसने सर्वोच्च अवस्था की प्राप्ति के लिए निम्न कर्तव्यों का पालन किया; उसने मुझे धर्म के विषय में कभी कोई प्रश्न पूछकर परेशान नहीं किया। हे भिक्षुओं, बाहिया दारुचिरिया का अब अस्तित्व नहीं रहा।"
और इस संदर्भ में, उस अवसर पर, भगवान बुद्ध ने यह गंभीर वचन कहा:--
जहां जल, पृथ्वी, ऊष्मा, वायु का कोई स्थान नहीं है, वहां न कोई प्रकाश जलता है, न सूर्य चमकता है, न चंद्रमा अपनी किरणें बिखेरता है, वहां अंधकार का घर नहीं है। जब गहन मौन चिंतन में पवित्र ऋषि सत्य को प्राप्त कर लेते हैं, तब वे सुख-दुख से मुक्त हो जाते हैं, साकार और निराकार जगत से मुक्त हो जाते हैं।

अध्याय 2 - मुसिलिंडा
पाली संस्करण: पाली-अंग्रेजी संस्करण और पाली-देवनागरी संस्करण
1. मैंने ऐसा सुना है। एक अवसर पर, बुद्धत्व प्राप्त करने के बाद, भगवान बुद्ध उरुवेला में, नेरंजारा नदी के किनारे, मुचिलिंडा वृक्ष की तलहटी में निवास करते थे।
उस समय, भगवान बुद्ध सात दिनों तक ध्यान की मुद्रा में बैठे रहे और उन्होंने मुक्ति के आनंद का अनुभव किया।
फिर अचानक असमय एक विशाल बादल प्रकट हुआ और सात दिनों तक वर्षा होती रही, ठंडी हवाएँ चलती रहीं और अंधकार छा गया। नागराज मुचिलिंडा अपने गुप्तलोक से प्रकट हुए और भगवान बुद्ध के शरीर के चारों ओर सात बार अपनी कुंडली लपेटकर, अपने नाग फन से बुद्ध के सिर के ऊपर एक विशाल छत्र बना लिया और मन ही मन ये शब्द कहे: “भगवान बुद्ध को न तो शीतलता स्पर्श करे, न ही ऊष्मा, न मक्खियाँ, न मच्छर, न हवाएँ, न सूर्य की गर्मी उन्हें कष्ट पहुँचाए।”
सातवें दिन के अंत में, भगवान बुद्ध समाधि की अवस्था से उठे और नागराज मुचिलिंडा ने देखा कि आकाश निर्मल और बादलों से रहित है, तो उसने भगवान बुद्ध के शरीर से अपने कुंडल खोल दिए और अपने स्वरूप को छुपाते हुए एक युवक का रूप धारण कर भगवान बुद्ध के सामने हाथ जोड़कर उनका प्रणाम किया। इस अवसर पर, भगवान बुद्ध ने यह गंभीर वचन कहा:
"शांतिप्रिय व्यक्ति का एकांत कितना मधुर होता है, उस व्यक्ति का जिसने सत्य को सुना और समझा है!"
द्वेष रहित होना सुखदायी है! सभी प्राणियों के प्रति संयमी होना सुखदायी है! कामवासना से मुक्त होना सुखदायी है! कामवासना पर विजय प्राप्त करने वाला सुखी है!
'मैं हूं' की धारणा को हटा देना ही परम आनंद है!
2. मैंने ऐसा सुना है। एक बार भगवान बुद्ध अनाथपिंडिका के उद्यान, जेतवन में, सावत्थी में निवास कर रहे थे।
उस समय बड़ी संख्या में भिक्षु परिक्रमा पूरी करके दोपहर का भोजन करने के बाद मठ के राजकीय कक्ष में एकत्रित हुए और अपने-अपने स्थानों पर बैठ गए। तभी यह वाद-विवाद शुरू हुआ: “हे भिक्षुओं, दो राजाओं में से, राजा मगध सेनिया बिम्बासर या राजा पसेनदी कोसल, कौन सा राजा सबसे धनी, सबसे अधिक संपत्ति, खजाने और रथों का स्वामी, सबसे बलवान, सबसे शक्तिशाली और सबसे बलवान है?” इस प्रकार के वाद-विवाद में उस समय भिक्षु व्याकुल थे।
और भगवान बुद्ध संध्याकाल में अपने एकांत ध्यान से उठे और मठ के राजकीय कक्ष में गए। वहाँ पहुँचकर वे निर्धारित आसन पर बैठ गए और भिक्षुओं को अपने पास बुलाकर बोले, "हे भिक्षुओं, आप सब यहाँ किस विषय पर विवाद और मतभेद उत्पन्न हुए हैं?"

अभी-अभी, प्रभु, जब हमने अपने चक्कर पूरे कर लिए और दोपहर का भोजन समाप्त कर लिया, तो हम मठ के राजकीय कक्ष में एकत्रित हुए और अपने-अपने स्थानों पर बैठ गए और इस विषय पर एक विवाद उत्पन्न हुआ।
हे प्रभु, जब भगवान बुद्ध आए थे, तब यही बात हमारे बीच विवाद और मतभेद का विषय थी।
हे भिक्षुओं, आप जैसे कुलीन परिवारों के वंशजों के लिए, जिन्होंने धर्म के लिए अपने घर त्यागकर संन्यासी जीवन व्यतीत किया है, ऐसे विवादों में पड़ना उचित नहीं है। हे भिक्षुओं, जब आप एकत्रित हों, तो इन दो में से एक करना अनिवार्य है: धार्मिक प्रवचन या मौन।
और इस संदर्भ में, उस अवसर पर, भगवान बुद्ध ने यह गंभीर वचन कहा:
"पृथ्वी पर या देवताओं के राज्य में जो भी इंद्रिय सुख हो, वह इच्छा के नाश से उत्पन्न होने वाले आनंद के सोलहवें भाग के बराबर भी नहीं है।"
3. मैंने ऐसा सुना है। एक बार भगवान बुद्ध अनाथपिंडिका के उद्यान, जेतवन में, सावत्थी में निवास कर रहे थे।
उस समय, सावत्थी और जेतवन के बीच कहीं, कुछ युवक लाठियों से एक साँप पर हमला कर रहे थे। तब भगवान बुद्ध ने सुबह के समय वस्त्र धारण करके और अपना भिक्षापात्र और वस्त्र लेकर सावत्थी में भिक्षा ग्रहण करने के लिए प्रवेश किया। तब भगवान बुद्ध ने सावत्थी और जेतवन के बीच कहीं, इन युवकों को लाठियों से एक साँप पर हमला करते देखा।
और इस संदर्भ में, उस अवसर पर भगवान बुद्ध ने यह गंभीर वचन कहा:
वह अपनी ही खुशी की तलाश में था, उसने जीवित प्राणियों को हानि पहुंचाई।
ऐसे व्यक्ति को परलोक में कोई सुख नहीं मिलता। परन्तु जो व्यक्ति अपने सुख की खोज में जीवित प्राणियों को हानि नहीं पहुँचाता, ऐसे व्यक्ति को परलोक में सुख प्राप्त होता है।
4. मैंने ऐसा सुना है। एक बार भगवान बुद्ध सावत्थी में, जेतवन में, अनाथपिंडिका के उद्यान में निवास कर रहे थे। उस समय भगवान बुद्ध का आदर, सम्मान और श्रद्धा का भाव था। उन्हें भिक्षुओं की सभी आवश्यक वस्तुएँ प्राप्त थीं, जैसे वस्त्र, भिक्षा, बिस्तर और रोग की स्थिति में दवा। भिक्षुओं का संघ भी आदर, सम्मान और श्रद्धा से भरा हुआ था, और उन्हें भी भिक्षुओं की सभी आवश्यक वस्तुएँ प्राप्त थीं, जैसे वस्त्र, भिक्षा, बिस्तर और रोग की स्थिति में दवा।
हालांकि, विधर्मी संप्रदायों के अनुयायी घुमंतू भिक्षुओं को सम्मान की दृष्टि से नहीं देखा जाता था और उन्हें भिक्षुओं के लिए आवश्यक सुविधाएं प्राप्त नहीं होती थीं।
और ये विधर्मी संप्रदायों के अनुयायी, जो एक घुमंतू भिक्षु थे, भगवान बुद्ध और भिक्षुओं के संघ को दिए जाने वाले सम्मान को सहन नहीं कर सके, और जब भी वे भगवान बुद्ध के शिष्यों को गांवों या जंगलों में देखते थे, तो वे उन्हें अपशब्द कहते, गाली देते, परेशान करते और तंग करते थे, और घृणित और कठोर शब्दों का प्रयोग करते थे।
और बहुत से शिष्य भगवान बुद्ध के पास गए और उनके पास पहुँचकर उन्हें प्रणाम किया और आदरपूर्वक अलग बैठ गए। इस प्रकार बैठे हुए उन शिष्यों ने भगवान बुद्ध से कहा:
भगवान बुद्ध, भगवान, सम्मानित हैं, इत्यादि। भिक्षुओं का संघ सम्मानित है, इत्यादि। घ. घुमंतू भिक्षुओं को सम्मान नहीं दिया जाता है। घ.
और इस संदर्भ में, उस अवसर पर, भगवान बुद्ध ने यह गंभीर वचन कहा:--
जो व्यक्ति गांव या जंगल में सुख या दुख के संपर्क में आता है,
इसका दोष स्वयं पर या दूसरों पर नहीं डालना चाहिए। इंद्रियों का स्पर्श व्यक्ति को उसकी उपाधि के कारण प्रभावित करता है।
क्या ये प्रवाह उस व्यक्ति को प्रभावित कर सकते हैं जिसने उपाधि से खुद को मुक्त कर लिया है?
5. मैंने ऐसा सुना है। एक बार भगवान बुद्ध अनाथपिंडिका के उद्यान, जेतवन में, सावत्थी में निवास कर रहे थे।
उस समय इच्छानंगोलाका नामक एक गृहस्थ शिष्य कुछ कार्य निपटाने के उद्देश्य से सावत्थी आया। सावत्थी में अपना कार्य पूरा करने के बाद, वह भगवान बुद्ध के पास गया और उन्हें प्रणाम करके आदरपूर्वक अलग बैठ गया। वहाँ बैठे हुए भगवान बुद्ध ने शिष्य से कहा, "हे शिष्य, तुम बहुत समय से इस प्रकार व्यवहार कर रहे हो, अर्थात् यहाँ आने के संबंध में।"
"हे प्रभु, मैं बहुत समय से भगवान बुद्ध के दर्शन करने की इच्छा रखता आया हूँ, लेकिन व्यापार की व्यस्तता के कारण मैं भगवान बुद्ध के दर्शन नहीं कर पाया हूँ।"
और इस संदर्भ में, उस अवसर पर, भगवान बुद्ध ने यह वाणी कही:--
"धन्य है वह धर्मी और विद्वान व्यक्ति जिसके पास कोई संपत्ति नहीं है!"
देखो, धनी व्यक्ति कितना परेशान है;
किस प्रकार एक व्यक्ति दूसरे का गुलाम होता है।
6.--छोड़ दिया गया।

7. मैंने ऐसा सुना है। एक बार भगवान बुद्ध सावत्थी में, जेतवन में, अनाथपिंडिका के उद्यान में निवास कर रहे थे। उस समय, एक गृहस्थ शिष्य के इकलौते और प्रिय पुत्र की मृत्यु हो गई। कई गृहस्थ शिष्य, आँसुओं से भीगे वस्त्रों और बालों के साथ,

असुविधाजनक समय पर भगवान बुद्ध के पास गए और उन्हें प्रणाम करके आदरपूर्वक अलग बैठ गए। जब वे अलग बैठे थे, तब भगवान बुद्ध ने उनसे कहा, “हे शिष्यों, तुम इस प्रकार असुविधाजनक समय पर, आँसुओं से भीगे वस्त्रों और बालों के साथ मेरे पास क्यों आए हो?” ये शब्द सुनकर, गृहस्थ शिष्य ने भगवान बुद्ध से कहा, “हे प्रभु, मेरा इकलौता और प्रिय पुत्र मर गया है, इसलिए हम इस प्रकार असुविधाजनक समय पर, आँसुओं से भीगे वस्त्रों और बालों के साथ आए हैं।” इस संबंध में, भगवान बुद्ध ने उस अवसर पर यह गंभीर वचन दिया:--
"देवताओं और अपरिवर्तित लोगों का दल,
रूप के सुखों और आनंदों से चिपके रहने वाले, मृत्यु के राजा के अधिकार में चले जाते हैं, मुरझाने और रोने के लिए। परन्तु जो दिन-रात जागते रहते हैं, और रूप में जो कुछ भी प्यारा है, उसे त्याग देते हैं; वे वास्तव में दुःख की जड़ खोदते हैं। प्रलोभनों पर विजय पाना कठिन है।
जो मृत्यु की ओर ले जाते हैं।"
8. मैंने ऐसा सुना है। एक बार भगवान बुद्ध कुंडी में कुंडीत्तन वन में निवास कर रहे थे। उस समय कोलिया के राजा की पुत्री सुप्पवास सात वर्षों से निःसंतान थी और सात दिनों से प्रसव पीड़ा में थी। तीव्र, चुभने वाली और भयानक पीड़ा से ग्रस्त सुप्पवास को इन तीन विचारों से सांत्वना मिली;
"निश्चित रूप से, परम पूज्य (भगवान बुद्ध) हैं, सर्वोच्च बुद्ध जो उस सिद्धांत का उपदेश देते हैं जिससे ऐसे कष्टों से मुक्ति मिलती है।"
"निश्चित रूप से, भगवान बुद्ध के ऐसे शिष्य हैं, जो धर्म के मार्ग पर चलते हैं, जिन्होंने उस मार्ग पर प्रवेश किया है जहां इस प्रकार के दुख पीछे छूट जाते हैं।"
"ओह, कितना सुखद, कितना सुखद निर्वाण! जहाँ ऐसे दर्द नहीं रहेंगे!"
और कोलिया के राजा की पुत्री सुप्पवासा ने अपने पति को बुलाया और कहा, "हे मेरे स्वामी, जहाँ भगवान बुद्ध ठहरे हैं, वहाँ जाइए और उनके पास पहुँचकर मेरे नाम से उनके चरणों में प्रणाम कीजिए और उनसे पूछिए कि क्या उन्हें कोई मामूली बीमारी है, क्या वे शारीरिक कष्टों से मुक्त हैं और स्वस्थ हैं, और इस प्रकार कहिए: "हे स्वामी, कोलिया के राजा की पुत्री सुप्पवासा भगवान बुद्ध के चरणों में प्रणाम करती है और उनसे पूछती है कि क्या उन्हें कोई मामूली बीमारी है, क्या वे शारीरिक कष्टों से मुक्त हैं, स्वस्थ हैं और जीवन का आनंद ले रहे हैं।"
और कहिए; "हे प्रभु, सुप्पवास, कोलिया के राजा की पुत्री सात वर्षों तक निःसंतान रही और अब सात दिनों से प्रसव पीड़ा से ग्रस्त है; वह तीव्र पीड़ा से पीड़ित होकर इन तीन विचारों में सांत्वना पाती है।"
“ऐसा ही हो,” कोलियापुत्त ने कोलिया की पुत्री सुप्पवासा की बात मानते हुए कहा और वह भगवान बुद्ध के पास गया तथा उन्हें प्रणाम करके एक तरफ आदरपूर्वक खड़ा हो गया और इस प्रकार खड़े होकर उसने भगवान बुद्ध से कहा, “हे प्रभु, सुप्पवासा, कोलिया की पुत्री अपना सिर झुकाती है...”
(और भगवान बुद्ध ने कहा; “कोलिय की पुत्री सुप्पवासा का भला हो, वह स्वस्थ पुत्र को जन्म दे।” (जिस क्षण भगवान बुद्ध ने ये शब्द कहे, उसी क्षण कोलिय की पुत्री सुप्पवासा का भला हुआ और उसने स्वस्थ पुत्र को जन्म दिया।)
“ऐसा ही हो, प्रभु,” कोलियापुत्त ने भगवान बुद्ध के वचनों की प्रशंसा करते हुए और धन्यवाद देते हुए कहा। फिर वह अपने आसन से उठे और भगवान बुद्ध को प्रणाम करके, उनके सामने दाहिनी ओर झुककर परिक्रमा करते हुए अपने घर लौट आए। वहाँ कोलियापुत्त ने देखा कि सुप्पवासा स्वस्थ थीं और उन्होंने एक स्वस्थ पुत्र को जन्म दिया था। उन्हें देखकर उन्होंने मन ही मन सोचा, “पूर्ण पुरुष की महान शक्ति और सामर्थ्य कितनी अद्भुत और चमत्कारी है कि जिस क्षण भगवान बुद्ध ने ये वचन कहे, उसी क्षण सुप्पवासा स्वस्थ थीं और उन्होंने एक स्वस्थ पुत्र को जन्म दिया।” वे प्रसन्न, आनंदित और अति प्रसन्न हुए।
सुप्पवासा ने अपने पति को बुलाकर कहा, “हे प्रभु, जहाँ भगवान बुद्ध हैं, वहाँ जाइए और उनके पास जाकर मेरे नाम से भगवान बुद्ध के चरणों में प्रणाम कीजिए और इस प्रकार कहिए: “हे प्रभु, कोलिया की पुत्री सुप्पवासा सात वर्षों तक निःसंतान रही और सात दिनों तक प्रसव पीड़ा से गुज़री; अब वह स्वस्थ है और उसने एक स्वस्थ पुत्र को जन्म दिया है; वह भिक्षुओं को सात दिनों तक अपने साथ भोजन करने के लिए आमंत्रित करती है। भगवान बुद्ध और भिक्षुओं को कोलिया की पुत्री सुप्पवासा के साथ सात दिनों तक भोजन करने की कृपा हो।”
“ऐसा ही हो,” कोलियापुत्त ने सुप्पवासा की बात मानते हुए कहा और भगवान बुद्ध के पास जाकर उन्हें प्रणाम किया और आदरपूर्वक अलग बैठ गए। बैठे-बैठे उन्होंने भगवान बुद्ध से कहा, “हे प्रभु, कोलिया की पुत्री सुप्पवासा सिर झुकाती हैं... [जैसा ऊपर अनुवाद है]। भगवान बुद्ध और भिक्षुओं को सात दिनों तक उनके साथ भोजन करने की कृपा हो।”
उस समय, बुद्ध के नेतृत्व में भिक्षुओं के संघ को एक गृहस्थ शिष्य ने कल के भोजन के लिए आमंत्रित किया था। वह गृहस्थ शिष्य पूज्य महा मोग्गलाना का सेवक था। भगवान बुद्ध ने पूज्य महा मोग्गलाना को अपने पास बुलाया और कहा, “हे मोग्गलाना, उस शिष्य के पास जाओ और उसके पास जाकर कहो, “मित्र, कोलिया की पुत्री सुप्पवासा, जो सात वर्षों से निःसंतान थी, ने भगवान बुद्ध और

भिक्षुओं के संघ को सात दिनों तक अपने साथ भोजन करने के लिए आमंत्रित किया है। सुप्पवासा को इन सात भोजनों की व्यवस्था करने की अनुमति दें, उसके बाद आप सेवक भोजन की व्यवस्था करें।"

"हे प्रभु," आदरणीय महा मोग्गलाना ने भगवान बुद्ध की बात मानते हुए सहमति व्यक्त की और उस शिष्य के पास जाकर उससे कहा, "सुप्पवासा, मित्र, ने आमंत्रित किया है... इसके बाद तुम भोजन की व्यवस्था करोगे।" "यदि भगवान महा मोग्गलाना मेरी संपत्ति, मेरे जीवन और मेरे विश्वास की गारंटी दें, तो कोलिया की पुत्री सुप्पवासा सात भोजन की व्यवस्था करे, और उसके बाद मैं भोजन की व्यवस्था करूँगा।"

"हे मित्र, इन दो बातों के लिए मैं तुम्हारा ज़मानतदार बनूंगा, तुम्हारी संपत्ति और तुम्हारे जीवन के लिए, लेकिन विश्वास के मामले में तुम्हें स्वयं ही ज़मानतदार बनना होगा।"

यदि भगवान महा मोग्गलाना मेरी संपत्ति और मेरे जीवन के लिए मेरे ज़मानतदार होंगे, तो सुप्पवास सातों भोजन प्रदान करें और उसके बाद मैं भोजन प्रदान करूंगा।

तब पूज्य महा मोग्गलाना ने गृहस्थ शिष्य को मनाकर भगवान बुद्ध के पास जाकर उनसे कहा, "हे प्रभु, मैंने गृहस्थ शिष्य को मना लिया है कि वह सुप्पवास को सातों भोजन प्रदान करने की अनुमति दे और उसके बाद वह भोजन प्रदान करेगा।"

तब कोलिया की पुत्री सुप्पावासा ने सात दिनों तक अपने हाथों से मीठे व्यंजन, कठोर और नरम दोनों प्रकार के, तैयार किए और उन्हें भिक्षुओं और बुद्ध को, जो मुख्य अतिथि थे, परोसा। उसने बालक, भगवान बुद्ध और भिक्षुओं को प्रणाम किया।

और पूज्य सारिपुत्त ने बालक से कहा, "मुझे आशा है, बालक, कि तुम आराम से हो, तुम्हारे पास जीवनयापन के लिए पर्याप्त भोजन है, और तुम्हें किसी प्रकार की कोई पीड़ा नहीं है।"

हे पूज्य सारिपुत्त, मैं कैसे चैन से रह सकता हूँ, मैं कैसे स्वस्थ रह सकता हूँ, जबकि मैं सात वर्षों से अपनी माँ के कष्ट का कारण बना हुआ हूँ?

और सुप्पवासा ने मन ही मन कहा, "मेरा पुत्र धर्म के सेनापति से बात कर रहा है।" वह अत्यंत प्रसन्न हुई और आनंद से भर उठी। तब भगवान बुद्ध ने कोलिया की पुत्री सुप्पवासा से कहा, "सुप्पवासा, क्या तुम ऐसा ही एक और पुत्र चाहोगी?"

"हे भगवान, मैं इस पुत्र के समान सात और पुत्र चाहता/चाहती।"

और इस संदर्भ में, उस अवसर पर, भगवान बुद्ध ने यह गंभीर वचन कहा:--

"खुशी के वेश में आनंदहीनता, दुख के वेश में प्रसन्नता, सुख के वेश में पीड़ा, ये सब विचारहीन लोगों को अपने वश में कर लेते हैं।"

9. मैंने ऐसा सुना है। एक बार भगवान बुद्ध सावत्थी में पूर्वी मठ में विशाखा मिगारमाता के मंडप में निवास कर रहे थे।

उस समय विशाखा मिगारमाता ने किसी प्रकार की कृपा प्राप्त करने की इच्छा से राजा पसेनादि कोसल से विनती की। राजा पसेनादि कोसल ने उसकी विनती स्वीकार नहीं की।

और विशाखा मिगारमाता असमय ही भगवान बुद्ध के पास गईं और पास आकर उन्होंने भगवान बुद्ध को प्रणाम किया और आदरपूर्वक अलग बैठ गईं।

और जब विशाखा मिगारमाता अलग बैठी थीं, तब भगवान बुद्ध ने उनसे कहा, "हे विशाखा, तुम इस असमय पर मुझसे मिलने क्यों आई हो?" भगवान, अभी-अभी मैं राजा पसेनादि कोसल से एक वरदान प्राप्त करना चाहती थी... लेकिन उन्होंने मेरी विनती स्वीकार नहीं की।

और इस संदर्भ में, उस अवसर पर, भगवान बुद्ध ने यह गंभीर वचन कहा:--

"सारी कमजोरी दर्द है, सारी शक्ति सुख है।"

जब किसी संघर्ष का सामना करना पड़ता है, तो पुरुष शोक करते हैं:

इससे बंधन तोड़ना कठिन है।

10. मैंने ऐसा सुना है। एक बार भगवान बुद्ध अनुपिया में आम के बाग में निवास कर रहे थे।

उस समय, कालीगोधा के पुत्र पूज्य भद्दिया जंगलों में विचरण करते, वृक्षों की छाया में बैठते और एकांत स्थानों पर अक्सर जाते थे। वे बार-बार ये भावपूर्ण शब्द दोहराते थे: "आह, सुख, आह, सुख।"

और कई भिक्षुओं ने पूज्य भद्दिया को जंगलों में, पेड़ों के नीचे और सुनसान जगहों पर घूमते हुए बार-बार भावुक शब्दों में "आह, सुख, आह, सुख" कहते हुए सुना।

और जब उन्होंने उसकी बात सुनी, तो उन्होंने मन ही मन कहा, "निस्संदेह हमारे मित्र पूज्य भद्दिया, जिन्होंने पूर्व में राजसी सुख-सुविधाओं का आनंद लिया था, धार्मिक जीवन अपनाने के बाद दुखी हैं, और अतीत को याद करते हुए अब वे जंगलों में, पेड़ों के नीचे और सुनसान जगहों पर भटकते हैं, बार-बार भावपूर्ण शब्दों का उच्चारण करते हैं: 'आह, सुख, आह, सुख'।" और कई भिक्षु भगवान बुद्ध के पास गए और पास आकर उन्हें प्रणाम किया और आदरपूर्वक अलग बैठ गए और इस प्रकार बैठे हुए उन्होंने भगवान बुद्ध को वह सब बताया जो उन्होंने देखा और सुना था।

और भगवान बुद्ध ने एक भिक्षु को अपने पास बुलाया और कहा, "हे भिक्षु, जाओ और मेरे नाम से भिक्षु भद्दिया को इस प्रकार बुलाओ; 'हे मित्र भद्दिया, गुरु ने तुम्हें बुलाया है'।"
"ऐसा ही हो, प्रभु," भिक्षु ने भगवान बुद्ध की बात मानते हुए कहा और वह उस स्थान पर गया जहाँ आदरणीय भद्दिया, कालिगोधा का पुत्र, था, और उसके पास पहुँचकर उसने कहा; "गुरुजी, मित्र भद्दिया, ने आपको बुलवाया है।"
“ऐसा ही हो, मित्र,” आदरणीय भद्दिया ने उस भिक्षु की बात मानकर सहमति जताई और भगवान बुद्ध के पास जाकर उन्हें प्रणाम किया और आदरपूर्वक अलग बैठ गए। भगवान बुद्ध ने आदरणीय भद्दिया से कहा, “हे भद्दिया, क्या यह सच है जो मैंने सुना है कि तुम जंगलों में घूमते हुए ये भावपूर्ण शब्द कहते हो; 'आह, सुख, आह, सुख'?”
"फिर भी, प्रभु।"
"हे भद्दिया, इसमें ऐसा क्या महत्व है जो तुम्हें जंगलों में भटकने के लिए प्रेरित करता है?"
"पहले, हे प्रभु, जब मैं एक शाही घर में रहता था, तो महल के अंदर और बाहर, शहर के अंदर और बाहर, मेरे देश के अंदर और बाहर, मेरी पूरी सुरक्षा और पहरेदारी की जाती थी।"
इस प्रकार, हे प्रभु, मेरी रक्षा की जाती थी और मुझ पर कड़ी निगरानी रखी जाती थी, मैं चिंता, अविश्वास और भय की स्थिति में रहता था; अब, हे प्रभु, जब मैं जंगलों में, पेड़ों के नीचे और सुनसान स्थानों में विचरण करता हूँ, तो मैं अपने दिन निर्भय, शांत, आत्मविश्वासी, निडर, सुखी, भयभीत हुए बिना, दूसरों से प्राप्त भोजन और वस्त्रों के उपहारों से समर्थित होकर, और एक हिरण के समान मुक्त हृदय से व्यतीत करता हूँ।
मामले की गंभीरता को स्पष्ट रूप से समझते हुए, मैंने हे प्रभु, जंगलों में, पेड़ों के नीचे और सुनसान स्थानों में भटकने का विकल्प चुना, और उन भावपूर्ण शब्दों का उच्चारण किया; 'आह, आनंद, आह, आनंद'।
और इस संदर्भ में, उस अवसर पर, भगवान बुद्ध ने यह गंभीर वचन कहा:--
जिससे कोई क्रोध नहीं होता, जिसने इस संसार में जन्म और पुनर्जन्म पर विजय प्राप्त कर ली है,
ऐसा व्यक्ति, जो भय से मुक्त, सुखी और शोक रहित हो,
यह देवताओं की समझ से परे है।

अध्याय 3 - "नंदा"
पाली संस्करण: पाली-अंग्रेजी संस्करण और पाली-देवनागरी संस्करण
1. मैंने ऐसा सुना है। एक बार भगवान बुद्ध अनाथपिंडिका के उद्यान, जेतवन में, सावत्थी में निवास कर रहे थे।
उस समय एक भिक्षु भगवान बुद्ध से कुछ दूरी पर, पालथी मारकर, शरीर सीधा करके बैठे थे; वे सचेत और जागरूक होकर, अतीत में किए गए कर्मों के फलस्वरूप उत्पन्न तीव्र, चुभने वाली और भयानक पीड़ा को बिना किसी शिकायत के सहन कर रहे थे।
और भगवान बुद्ध ने उस भिक्षु को पास ही में पालथी मारकर बैठे हुए देखा, जिसका शरीर सीधा, सचेत और जागरूक था, और वह बिना किसी शिकायत के अतीत में किए गए कर्मों के फलस्वरूप उत्पन्न तीव्र, चुभने वाली और भयानक पीड़ा सहन कर रहा था।
और इस संदर्भ में, उस अवसर पर, भगवान बुद्ध ने यह गंभीर वचन कहा:--
"कर्मों से मुक्त भिक्षु,
जिसने अतीत में संचित (पापों की) धूल झाड़ दी है, जिसने 'यह मेरा है' की भावना को दबा दिया है?
ऐसे व्यक्ति के लिए शोक करने का कोई कारण नहीं है।"

2. मैंने ऐसा सुना है। एक बार भगवान बुद्ध अनाथपिंडिका के उद्यान, जेतवन में, सावत्थी में निवास कर रहे थे।

उस समय भगवान बुद्ध के चचेरे भाई, पूज्य नंदा ने कई भिक्षुओं से कहा, "मित्रों, मैं धार्मिक जीवन व्यतीत करते हुए दुखी हूँ, मैं धार्मिक जीवन का भार सहन नहीं कर पा रहा हूँ, मैं धर्म के नियमों को त्यागकर सांसारिक जीवन में लौटना चाहता हूँ।"
एक भिक्षु भगवान बुद्ध के पास गया और उनके पास आकर उन्हें प्रणाम किया और आदरपूर्वक अलग बैठ गया। बैठे-बैठे उसने भगवान बुद्ध से कहा, “हे प्रभु, भगवान बुद्ध के एक चचेरे भाई, पूज्य नंदा ने कई भिक्षुओं से कहा है, ‘मैं दुखी हूँ, इत्यादि। मैं पाताल लोक में लौटना चाहता हूँ।’”
और भगवान बुद्ध ने एक भिक्षु को अपने पास बुलाया और कहा: "जाओ, तुम और मेरे नाम से भिक्षु नंदा को यहाँ बुलाओ, और कहो, 'हे मित्र नंदा, गुरु ने तुम्हें बुलाया है'।"
“ऐसा ही हो, प्रभु,” उस भिक्षु ने भगवान बुद्ध की बात मानकर सहमति दी और वह पूज्य नंदा के पास गया और उनके पास पहुँचकर उनसे कहा: “हे भिक्षु नंदा, गुरु ने आपको बुलवाया है।” “ऐसा ही हो, भिक्षु,” पूज्य नंदा ने उस भिक्षु की बात मानकर सहमति दी और वह भगवान बुद्ध के पास जाकर उन्हें प्रणाम किया और आदरपूर्वक अलग बैठ गए। भगवान बुद्ध ने पूज्य नंदा से, जो वहाँ अलग बैठे

थे, कहा: “हे नंदा, क्या यह सच है जो मैंने सुना है कि तुमने कई भिक्षुओं से कहा है: “मैं दुखी हूँ, इत्यादि। मैं निम्न लोक में लौटना चाहता हूँ?”
"फिर भी, प्रभु।"
"नंदा, ऐसा क्यों है कि तुम धार्मिक जीवन जीकर दुखी हो और नियमों को त्यागकर निम्न जीवन में वापस लौटने का इरादा रखते हो?"

"हे प्रभु, जब मैं अपने घर से निकल रहा था, शाक्य वंश की एक पुत्री, जो समस्त देश की सबसे सुंदर कन्या थी, आधी गुंथी हुई केशविन्यास लिए खिड़की से बाहर देखते हुए मुझे पुकार रही थी, 'हे प्रभु, देर न करें, आपका लौटना निश्चित है।' हे प्रभु, उसे याद करके मैं धार्मिक जीवन व्यतीत करने से दुखी हूँ, मैं धार्मिक जीवन का भार वहन करने में असमर्थ हूँ और धर्म के नियमों को त्यागकर निम्न जीवन में लौटने का इरादा रखता हूँ।"
तब भगवान बुद्ध ने आदरणीय नंदा का हाथ पकड़कर, जैसे कोई बलवान व्यक्ति अपनी मुड़ी हुई भुजा को फैलाता है या अपनी फैली हुई भुजा को पीछे खींचता है, वैसे ही वे जेतवन से विलीन हो गए और "महान तैंतीस"1 के स्वर्ग में पुनः प्रकट हुए।
उस समय लगभग 500 गुलाबी पैरों वाली2 अप्सराएँ देवताओं के राजा सक्का की सेवा करने के लिए वहाँ पहुँची थीं।
तब भगवान बुद्ध ने पूज्य नंदा को अपने पास बुलाया और कहा: "क्या तुम नहीं देखते, नंदा, ये 500 गुलाबी पैरों वाली अप्सराएँ?"
"फिर भी, प्रभु।"
"नंदा, तुम्हारा क्या विचार है? शाक्य वंश की वह पुत्री, जो पूरे देश की सबसे सुंदर कन्या है, या ये 500 गुलाबी पैरों वाली अप्सराएँ?"
"हे प्रभु, वह तो मानो झुलसी हुई बंदरिया हो, जिसके कान और नाक कटे हों। शाक्य वंश की पुत्री, समस्त लोक की सबसे सुंदर कन्या, इन 500 गुलाबी पैरों वाली अप्सराओं के सामने कुछ भी नहीं है; वह उनके अंश के बराबर भी नहीं, उनके योग्य नहीं। ये 500 गुलाबी पैरों वाली अप्सराएँ सबसे सुंदर, सबसे मनमोहक और सबसे मोहक हैं।" "तो हे नंदा, प्रसन्न हो जाओ, क्योंकि मैं तुम्हें उन 500 गुलाबी पैरों वाली अप्सराओं का अधिकार दिलाता हूँ।"
"यदि भगवान बुद्ध मुझे इन 500 गुलाबी पैरों वाली अप्सराओं के अधिकार की गारंटी देंगे, तो हे भगवान, मैं सुखपूर्वक धार्मिक जीवन व्यतीत करूंगा।"
फिर भगवान बुद्ध ने पूज्य नंदा का हाथ थाम लिया, जैसे कोई बलवान व्यक्ति अपनी मुड़ी हुई भुजा को फैलाकर वापस मोड़ता है, ठीक उसी प्रकार वे "महान तैंतीस" के स्वर्ग से विलीन हो गए और जेतवन में पुनः प्रकट हुए।
और भिक्षुओं ने यह सूचना सुनी कि भगवान बुद्ध के चचेरे भाई, पूज्य नंदा, धार्मिक जीवन व्यतीत कर रहे थे क्योंकि उन्हें अप्सराओं का वरदान प्राप्त होने का वादा किया गया था, क्योंकि ऐसा कहा जाता था कि भगवान बुद्ध ने उन्हें 500 गुलाबी पैरों वाली अप्सराओं के अधिकार की गारंटी दी थी।
और पूज्य नंदा के साथी भिक्षुओं ने पूज्य नंदा को दास, नीच व्यक्ति कहा; उन्होंने कहा: "यह पूज्य नंदा एक दास, एक नीच व्यक्ति है। हमने सुना है कि यह पूज्य नंदा अप्सराओं की खातिर धार्मिक जीवन व्यतीत करता है। हमने सुना है कि भगवान बुद्ध ने उसे 500 गुलाबी पैरों वाली अप्सराओं के अधिकार का आश्वासन दिया है।"
और पूज्य नंदा अपने साथियों के अपमान से दुखी, अपमानित और नीच बन गए, जिन्होंने उन्हें दास और तुच्छ व्यक्ति कहा, — अकेले, मनुष्यों के बीच एकांत में, उत्साही, दृढ़ निश्चयी और आत्म-संयमित होकर, कुछ ही समय बाद, जिस उद्देश्य से कुलीन परिवारों के वंशज अपने घर छोड़कर संन्यासी जीवन व्यतीत करते हैं, उन्होंने स्वयं ही उच्च ज्ञान प्राप्त कर और उसे साकार करके इसी जन्म में पवित्र ब्रह्मचर्य जीवन की सर्वोच्च पूर्णता को प्राप्त कर लिया। वे जानते थे कि पुनर्जन्म का चक्र समाप्त हो गया है, धार्मिक जीवन जी लिया गया है, जो करना चाहिए था वह कर लिया गया है: "मैंने इस संसार से नाता तोड़ लिया है।"
और आदरणीय नंदा भी अरहतों में से एक बन गए।
जब रात ढल चुकी थी, तब अत्यंत सुंदर कुछ दिव्य प्राणी, अपनी चमक से पूरे जेतवन को प्रकाशित करते हुए, भगवान बुद्ध के पास पहुँचे और उनके निकट आकर उन्हें प्रणाम किया तथा आदरपूर्वक अलग खड़े हो गए। इस प्रकार खड़े होकर उन्होंने भगवान बुद्ध से कहा, “हे आदरणीय नंदा, भगवान बुद्ध के चचेरे भाई, ने पापों के नाश द्वारा स्वयं ही उच्च ज्ञान प्राप्त कर लिया है और इसी जन्म में वे मुक्त हृदय के आनंद और ज्ञान से उत्पन्न होने वाली मुक्ति का अनुभव कर रहे हैं।”
और भगवान बुद्ध को यह ज्ञान भी प्राप्त हुआ कि पूज्य नंदा, पापों आदि के नाश से मुक्त हो गए हैं। उस रात के अंत में पूज्य नंदा भगवान बुद्ध के पास गए और पास आकर उन्हें प्रणाम किया और आदरपूर्वक अलग बैठ गए। इस प्रकार बैठे हुए पूज्य नंदा ने भगवान बुद्ध से कहा, “हे प्रभु, भगवान बुद्ध ने मुझे 500 गुलाबी पैरों वाली अप्सराओं का अधिकार देने का वचन दिया था; मैं अब भगवान बुद्ध को उस वचन से मुक्त करता हूँ।” “हे नंदा, मैंने अपने मन से तुम्हारे हृदय में जो है उसे जान लिया है और जानता हूँ कि नंदा, पापों आदि के नाश से मुक्त हो गए हैं।” देवताओं ने भी मुझे यही बताया है; “हे नंदा, पापों आदि के नाश से मुक्त हो गए हैं। हे नंदा, क्योंकि तुम्हारा हृदय ‘आसक्ति’ और पापों से मुक्त हो गया है, इसलिए मैं भी उस वचन से मुक्त हो गया हूँ।”
और इस संदर्भ में, उस अवसर पर, भगवान बुद्ध ने यह गंभीर वचन कहा:--

"जो अशुद्धता के दलदल को पार कर चुका है,
हे भिक्षु, जिसने कामवासना के कांटों को कुचल दिया है, वह सुख या दुख की स्थिति में भी निर्मल रहता है।
शांति में है।

3. मैंने ऐसा सुना है। एक बार भगवान बुद्ध अनाथपिंडिका के उद्यान, जेतवन में, सावत्थी में निवास कर रहे थे।
उस समय यशोजा के नेतृत्व में लगभग 500 भिक्षु भगवान बुद्ध के दर्शन करने आए।
और ये नवगठित भिक्षु, निवासी भिक्षुओं के साथ शिष्टाचार का आदान-प्रदान करते हुए और अपने सोने के स्थान, भिक्षापात्र और वस्त्रों की व्यवस्था करते हुए, एक बड़ा कोलाहल पैदा कर दिया।
तब भगवान बुद्ध ने पूज्य आनंद को अपने पास बुलाया और कहा, "हे आनंद, ये शोर मचाने वाले और उपद्रवी लोग कौन हैं? ऐसा लगता है मानो ये मछुआरे मछली पकड़ रहे हों।"
"हे प्रभु, यशोजा के नेतृत्व में लगभग 500 भिक्षु भगवान बुद्ध के दर्शन करने के लिए सावत्थी आए हैं। और ये नए आए भिक्षु वहां के भिक्षुओं से शिष्टाचार का आदान-प्रदान करते हुए और अपने सोने के स्थान, भिक्षापात्र और वस्त्रों की व्यवस्था करते हुए यह शोर मचा रहे हैं।"
"तब, मेरे नाम से, आनंद, उन भिक्षुओं को यहाँ बुलाओ और कहो, 'आदरणीय महोदय, गुरु ने आपको बुलवाया है'।"
"ऐसा ही हो, प्रभु;" आनंद ने भगवान बुद्ध की बात मानते हुए कहा और उन भिक्षुओं के पास जाकर उनसे कहा, "आदरणीय भिक्षुओं, गुरु ने आपको बुलवाया है।"
“ऐसा ही हो, भिक्षु,” उन भिक्षुओं ने आदरणीय आनंद की बात मानकर सहमति जताई और भगवान बुद्ध के पास जाकर उन्हें प्रणाम किया और आदरपूर्वक अलग बैठ गए। भगवान बुद्ध ने बैठे-बैठे उनसे कहा, “इस शोर-शराबे का क्या मतलब है? ऐसा लगता है मानो तुम मछुआरे हो जो मछली पकड़ रहे हो।”
ये शब्द कहे जाने के बाद, पूज्य यशोजा ने भगवान बुद्ध से कहा, "ये नए आए भिक्षु आदि [जैसा कि ऊपर बताया गया है। अनुवाद] यह कोलाहल पैदा कर रहे हैं।"
"मैं तुम्हें जाने का निर्देश देता हूँ, हे भिक्षुओं; मेरे साथ वार्तालाप करना तुम्हारे लिए उचित नहीं है।"
“ऐसा ही हो, प्रभु,” उन भिक्षुओं ने भगवान बुद्ध की बात मानते हुए कहा और अपने आसनों से उठकर भगवान बुद्ध को प्रणाम किया। उनके दाहिनी ओर मुख करके परिक्रमा करते हुए उन्होंने अपना बिस्तर समेटा और भिक्षापात्र व वस्त्र लेकर वज्जी देश की ओर प्रस्थान किया। वज्जी देश से गुजरते हुए वे वग्गुमुदा नदी के पास पहुँचे और वहाँ पहुँचकर उन्होंने वग्गुमुदा नदी के किनारे पत्तों की झोपड़ियाँ बनाईं और वर्षा ऋतु वहीं व्यतीत की।
और पूज्य यशोजा, जिन्होंने वर्षा ऋतु वहीं बिताई, ने भिक्षुओं को अपने पास बुलाया और कहा, “मित्रों, भगवान बुद्ध ने हम पर दया और करुणा दिखाते हुए, हमारे कल्याण और भलाई की इच्छा से हमें यहाँ भेजा है। मित्रों, अब हमें ऐसा जीवन जीना चाहिए जिससे भगवान बुद्ध हमारे जीवन जीने के तरीके से प्रसन्न हों।”

“हाँ, भिक्षु,” उन भिक्षुओं ने सहमति जताते हुए कहा। और ये भिक्षु, जो मनुष्यों के निवास स्थान से दूर रहते थे, अटूट उत्साह, लगन और संयम के साथ वर्षा ऋतु के दौरान ही ‘त्रिविध ज्ञान’ प्राप्त कर लिया।
और भगवान बुद्ध ने सावत्थी में अपनी इच्छानुसार कुछ समय व्यतीत करने के बाद वैशाली के लिए प्रस्थान किया और स्थान-स्थान भटकते हुए अंततः वैशाली पहुंचे।
और भगवान बुद्ध वैशाली में महावन के पैगोडा हॉल में ठहरे थे।
और भगवान बुद्ध ने उन भिक्षुओं के विचारों को अपने मन से समझकर, पूज्य आनंद को अपने पास बुलाया और कहा, “हे आनंद, मुझे ऐसा प्रतीत होता है मानो पृथ्वी का यह भाग प्रकाशित हो गया हो, प्रकाश से जगमगा उठा हो। मुझे यह अच्छा विचार आता है कि मैं उन भिक्षुओं के पास जाऊं जो वग्गुमुदा नदी के किनारे रहते हैं। हे आनंद, वग्गुमुदा नदी के किनारे रहने वाले उन भिक्षुओं के पास एक दूत भेजो; ‘गुरुजी ने पूज्य भिक्षुओं को बुलवाया है, गुरुजी उनसे मिलना चाहते हैं’।”
"ऐसा ही हो, प्रभु;" पूज्य आनंद ने भगवान बुद्ध की बात मानते हुए सहमति व्यक्त की और वे एक भिक्षु के पास गए और उसके पास पहुँचकर उससे कहा, "हे मित्र, वाग्गुमुदा नदी के किनारे जहाँ भिक्षु रहते हैं, वहाँ जाकर उनसे कहो, 'गुरुजी ने पूज्य भिक्षुओं को बुलवाया है, गुरुजी पूज्य भिक्षुओं से मिलना चाहते हैं'।"
"ऐसा ही हो, भिक्षु;" उस भिक्षु ने आदरणीय आनंद की बात मानते हुए सहमति व्यक्त की, और जैसे कोई बलवान व्यक्ति अपनी मुड़ी हुई भुजा को फैलाता है या अपनी फैली हुई भुजा को वापस मोड़ता है, वैसे ही वह महावन के पैगोडा हॉल से गायब हो गया और वग्गुमुदा नदी के किनारे उन भिक्षुओं के सामने फिर से प्रकट हुआ।

और उस भिक्षु ने वग्गुमुदा नदी के किनारे बैठे भिक्षुओं से कहा: "गुरुजी ने पूज्य भिक्षुओं को बुलवाया है, गुरुजी पूज्य भिक्षुओं से मिलना चाहते हैं।"
“ऐसा ही हो, भिक्षु,” उन भिक्षुओं ने उस भिक्षु की बात मानते हुए कहा और अपना बिस्तर समेटकर, भिक्षापात्र और वस्त्र लेकर—जैसे कोई बलवान पुरुष हो—वैसे ही वे वग्गुमुदा नदी के किनारे से गायब हो गए और महावन के पैगोडा हॉल में भगवान बुद्ध के सामने प्रकट हुए।
उस समय भगवान बुद्ध एक शांत समाधि अवस्था में बैठे हुए थे।
और उन भिक्षुओं ने मन ही मन कहा, “भगवान बुद्ध स्थिर अवस्था में हैं;” और वे सब भी स्थिर अवस्था में समाधि में बैठ गए। और पूज्य आनंद, जैसे ही रात का पहला पहर बीत रहा था, अपने आसन से उठे और अपना वस्त्र केवल एक कंधे पर रखकर (दूसरा नंगा छोड़कर) भगवान बुद्ध के पास गए और हाथ फैलाकर भगवान बुद्ध से कहा, “हे प्रभु, रात बीत चुकी है, पहला पहर बीत रहा है, नए आए भिक्षुओं ने बहुत देर तक प्रतीक्षा की है। कृपा करके भगवान बुद्ध नए आए भिक्षुओं से शिष्टाचार का आदान-प्रदान करें।”
ये शब्द कहे जाने के बाद, भगवान बुद्ध मौन रहे।
दूसरी बार, जब रात का मध्य पहर बीत रहा था, पूज्य आनंद अपने आसन से उठे और अपना कुर्ता एक कंधे पर रखकर भगवान बुद्ध के पास गए और हाथ फैलाकर उनसे कहा, “हे प्रभु, रात बीत रही है, मध्य पहर बीत रहा है; नए आए भिक्षुओं ने बहुत प्रतीक्षा की है। कृपा करके भगवान बुद्ध नए आए भिक्षुओं से शिष्टाचार का आदान-प्रदान करें।”
दूसरी बार, भगवान बुद्ध मौन रहे। तीसरी बार, जब रात का अंतिम पहर बीत रहा था, भोर हो रही थी, और रात काफी बीत चुकी थी, तो पूज्य आनंद अपने आसन से उठे और केवल एक कंधे पर अपना वस्त्र रखकर भगवान बुद्ध के पास गए, और हाथ फैलाकर भगवान बुद्ध से कहा, "हे प्रभु, रात बीत रही है, अंतिम पहर बीत रहा है, भोर हो रही है, रात काफी बीत चुकी है, नए आए भिक्षुओं ने बहुत प्रतीक्षा की है। कृपा करके भगवान बुद्ध नए आए भिक्षुओं से शिष्टाचार का आदान-प्रदान करें।"
और भगवान बुद्ध उस समाधि अवस्था से उठकर आदरणीय आनंद को अपने पास बुलाकर बोले: "हे आनंद, यदि तुम जानते हो, तो तुम्हें उन्हें उत्तर नहीं देना चाहिए: मैं और ये सभी 500 भिक्षु गतिहीन समाधि अवस्था में बैठे हैं।"
और इस संदर्भ में, उस अवसर पर, भगवान बुद्ध ने यह गंभीर वचन कहा:--
"जिसने इच्छाओं के कांटों पर विजय प्राप्त कर ली है,
जिसने दुर्व्यवहार, कोड़े और कारावास पर विजय प्राप्त की है, वह पर्वत के समान दृढ़ रहता है, चाहे सुख हो या दुख।
वह भिक्षु भयभीत नहीं होता।

4. मैंने ऐसा सुना है। एक बार भगवान बुद्ध अनाथपिंडिका के उद्यान, जेतवन में सावत्थी में निवास कर रहे थे।

उस समय, पूज्य सारिपुत्त भगवान बुद्ध से कुछ ही दूरी पर, पांव-पैरों के बल सीधे बैठे थे, और स्मृति को अपने समक्ष रखे हुए थे। भगवान बुद्ध ने पूज्य सारिपुत्त को पास ही पांव, पांव-पैरों के बल सीधे बैठे हुए देखा, और स्मृति को अपने समक्ष रखे हुए देखा। इस अवसर पर, भगवान बुद्ध ने यह गंभीर वचन कहा:--
"जैसे पहाड़ की चट्टान अडिग खड़ी रहती है
अतः, भ्रम का वध करके भिक्षु ने
जैसे पहाड़, कांपता नहीं।

5. मैंने ऐसा सुना है। एक बार भगवान बुद्ध अनाथपिंडिका के उद्यान, जेतवन में, सावत्थी में निवास कर रहे थे।
उस समय पूज्य महामोग्गलाना भगवान बुद्ध से कुछ ही दूरी पर, पालथी मारकर, शरीर को सीधा रखते हुए, शरीर पर ध्यान मग्न होकर बैठे हुए थे।
और भगवान बुद्ध ने पूज्य महामोग्गलाना आदि को शरीर पर ध्यान में लीन देखा।
और इस संदर्भ में, उस अवसर पर, भगवान बुद्ध ने यह गंभीर वचन कहा:
जो शरीर पर ध्यान लगा रहा हो,
संपर्क के 'पांच क्षेत्रों' के संबंध में कौन संयमित है?
वह भिक्षु, जो सदा शांत रहता है, अपनी मुक्ति स्वयं प्राप्त कर लेगा।

6. मैंने ऐसा सुना है। एक बार भगवान बुद्ध राजगृह में, बांस के जंगल में, कलांदिकनिवापा में निवास कर रहे थे।
उस समय पूज्य पिलिन्दवच्छ भिक्षुओं को कोसने और उन्हें बहिष्कृत (वसलस) कहने की आदत रखते थे।

और कई भिक्षु भगवान बुद्ध के पास गए, और पास आकर उन्होंने भगवान बुद्ध को प्रणाम किया और आदरपूर्वक अलग बैठ गए, और इस प्रकार बैठे हुए उन्होंने भगवान बुद्ध से कहा, "हे प्रभु, पूज्य पिलिन्दवच्छ भिक्षुओं को अपशब्द कहने और उन्हें बहिष्कृत (वसलस) कहने का आदी है।"
और भगवान बुद्ध ने एक भिक्षु को अपने पास बुलाया और कहा: "जाओ, भिक्षु (भिक्षु), और मेरे नाम से भिक्षु पिलिन्दवच्छ को यहाँ बुलाओ और कहो, 'भिक्षु, गुरु ने तुम्हें बुलाया है।'"
"ऐसा ही हो, प्रभु;" भिक्षु ने भगवान बुद्ध की बात मानते हुए कहा और वह आदरणीय पिलिन्दवच्छ के पास गया, और पास आकर उसने पिलिन्दवच्छ से कहा, "गुरुजी, भिक्षु, आपको बुला रहे हैं।"
“ऐसा ही हो, भिक्षु;” आदरणीय पिलिन्दवच्छ ने उस भिक्षु की बात मानकर सहमति जताई और भगवान बुद्ध के पास जाकर उन्हें प्रणाम किया और आदरपूर्वक अलग बैठ गए। भगवान बुद्ध ने बैठे-बैठे उनसे कहा, “क्या यह सच है, वच्छ, जो मैंने सुना है कि तुम भिक्षुओं को बहिष्कृत (वसलस) कहते हो?”
"फिर भी, प्रभु।"
और भगवान बुद्ध ने पिलिन्दवच्छ के पूर्व जन्म को याद करते हुए भिक्षुओं से कहा, “हे भिक्षुओं, भिक्षु वच्छ का उपहास न करो। हे भिक्षुओं, वच्छ का कोई दोष नहीं है कि वह भिक्षुओं को बहिष्कृत कहता है। पाँच सौ पिछले जन्मों में भिक्षु वच्छ एक ब्राह्मण परिवार में निम्न जाति के रूप में जन्मा था। उसे यह अपशब्द बोलने की आदत बहुत पहले लग गई थी। इसीलिए इस वच्छ की यह प्रथा है कि वह भिक्षुओं को बहिष्कृत कहता है।”
और इस संदर्भ में, उस अवसर पर, भगवान बुद्ध ने यह गंभीर वचन कहा:--
जिससे छल या अहंकार उत्पन्न नहीं होता,
जिसमें लोभ का नाश हो गया हो, जिसने 'यह मेरा है' की भावना से मुक्ति पा ली हो, जो भावहीन हो और क्रोध त्याग चुका हो, जो सभी चिंताओं से मुक्त हो।
वह भिक्षु ब्राह्मण और समना है।

7. मैंने ऐसा सुना है। एक बार भगवान बुद्ध राजगृह में, बांस के जंगल में, कलांदिकनिवापा में निवास कर रहे थे।
उस समय पिप्पली गुफा में रहने वाले पूज्य महाकस्सपा सात दिनों तक पालथी मारकर बैठे रहे और समाधि की अवस्था में चले गए।
और आदरणीय महाकस्सपा सातवें दिन के अंत में उस समाधि अवस्था से उठे।
और जब वे उस समाधि की अवस्था से उठे, तो पूज्य महाकस्सपा के मन में यह विचार आया; "क्या होगा यदि मैं भिक्षा मांगने के लिए राजगृह जाऊं?"
उस समय लगभग 500 देव (देवदूत) आदरणीय महाकस्सपा के लिए भिक्षा जुटाने में तत्पर थे। आदरणीय महाकस्सपा ने उन 500 देवों को विदा करके, दोपहर के समय अपना वस्त्र धारण किया और भिक्षापात्र तथा कुर्ता लेकर राजगृह में भिक्षा मांगने के लिए प्रवेश किया।
उस समय देवों के राजा सक्का, आदरणीय महाकस्सपा को दान देने के लिए उत्सुक होकर, बुनकर का रूप धारण करके बुनाई करने लगे। सुजाता असुरकन्ना ने भरा, इत्यादि।
और पूज्य महाकस्सपा भिक्षा की तलाश में घर-घर भटकते हुए देवताओं के राजा सक्का के निवास के पास पहुँचे। देवताओं के राजा सक्का ने दूर से ही पूज्य महाकस्सपा को आते देख अपने घर से निकलकर उनका आदरपूर्वक स्वागत किया और उनसे भिक्षापापा का पात्र लेकर उन्हें अपने घर में ले गए। उन्होंने एक बर्तन से उबले हुए चावल निकालकर भिक्षापापा के भिक्षापापा को दिए। चावल के साथ अनेक प्रकार के सूप, चटनी और स्वादिष्ट व्यंजन भी थे।
और पूज्य महाकस्सपा के मन में यह विचार आया: "यह व्यक्ति कौन हो सकता है, जिसके पास इतनी जादुई शक्तियां हैं?"
और पूज्य महाकस्सपा के मन में भी यही विचार आया: "क्या यह सक्का, देवताओं का राजा हो सकता है?"
और जब उसने देखा कि वह देवों का राजा सक्का है, तो उसने उससे कहा, "हे कोसिया, तुमने यह किया है; फिर कभी ऐसा मत करना।"
"हे पूज्य कस्सपा, हमारे लिए भी पुण्य कर्मों की आवश्यकता है, हमें भी पुण्य कर्म करने चाहिए।"
और देवों (देवदूतों) के राजा सक्का ने पूज्य कस्सपा को प्रणाम किया और उनके दाहिनी ओर रहते हुए परिक्रमा करते हुए वायु में विलीन हो गए और आकाश में अपने स्थान से तीन बार ये भावपूर्ण शब्द कहे: "हे दया, कस्सपा द्वारा स्थापित सर्वोच्च दया।"
और भगवान बुद्ध ने, अपनी दिव्य, स्पष्ट श्रवण शक्ति से, जो मनुष्यों की तुलना में कहीं अधिक है, देवों के राजा सक्का को आकाश में अपने स्थान से तीन बार ये भावपूर्ण शब्द कहते हुए सुना: "हे दान, कश्यप द्वारा स्थापित परम दान।"
और इस संदर्भ में, उस अवसर पर, भगवान बुद्ध ने यह गंभीर वचन कहा:--
"वह भिक्षु जो नियमों के अनुरूप भिक्षा ग्रहण करता है,
जो अकेले लोगों का पालन-पोषण और देखभाल करता है,

ऐसे व्यक्ति को, जो सदा सचेत और शांत रहता है, देवता भी ईर्ष्या करते हैं।

8. मैंने ऐसा सुना है। एक बार भगवान बुद्ध अनाथपिंडिका के उद्यान, जेतवन में, सावत्थी में निवास कर रहे थे।
उस समय बड़ी संख्या में भिक्षु अपने व्रतों से लौटकर भोजन कर चुके थे और करेरी के गोलाकार हॉल में एकत्रित होकर अपने-अपने स्थानों पर बैठ गए। वहाँ इस विषय पर चर्चा हुई: "हे भिक्षुओं, जो भिक्षुण नियमों का पालन करते हुए अपने व्रतों पर जाते हैं, उन्हें समय-समय पर अपनी आँखों से मनमोहक रूप देखने, कानों से मधुर ध्वनियाँ सुनने, नाक से मनमोहक सुगंधों का अनुभव करने, जीभ से मनमोहक स्वाद चखने और स्पर्श में सुखद शरीरों के संपर्क में आने का सौभाग्य प्राप्त होता है। हे भिक्षुओं, जो भिक्षु अपने व्रतों पर जाते समय भिक्षुण नियमों का पालन करते हैं, उन्हें आदर, सम्मान और श्रद्धा प्राप्त होती है। हे भिक्षुओं, आइए हम भी भिक्षुण नियमों का पालन करें, तब हमें भी समय-समय पर अपनी आँखों से मनमोहक रूप देखने, कानों से मधुर ध्वनियाँ सुनने और मनमोहक सुगंधों का अनुभव करने का सौभाग्य प्राप्त होगा।" समय-समय पर अपनी नाक से मनमोहक सुगंधों का अनुभव करना, अपनी जीभ से सुखद स्वादों को चखना और स्पर्श में सुखद शरीरों के संपर्क में आना। हम भी अपने भ्रमण के दौरान सम्मानित, आदरणीय, श्रद्धावान और प्रशंसनीय माने जाएँगे। भिक्षुओं के बीच यही चर्चा और वाद-विवाद का विषय था।
और भगवान बुद्ध संध्याकाल में अपने एकांत ध्यान से उठकर करेरी गोलाकार हॉल की ओर गए और वहाँ पहुँचकर निर्धारित आसन पर बैठ गए। बैठे-बैठे उन्होंने भिक्षुओं को अपने पास बुलाया और कहा, "हे भिक्षुओं, यहाँ एकत्रित आप सब के बीच क्या चर्चा हुई है, क्या विवाद उत्पन्न हुआ है?"
हे प्रभु, अभी-अभी हम सब परिक्रमा करने के बाद करेरी गोलाकार हॉल में एकत्रित हुए और अपनी-अपनी जगह पर बैठ गए। वहाँ निम्नलिखित विषय पर चर्चा हुई; [जैसा ऊपर दिया गया है। अनुवाद]। "भगवान बुद्ध के आगमन के समय यही चर्चा और विवाद का विषय था।"
हे भिक्षुओं, आप जैसे कुलीन परिवारों के वंशजों के लिए, जिन्होंने आस्था के कारण अपने घर त्यागकर संन्यासी जीवन व्यतीत किया है, ऐसी चर्चाओं में लीन रहना उचित नहीं है। जब आप एकत्रित होकर अपने-अपने स्थानों पर बैठें, तो दो में से एक मार्ग अपनाना चाहिए, या तो धार्मिक वार्तालाप, या मौन धारण करना।
और इस संदर्भ में, उस अवसर पर, भगवान बुद्ध ने यह गंभीर वचन कहा:--
"जो भिक्षु भिक्षा संबंधी नियमों का पालन करता है, जो अकेले लोगों का पालन-पोषण और देखभाल करता है, देवता उससे ईर्ष्या करते हैं, बशर्ते उसका हृदय यश और सम्मान की प्राप्ति में लगा हो।"

9. मैंने ऐसा सुना है। एक बार भगवान बुद्ध अनाथपिंडिका के उद्यान, जेतवन में, सावत्थी में निवास कर रहे थे।
उस समय कई भिक्षु [जैसा कि ऊपर अनुवाद किया गया है] उपस्थित हुए और उनके बीच यह विवाद उत्पन्न हुआ: "हे भिक्षुओं, कलाओं में निपुण कौन है, कौन सी कलाओं में स्वयं को प्रशिक्षित करता है, और कौन सी कलाओं में श्रेष्ठता प्राप्त है?"
कुछ ने कहा, "हाथियों के प्रबंधन में कौशल;" कुछ ने कहा, "घोड़ों और वाहनों के प्रबंधन में कौशल;" अन्य ने कहा, "धनुष और तलवार के मूठ बनाने में कौशल; परिवहन, गणित, अनुमान, नक्काशी, कविता, तर्कशास्त्र और कृषि में कौशल।"
भिक्षुओं के बीच यही विवाद का विषय उत्पन्न हुआ था।
और भगवान बुद्ध संध्याकाल में अपने एकांत ध्यान से उठकर बोले, "तुम लोगों के बीच जो विवाद उत्पन्न हुआ है, उसका स्वरूप क्या है?"
जब भगवान बुद्ध आए थे, तब यही विषय चर्चा और विवाद का विषय था।
"हे भिक्षुओं, जैसा ऊपर बताया गया है, वैसा करना उचित नहीं है। दो में से एक मार्ग अपनाना चाहिए, या तो धार्मिक संवाद या फिर मौन।"
और इस संदर्भ में, उस अवसर पर, भगवान बुद्ध ने यह गंभीर वचन कहा:--
"निःसंदेह, जो कलाओं में निपुण नहीं है, जो कल्याण की इच्छा रखता है, जिसकी इंद्रियां शांत हैं, जो पूर्णतः मुक्त है, जो तपस्वी है, जिसके मन में 'यह मेरा है' का भाव नहीं है,"
कौन जुनून से मुक्त है?
उस भिक्षु ने प्रलोभक का वध करके, कलाओं में निपुणता की आवश्यकता के बिना, अकेले ही विचरण किया।

10. मैंने ऐसा सुना है। एक बार भगवान बुद्ध ने बुद्धत्व प्राप्त करने के तुरंत बाद उरुवेला में नेरंजारा नदी के किनारे, ज्ञान के वृक्ष की तलहटी में निवास किया।
उस समय भगवान बुद्ध सात दिनों तक ध्यान की मुद्रा में बैठे थे और मुक्ति के आनंद का अनुभव कर रहे थे।
और सातवें दिन के अंत में, भगवान बुद्ध समाधि की अवस्था से उठे और बुद्ध की दृष्टि से संसार का अवलोकन किया।

और परम पूज्य भगवान बुद्ध ने बुद्ध की दृष्टि से संसार का अवलोकन करते हुए अनेक अग्नियों से झुलसे हुए, दुःख, पाप और भ्रम से ग्रस्त प्राणियों को देखा।
और इस संदर्भ में, उस अवसर पर भगवान बुद्ध ने यह गंभीर वचन कहा:--
"यह दुनिया एक भस्म करने वाली आग है। लोग 'संपर्क' में डूबे हुए हैं, वे बीमारी को अच्छी चीज बताते हैं।"
मनुष्य जो सोचता है, उसका ठीक उल्टा होता है। ये लोग, जो स्वयं को भेद करते हैं, अस्तित्व प्राप्त करके अस्तित्व में लीन होकर अस्तित्व की प्रशंसा करते हैं। जब मनुष्य इसकी प्रशंसा करता है, तो भय उत्पन्न होता है; जहाँ भय होता है, वहाँ दुःख होता है। अस्तित्व के प्रेम का पूर्ण त्याग ही पवित्र जीवन कहलाता है। ये सभी समन और ब्राह्मण जो कहते हैं कि अस्तित्व से अस्तित्व से मुक्ति मिलती है, मैं घोषणा करता हूँ कि वे अस्तित्व से मुक्त नहीं होंगे। परन्तु ये सभी समन और ब्राह्मण जो कहते हैं कि अस्तित्वहीनता से अस्तित्व से मुक्ति मिलती है, मैं घोषणा करता हूँ कि वे अस्तित्व से स्वतंत्र हैं। उपाधि के फलस्वरूप दुःख उत्पन्न नहीं होता; जब समस्त 'आसक्ति' नष्ट हो जाती है, तब दुःख का पुनरुत्पादन नहीं होता। इस विविध संसार को देखो, जो अज्ञान में डूबा हुआ है, सुख-प्रेमी प्राणियों से भरा हुआ है, और मुक्ति से वंचित है!
"सम्मय, चाहे कुछ भी हो या कहीं भी हो, सब कुछ क्षणभंगुर, दुखों से भरा और परिवर्तनशील है।"

अध्याय 4 - "मेघिया"
पाली संस्करण: पाली-अंग्रेजी संस्करण और पाली-देवनागरी संस्करण
1. मैंने ऐसा सुना है। एक बार भगवान बुद्ध चालका पर्वत पर चालका में निवास कर रहे थे।
उस समय पूज्य मेघिया भगवान बुद्ध के सेवक थे। पूज्य मेघिया भगवान बुद्ध के पास गए और उनके निकट आकर उन्हें प्रणाम किया तथा आदरपूर्वक अलग खड़े हो गए। इस प्रकार खड़े होकर उन्होंने भगवान बुद्ध से कहा, "हे प्रभु, मैं जंतु ग्राम में भिक्षा मांगने के लिए जाना चाहता/चाहती हूँ।"
"बहुत खूब, मेघिया, जैसा तुम्हें ठीक लगे वैसा करो।"
और पूज्य मेघिया ने दोपहर के समय वस्त्र धारण करके, भिक्षापात्र और कुर्ता लेकर जंतु गाँव में भिक्षा मांगने के लिए प्रवेश किया। जब उन्होंने अपने चक्कर पूरे कर लिए और भोजन कर लिया, तो वे किमिकाला नदी के किनारे गए और नदी के किनारे-किनारे पैदल घूमते हुए उन्हें आमों का एक मनमोहक और सुंदर उपवन दिखाई दिया। उसे देखकर वे बोले, “यह आमों का उपवन कितना सुंदर है! सचमुच यह एक कुलीन परिवार के वंशज के लिए पुण्य प्राप्ति के लिए उपयुक्त स्थान है। यदि भगवान बुद्ध की इच्छा हुई, तो मैं इस आमों के उपवन में लौटकर पुण्य प्राप्ति के लिए प्रयास करूंगा।”

और पूज्य मेघिया भगवान बुद्ध के पास गए और पास आकर उन्हें प्रणाम किया और आदरपूर्वक अलग बैठ गए। बैठे-बैठे उन्होंने भगवान बुद्ध से कहा, "हे प्रभु, दोपहर के समय मैंने अपने वस्त्र धारण किए, भिक्षापात्र और कुर्ता लिया और जंतु गाँव में भिक्षा मांगने गया। जब मैंने अपने चक्कर पूरे कर लिए और भोजन कर लिया, तो मैं किमिकाला नदी के किनारे गया और पैदल घूमते हुए मुझे आमों का एक मनमोहक और सुंदर उपवन दिखाई दिया। उसे देखकर मैंने कहा, 'यह आमों का उपवन कितना सुंदर है! यह तो एक कुलीन परिवार के वंशज के लिए पुण्य प्राप्ति के लिए उपयुक्त स्थान है।' यदि भगवान बुद्ध सहमत हों, तो मैं इस आमों के उपवन में लौटकर पुण्य प्राप्ति के लिए प्रयास करूंगा।"
"हे प्रभु, यदि भगवान बुद्ध सहमत हों तो मैं उस आम के बाग में जाकर संघर्ष में शामिल हो जाऊंगा।"
ये शब्द कहे जाने के बाद, भगवान बुद्ध ने आदरणीय मेघिया से कहा: "अभी के लिए प्रतीक्षा करो, मेघिया, हम अभी अकेले हैं, कम से कम तब तक जब तक कोई दूसरा भिक्षु नहीं आ जाता।"
और दूसरी बार पूज्य मेघिया ने भगवान बुद्ध से कहा, “हे प्रभु, भगवान बुद्ध को अब और कोई कर्तव्य निभाने की आवश्यकता नहीं है, न ही किसी और अनुभव की आवश्यकता है, परन्तु हे प्रभु, मुझे अभी भी कर्तव्य निभाने हैं और अनुभव प्राप्त करना है। हे प्रभु, यदि भगवान बुद्ध सहमत हों, तो मैं उस आम के बाग में जाकर संघर्ष में संलग्न हो जाऊँगा।”
दूसरी बार, भगवान बुद्ध ने आदरणीय मेघिया से कहा: "थोड़ी देर रुकिए, मेघिया, अब हम अकेले हैं, कम से कम तब तक जब तक कोई दूसरा भिक्षु न आ जाए।"
तीसरी बार पूज्य मेघिया ने भगवान बुद्ध से कहा: [जैसा ऊपर है। अनुवाद]

"जहाँ तक संघर्ष का सवाल है, मेघिया, मैं इसे तुम्हारे सामने किन शब्दों में व्यक्त करूँ? मेघिया, अब तुम वही करो जो तुम्हें सबसे अच्छा लगे।"
और पूज्य मेघिया अपने आसन से उठे और भगवान बुद्ध को प्रणाम किया तथा उनके दाहिनी ओर रहते हुए उनके चारों ओर घूमकर आम के बाग की ओर गए और पास आकर आम के बाग में प्रवेश किया तथा दिन की भीषण गर्मी में एक वृक्ष के चरणों में बैठ गए।

और उस आम के बाग में रहते हुए, आदरणीय मेघिया लगातार तीन प्रकार के बुरे और गैरकानूनी विचारों से घिरी रहती थीं, अर्थात् कामुक विचार, द्वेषपूर्ण विचार और क्रूर विचार।
और आदरणीय मेघिया ने मन ही मन सोचा: "यह कितना विचित्र है, कितना आश्चर्यजनक है कि मैं, जिसने आस्था के कारण अपना घर त्यागकर तपस्वी जीवन व्यतीत किया है, इन बुरे और अवैध विचारों से भरा हुआ हूँ, अर्थात् कामुक विचार, द्वेषपूर्ण विचार और क्रूर विचार।"
और पूज्य मेघिया अपने एकांत ध्यान से उठे और भगवान बुद्ध के पास गए और भगवान बुद्ध को प्रणाम करके आदरपूर्वक अलग बैठ गए और बैठे-बैठे भगवान बुद्ध से कहा, "हे प्रभु, उस आम के बाग में रहते हुए, मुझ पर तीन बुरे और निषिद्ध विचार हावी हो गए, अर्थात् कामुक विचार, द्वेषपूर्ण विचार और क्रूर विचार। मैंने सोचा कि यह कितना विचित्र और आश्चर्यजनक है कि मैं, जिसने श्रद्धा के कारण अपना घर त्यागकर संन्यासी जीवन व्यतीत किया है, इन तीन बुरे और निषिद्ध विचारों से ग्रस्त हो रहा हूँ।"
"हे मेघिया, अपरिपक्व हृदय के परिपक्व होने के लिए पाँच स्थितियाँ सहायक होती हैं। ये पाँच स्थितियाँ क्या हैं?"
1. हे मेघिया, इस संसार में एक भिक्षु का एक गुणी मित्र और एक गुणी साथी होना चाहिए। हे मेघिया, अपरिपक्व मुक्त हृदय के लिए परिपक्वता की ओर ले जाने वाली यह पहली शर्त है।
2. इसके अतिरिक्त, मेघिया, एक भिक्षु को धार्मिक होना चाहिए, उपदेशों के अनुसार संयमी जीवन जीना चाहिए, और सही आचरण से युक्त होना चाहिए, छोटे से छोटे पाप में भी खतरे को पहचानना चाहिए, और नैतिक उपदेशों को अपनाकर उसमें अभ्यास करना चाहिए। मेघिया, अपरिपक्व मुक्त हृदय के लिए, यह दूसरी शर्त है जो परिपक्वता की ओर ले जाती है।
3. इसके अलावा, मेघिया, ऐसे प्रवचन होने चाहिए जो बुराई के उन्मूलन, हृदय के लाभकारी विस्तार, संसार से पूर्ण विरक्ति, सभी इच्छाओं के निवारण, शांति, उच्च ज्ञान, परम ज्ञानोदय और निर्वाण की ओर अग्रसर हों, अर्थात् मितव्ययिता, संतोष, एकांत, एकांत, प्रयास और परिश्रम, भक्ति, आत्म-एकाग्रता, बुद्धि और ज्ञान से प्राप्त अंतर्दृष्टि से उत्पन्न मुक्ति पर प्रवचन—ऐसे प्रवचनों के माध्यम से संतोष प्राप्त होता है और कष्ट एवं कठिनाइयों पर विजय प्राप्त होती है।
अपरिपक्व हृदय, मेघिया के लिए, यह तीसरी स्थिति है जो परिपक्वता की ओर ले जाती है।
4. इसके अलावा, मेघिया, भिक्षु को प्रयास और परिश्रम का जीवन जीना चाहिए, अवैध प्रथाओं का त्याग करना चाहिए, उसे वैध कार्यों का अभ्यास करना चाहिए, उसे दृढ़ रहना चाहिए, अपनी शक्ति लगानी चाहिए, वैध कार्यों के अभ्यास में बोझ नहीं डालना चाहिए।
अपरिपक्व हृदय, मेघिया के लिए, यह चौथी अवस्था है जो परिपक्वता की ओर ले जाती है।
5. इसके अलावा, मेघिया, भिक्षु को ज्ञान होना चाहिए, चीजों के उदय और अस्त होने का ज्ञान होना चाहिए, उदात्त अंतर्दृष्टि होनी चाहिए और उस ज्ञान से संपन्न होना चाहिए जो दुख के पूर्ण निवारण की ओर ले जाता है।

अपरिपक्व हृदय, मेघिया के लिए, यह पांचवीं अवस्था है जो परिपक्वता की ओर ले जाती है।
अपरिपक्व हृदय (मेघिया) के लिए, परिपक्वता लाने वाली ये पाँच स्थितियाँ हैं।
अतः, मेघिया, जब भिक्षु को कोई गुणी मित्र, गुणी साथी या गुणी सहयोगी मिल जाता है, तो उससे यह अपेक्षा की जाती है कि वह धार्मिक हो जाएगा, उपदेशों के अनुसार संयमी जीवन व्यतीत करेगा और सही आचरण से युक्त होगा, तथा छोटे से छोटे पाप में भी खतरा देखकर नैतिक उपदेशों को अपनाएगा और उनका पालन करेगा; और वे प्रवचन जो बुराई के निवारण, हृदय के लाभकारी विस्तार, संसार से पूर्ण विरक्ति, सभी इच्छाओं के निवारण, शांति, उच्च ज्ञान, परम ज्ञान और निर्वाण की ओर ले जाते हैं, अर्थात्, मितव्ययता, संतोष, एकांत, एकांत, परिश्रम और परिश्रम, धर्मपरायणता, आत्म-एकाग्रता, बुद्धि और ज्ञान से प्राप्त अंतर्दृष्टि से उत्पन्न मुक्ति पर प्रवचन—ऐसे प्रवचनों के माध्यम से संतोष प्राप्त होता है और कष्टों एवं कठिनाइयों पर विजय प्राप्त होती है।
इस प्रकार, एक भिक्षु एक गुणी मित्र, एक गुणी साथी, एक गुणी सहयोगी के साथ परिश्रम और परिश्रम का जीवन व्यतीत करेगा, और अवैध प्रथाओं को त्यागकर वैध प्रथाओं का पालन करेगा; वह दृढ़ संकल्पित होगा, अपनी पूरी शक्ति लगाएगा और वैध प्रथाओं के पालन में बोझ को नहीं उतारेगा।
इस प्रकार, एक गुणी मित्र, एक गुणी साथी, एक गुणी सहयोगी के साथ रहने वाला भिक्षु ज्ञानी हो जाएगा, उसे चीजों के उदय और अस्त होने का ज्ञान, उदात्त अंतर्दृष्टि और उन चीजों का ज्ञान प्राप्त होगा जो दुखों के पूर्ण निवारण में सहायक होती हैं।

इसके अतिरिक्त, मेघिया भिक्षु, जो इन पाँच अवस्थाओं का पालन करता है, उसे चार अन्य अवस्थाओं पर विशेष ध्यान देना चाहिए; कामवासना का त्याग करने के लिए उसे शरीर की अशुद्धता पर ध्यान करना चाहिए, द्वेष का त्याग करने के लिए उसे दया पर ध्यान करना चाहिए, (बुरे) विचारों को दूर करने के लिए उसे श्वास-श्वास गिनते हुए ध्यान का अभ्यास करना चाहिए; 'मैं हूँ' कहने वाले अहंकार को दूर करने के लिए उसे सभी चीजों की अनित्यता की चेतना का अभ्यास करना चाहिए। अनित्यता की चेतना से अहं-रहितता की चेतना स्थापित होती है, और अहं-रहितता के प्रति सचेत व्यक्ति 'मैं हूँ' की भावना को दूर करने में सफल होता है, और इसी जन्म में निर्वाण प्राप्त करता है।
और इस संदर्भ में, उस अवसर पर, भगवान बुद्ध ने यह गंभीर वचन कहा:--

जो इन तुच्छ और सूक्ष्म विचारों को सही ढंग से नहीं समझता,
जिससे मन अहंकार से भर जाता है, ऐसा व्यक्ति जन्म-जन्मांतर तक भ्रम में भटकता रहता है। परन्तु बुद्धिमान, उत्साही और सचेत व्यक्ति ऐसे विचारों को वश में रखता है।
वह उन विचारों से बच निकलता है जो मन को अहंकार से भर देते हैं और उसे फुला देते हैं।

2. मैंने ऐसा सुना है। एक बार भगवान बुद्ध कुसिनारा में, उपवत्तना में, मल्ल वंश के साल वन में निवास कर रहे थे।
उस समय भगवान बुद्ध से कुछ ही दूरी पर, जंगल में झोपड़ियों में बड़ी संख्या में भिक्षु रहते थे।
वे अहंकारी, घमंडी, चंचल, बातूनी, बेपरवाह, अज्ञानी, बेलगाम, लापरवाह और कामुक थे।
और भगवान बुद्ध ने जंगल में बनी झोपड़ियों में रहने वाले इन भिक्षुओं को देखा, जो अहंकारी, चंचल, बातूनी, बेपरवाह, विचारहीन, अज्ञानी, अनियंत्रित, लापरवाह और कामुक थे।
और इस संदर्भ में, उस अवसर पर, भगवान बुद्ध ने यह गंभीर वचन कहा:--
जो अपने शरीर की देखभाल नहीं करता,
जो झूठे सिद्धांतों के वश में है, जो आलस्य और सुस्ती के आगे झुक जाता है, वह शैतान के प्रभाव में आ जाता है। परन्तु जो अपने मन पर नियंत्रण रखता है, जिसका क्षेत्र सही विचार है, जो सदा सही शिक्षा को अपने सामने रखता है, जो समय के उदय और अस्त को जानता है, जो आलस्य और सुस्ती पर विजय प्राप्त करता है,
वह भिक्षु सभी प्रकार के दंडों से मुक्त हो जाता है।

3. मैंने ऐसा सुना है। एक बार भगवान बुद्ध भिक्षुओं के एक बड़े समूह के साथ कोसल देश में जगह-जगह घूम रहे थे। उस समय भगवान बुद्ध मार्ग छोड़कर एक वृक्ष की तलहटी में गए और नियत आसन पर बैठ गए।
और एक चरवाहा भगवान बुद्ध के पास आया, और पास आकर भगवान बुद्ध को प्रणाम किया और अलग बैठ गया। जब चरवाहा वहाँ बैठा था, तब भगवान बुद्ध ने उसे धार्मिक प्रवचनों से उपदेश दिया, प्रेरित किया, प्रोत्साहित किया और प्रसन्न किया।
और भगवान बुद्ध के धार्मिक उपदेश से प्रेरित, उत्साहित, प्रज्वलित और प्रसन्न होकर चरवाहे ने कहा: "क्या भगवान बुद्ध और भिक्षु कल का भोजन मेरे साथ करना चाहेंगे?"
और भगवान बुद्ध ने अपनी मौनता से सहमति व्यक्त की।
और जब चरवाहे ने देखा कि भगवान बुद्ध ने सहमति दे दी है, तो वह अपने आसन से उठा और भगवान बुद्ध को प्रणाम किया, और उनके दाहिनी ओर मुँह करके परिक्रमा करते हुए चला गया। उस रात के अंत में, चरवाहे ने अपने घर में भरपूर दलिया और छाछ तैयार करवाकर भगवान बुद्ध को बताया कि समय आ गया है, "हे प्रभु, समय आ गया है, भोजन तैयार है।"
और भगवान बुद्ध ने दोपहर के समय वस्त्र धारण करके, भिक्षापात्र और वस्त्र लेकर भिक्षुओं के संघ के साथ उस चरवाहे के घर गए, और वहाँ पहुँचकर वे निर्धारित आसन पर बैठ गए।
और उस चरवाहे ने अपने हाथों से भिक्षुओं को, जिनके मुखिया बुद्ध थे, दलिया और छाछ परोसी। जब भगवान बुद्ध ने अपना भोजन समाप्त कर लिया और कटोरे से अपना हाथ हटा लिया, तो चरवाहा विनम्रतापूर्वक एक तरफ बैठ गया और जब वह बैठा था, तब भगवान बुद्ध ने धार्मिक प्रवचनों से चरवाहे को उपदेश दिया, प्रेरित किया, प्रोत्साहित किया और प्रसन्न किया। फिर भगवान बुद्ध अपने स्थान से उठे और चले गए। भगवान बुद्ध के जाने के कुछ ही समय बाद, एक स्त्री से झगड़े में एक व्यक्ति ने चरवाहे की हत्या कर दी। कई भिक्षु भगवान बुद्ध के पास गए और पास आकर उन्हें प्रणाम किया और आदरपूर्वक अलग बैठ गए। बैठे-बैठे उन्होंने भगवान बुद्ध से कहा, “हे प्रभु, ऐसा कहा जाता है कि वह चरवाहा, जिसने हाल ही में बुद्ध के नेतृत्व में भिक्षु समुदाय को दलिया और छाछ अर्पित की थी, किसी स्त्री को लेकर हुए झगड़े में एक व्यक्ति द्वारा मारा गया है।” इस संदर्भ में, उस अवसर पर, भगवान बुद्ध ने यह गंभीर वचन कहा:--
शत्रु चाहे शत्रु के साथ कुछ भी करे
या फिर एक क्रोधित व्यक्ति दूसरे क्रोधित व्यक्ति से, एक ऐसा मन जो गलत बातों पर ही केंद्रित हो।
इसके बुरे परिणाम और भी बदतर होते हैं।"1

4. एक निश्चित अवसर पर भगवान बुद्ध ने कलंदिकानिवापा में, बंबू ग्रोव में, राजगृह में निवास किया।
उस समय पूज्य सारिपुत्त और पूज्य मोग्गलाना महान कपोतकंदरा मठ में निवास कर रहे थे।
और पूज्य सारिपुत्त, जिनके बाल हाल ही में मुंडे हुए थे, चांदनी रात में खुले आसमान के नीचे बैठे हुए समाधि में लीन हो गए।
दो यक्ष, जो आपस में सहयोगी थे, कुछ काम से उत्तर देश से दक्षिण देश आए। जब उन्होंने पूज्य सारिपुत्त को चांदनी रात में खुले में बैठे देखा, जिनके बाल अभी-अभी मुंडे हुए थे, तो पहले यक्ष ने दूसरे यक्ष से कहा, "मित्र, मेरे मन में आ रहा है कि इस समना के सिर

पर एक प्रहार कर दूं।" यह कहकर दूसरे यक्ष ने अपने मित्र से कहा, "बस करो मित्र, समना पर प्रहार मत करो। यह समना एक प्रसिद्ध व्यक्ति हैं, जादू में बहुत शक्तिशाली और निपुण हैं।"
दूसरी बार पहले यक्ष ने दूसरे यक्ष से कहा: "मित्र, मेरे मन में यह विचार आ रहा है कि इस समना के सिर पर एक प्रहार कर दूं।"

दूसरी बार दूसरे यक्ष ने उत्तर दिया: "बस करो, मित्र, समना (तपस्वी) पर प्रहार मत करो। यह समना एक प्रसिद्ध व्यक्ति है, जो जादू में बहुत शक्तिशाली और निपुण है।"
तीसरी बार पहले यक्ष ने दूसरे यक्ष से कहा: "मित्र, मेरे मन में यह विचार आ रहा है कि इस समना के सिर पर एक प्रहार कर दूं।"
और तीसरी बार दूसरे यक्ष ने उत्तर दिया: "बस करो, मित्र। यह समना एक प्रसिद्ध व्यक्ति है, जो जादू में बहुत शक्तिशाली और निपुण है।"
और पहले यक्ष ने दूसरे यक्ष की बात अनसुनी करते हुए पूज्य सारिपुत्त के सिर पर ऐसा प्रहार किया कि मानो सात या साढ़े सात हाथ ऊँचा हाथी भी गिर जाए या कोई विशाल पर्वत शिखर चूर-चूर हो जाए। और वह यक्ष 'मैं जल रहा हूँ, मैं जल रहा हूँ' चिल्लाते हुए वहीं नरक में जा गिरा।
और पूज्य मोग्गलाना महान ने अपनी दिव्य दृष्टि से, जो मनुष्यों की दृष्टि से कहीं अधिक स्पष्ट थी, यक्ष द्वारा पूज्य सारिपुत्त के सिर पर किए गए प्रहार को देखा, और जब उन्होंने यह देखा, तो वे पूज्य सारिपुत्त के पास गए और उनके निकट आकर उनसे कहा: "हे भिक्षु, मुझे आशा है कि आप आराम से हैं, आप कुशल हैं, और आपको कोई पीड़ा नहीं है।"
"मैं शांत हूँ, भिक्षु मोग्गलाना, और ठीक हूँ, लेकिन मुझे अपने सिर में हल्का दर्द महसूस हो रहा है।"
"हे सारिपुत्त, यह कितना विचित्र है! हे सारिपुत्त, यह कितना अद्भुत है! पूज्य सारिपुत्त की जादुई शक्ति कितनी महान है, उनका सामर्थ्य कितना महान है!" हे सारिपुत्त, अभी-अभी एक यक्ष ने आपके सिर पर प्रहार किया, और वह प्रहार कितना ज़ोरदार था! वास्तव में, ऐसे प्रहार से कोई सात या साढ़े सात हाथ ऊँचे हाथी को गिरा सकता है और एक विशाल पर्वत शिखर को चूर-चूर कर सकता है। और पूज्य सारिपुत्त कहते हैं: 'हे मित्र मोग्गलाना, मैं शांत हूँ, मैं ठीक हूँ, मेरे मित्र मोग्गलाना, मुझे बस सिर में हल्का सा दर्द है।'
"यह विचित्र है, भिक्षु मोग्गलाना, यह अद्भुत है, भिक्षु मोग्गलाना—आदरणीय मोग्गलाना की जादुई शक्ति कितनी महान होगी कि उन्होंने यक्ष को देखा। मैंने तो मिट्टी का एक भी अप्सरा नहीं देखा।"
और भगवान बुद्ध ने अपनी दिव्य श्रवण शक्ति से, जो मनुष्यों की श्रवण शक्ति से कहीं अधिक स्पष्ट थी, इन दो महान नायकों के बीच हुई बातचीत को सुना।
और इस संदर्भ में, उस अवसर पर, भगवान बुद्ध ने यह गंभीर वचन कहा:--
जिसका हृदय चट्टान की तरह अडिग रहता है,
जो वासना से मुक्त है, जो क्रोधितों से क्रोधित नहीं होता, जिसका हृदय इस प्रकार प्रशिक्षित है।
ऐसे व्यक्ति को पीड़ा कैसे प्राप्त होगी?

5. मैंने ऐसा सुना है। एक बार भगवान बुद्ध कोसंबी में घोषिता मठ में निवास कर रहे थे।
उस समय भगवान बुद्ध भिक्षुओं और भिक्षुणियों, पुरुष और महिला गृहस्थ शिष्यों, राजाओं और उनके मंत्रियों, साथ ही विधर्मी संप्रदायों और उनके शिष्यों की भीड़ से घिरे हुए रह रहे थे, और उन्हें झुंझलाहट और असुविधा का सामना करना पड़ा।
और उनके मन में यह विचार आया: "भिक्षुओं और भिक्षुणियों, पुरुष और महिला भक्तों, राजाओं और उनके मंत्रियों, साथ ही विधर्मी संप्रदायों और उनके शिष्यों की भीड़ से घिरे होने के कारण मुझे झुंझलाहट और असुविधा होती है। अगर मैं भीड़ से दूर, अकेले रहूँ तो क्या होगा?"

भगवान बुद्ध ने दोपहर के समय वस्त्र धारण करके, भिक्षापात्र और वस्त्र लेकर कोसंबी में भिक्षा मांगने के लिए प्रवेश किया। कोसंबी में भिक्षा मांगने के बाद वे वापस लौटे और भोजन करने के बाद उन्होंने स्वयं अपने विश्राम स्थल को व्यवस्थित किया, और भिक्षापात्र और वस्त्र लेकर, अपने सेवक को सूचित किए बिना और भिक्षुओं को सूचना दिए बिना, अकेले ही पालिलेय्यक की दिशा में प्रस्थान किया। वे स्थान-स्थान भटकते हुए पालिलेय्यक पहुंचे और वहां निवास करने लगे।
और भगवान बुद्ध ने पालिलेय्यक के निकट, भद्दा साल वृक्ष की तलहटी में स्थित घने वन रक्खिला में विश्राम किया।
वहाँ एक कुलीन हाथी रहता था, जिसे नर-मादा हाथियों, हाथी के बच्चों और उनके शावकों की भीड़ से बहुत परेशानी होती थी। उसे टूटी हुई घास की पत्तियाँ खानी पड़ती थीं, और वे उसकी तोड़ी हुई टहनियों को खा जाते थे। उसे दूषित पानी भी पीना पड़ता था, और जब वह पानी पार करने के लिए उसमें डुबकी लगाता था, तो मादा हाथी अपने शरीर को उससे रगड़ती थीं। इस भीड़ के कारण वह परेशान रहता था और उसका जीवन अशांत रहता था।
और उस महान हाथी के मन में यह विचार आया; "नर हाथियों, मादा हाथियों, हाथी के बच्चों और हाथी के शावकों की भीड़ से घिरा हुआ, मुझे टूटी हुई घास की पत्तियाँ खानी पड़ती हैं और वे मेरी तोड़ी हुई छोटी डालियाँ खा जाते हैं। मुझे प्रदूषित पानी भी पीना पड़ता

है और जब मैं पार जाने के लिए पानी में डुबकी लगाता हूँ, तो मादा हाथी अपने शरीर को मुझसे रगड़ती हैं। इस भीड़ के कारण मैं परेशान और बेचैन रहता हूँ। अगर मैं भीड़ से दूर, अकेला रहूँ तो क्या होगा?"
और वह श्रेष्ठ हाथी झुंड छोड़कर रक्खिता के घने जंगलों में, पलिलेय्यका के निकट, भद्दा साल वृक्ष की तलहटी में गया, जहाँ भगवान बुद्ध विराजमान थे। वहाँ पहुँचकर उसने उस स्थान से घास हटाई जहाँ भगवान बुद्ध विराजमान थे, और अपनी सूंड से उनके लिए पीने का पानी लाया।
और जब भगवान बुद्ध एकांत और शांति के आनंद में डूबे हुए थे, तब उनके मन में यह विचार आया: "पहले मैं भिक्षुओं और भिक्षुणियों आदि से घिरे रहकर झुंझलाहट और असुविधा भरा जीवन व्यतीत करता था। अब मैं भिक्षुओं और भिक्षुणियों आदि से घिरा नहीं हूँ। मैं सुख और आराम से जीवन व्यतीत करता हूँ।"
और उस महान हाथी के मन में यह विचार आया: "पहले मैं नर हाथियों और मादा हाथियों आदि से घिरे रहकर झुंझलाहट और असुविधा भरा जीवन जीता था। अब मैं उनसे घिरा नहीं हूँ, इसलिए आराम और सुकून से रहता हूँ।"
और भगवान बुद्ध ने अपने एकांतवास को ध्यान में रखते हुए और उस महान हाथी के मन में चल रहे विचारों को समझते हुए, यह गंभीर वचन कहा:--
"महान हाथी का हृदय (हल के डंडों जैसे दांतों वाला)"
यह परम पूज्य के हृदय से एकात्म है।
क्योंकि प्रत्येक व्यक्ति जंगल के एकांत में आनंदित होता है।

6. मैंने ऐसा सुना है। एक बार भगवान बुद्ध अनाथपिंडिका के उद्यान, जेतवन में, सावत्थी में निवास कर रहे थे।
उस समय पूज्य पिंडोलभरद्वाज भगवान बुद्ध से कुछ दूरी पर पालथी मारकर सीधे बैठे थे। वे वनवास में रहने वाले, भिक्षा ग्रहण करने वाले, कूड़े के ढेर से चिथड़े-चिथड़े लेकर वस्त्र बुनने वाले, भिक्षुओं के तीन वस्त्र धारण करने वाले, अल्प में संतुष्ट, एकांतप्रिय, मनुष्यों से विरक्त रहने वाले, परिश्रमी और उत्साही, धुतंगों के पालनकर्ता और उच्च विचारों में लीन रहने वाले थे।
और भगवान बुद्ध ने पूज्य पिंडोलभरद्वाज को कुछ ही दूरी पर, पालथी मारकर, सीधे बैठे हुए देखा; वे वनों में रहने वाले, भिक्षा ग्रहण करने वाले, कूड़े के ढेर से निकाले गए चिथड़ों से बने वस्त्र पहनने वाले, भिक्षु के तीन वस्त्र धारण करने वाले, थोड़े में संतुष्ट, प्रसन्न, एकांतप्रिय, मनुष्यों से अलग रहने वाले, परिश्रमी और उत्सुक, धुतंगों के रक्षक और उच्च विचारों में लीन थे।
और इस संदर्भ में, उस अवसर पर, भगवान बुद्ध ने यह गंभीर वचन कहा:--
किसी की बुराई न करना, किसी को चोट न पहुँचाना,
नियमों के अनुसार संयम बरतना, भोजन में संयम रखना, एकांत में सोना, उच्च विचारों में लीन रहना।
यह बुद्ध का नियम है।

7. मैंने ऐसा सुना है। एक बार भगवान बुद्ध अनाथपिंडिका के उद्यान, जेतवन में, सावत्थी में निवास कर रहे थे।
उस समय पूज्य सारिपुत्त भगवान बुद्ध से कुछ ही दूरी पर, पांव बैठे हुए, शरीर सीधा करके, कम इच्छाओं वाले, संतुष्ट, एकांतप्रिय, अलग-थलग रहने वाले, परिश्रमी और उत्सुक तथा उच्च विचारों में लीन थे।
और भगवान बुद्ध ने पूज्य सारिपुत्त को कुछ ही दूरी पर पांव बैठे हुए देखा, वे सीधे खड़े थे, इच्छाओं से रहित, संतुष्ट, एकांतप्रिय, एकांतप्रिय, परिश्रमी, उत्साही और उच्च विचारों में लीन थे। इस अवसर पर भगवान बुद्ध ने यह गंभीर वचन कहा:--
"वह मौन भिक्षु जो उच्च विचारों में लीन रहता है,
जो कम ही प्रसन्न होता है, जो मौन के मार्ग में प्रशिक्षित है; ऐसा व्यक्ति, जो सदा शांत और सचेत रहता है,
दुःख नहीं आता।

8. मैंने ऐसा सुना है। एक बार भगवान बुद्ध अनाथपिंडिका के उद्यान, जेतवन में, सावत्थी में निवास कर रहे थे।
उस समय भगवान बुद्ध को श्रद्धापूर्वक आदर दिया जाता था, उनका सम्मान किया जाता था और उन्हें संघ के भिक्षुओं के लिए आवश्यक वस्तुएँ, जैसे वस्त्र, भिक्षा, चटाई और बीमारी की स्थिति में दवाइयाँ प्राप्त होती थीं। भिक्षुओं को भी श्रद्धापूर्वक आदर दिया जाता था और उन्हें भिक्षुओं के लिए आवश्यक वस्तुएँ, जैसे वस्त्र, भिक्षा, चटाई और बीमारी की स्थिति में दवाइयाँ प्राप्त होती थीं। विधर्मी संप्रदायों के घुमंतू भिक्षुओं को आदर नहीं दिया जाता था, इत्यादि [जैसा ऊपर अनुवाद] और उन्हें आवश्यक वस्तुएँ भी प्राप्त नहीं होती थीं [जैसा ऊपर अनुवाद]। और विधर्मी संप्रदायों के ये घुमंतू भिक्षु भगवान बुद्ध और भिक्षुओं को दिए गए सम्मान को सहन नहीं कर सके, और वे उस स्थान पर गए जहाँ घुमंतू भिक्षुणी सुंदरी थीं और उनके पास पहुँचकर उन्होंने उनसे कहा: "क्या आप अपने रिश्तेदारों के लिए कुछ कर सकती हैं, बहन?"
महोदय, मैं क्या करूँ? मेरे बस में क्या है? मैं अपने रिश्तेदारों के लिए अपनी जान कुर्बान करने को तैयार हूँ।
"तो फिर, बहन, तुरंत जेतवन जाओ।"

"ऐसा ही हो, महोदय," विधर्मी संप्रदायों के इन घुमंतू भिक्षुओं की बात मानते हुए घुमंतू भिक्षुणी सुंदरी ने सहमति जताई और वह तुरंत जेतवन चली गई।
और क्योंकि विधर्मी दल के ये भटकते हुए भिक्षु जानते थे कि जेतवन में रहने वाले बहुत से लोगों को सुंदरी नामक उस साध्वी के अचानक वहाँ आने का अवसर मिलेगा, (वे स्वयं वहाँ गए) और (गुप्त रूप से) उसका वध करके उसे जेतवन के एक टूटे हुए कुएँ में फेंक दिया। फिर वे राजा पोसेनादि कोसल के पास गए और उनके निकट आकर कहा, “महाराज, साध्वी सुंदरी का निधन हो गया है।”
"तो फिर आपको क्या लगता है कि वह कहाँ है?"
"जेतवन में, हे महान राजा।"
"फिर जेतवन की खोज करो।"
और विधर्मी दल के उन भटकते हुए भिक्षुओं ने जेतवन में खोजबीन की, और जिस कुएँ में शव फेंका गया था, उसे वहाँ से निकालकर पालकी में रखा और रथ मार्ग से सावत्थी ले आए। जब वे उस स्थान पर पहुँचे जहाँ चारों मार्ग मिलते हैं, तो उन्होंने लोगों में यह कहकर हलचल मचा दी: “देखो, महोदय, शाक्य पुत्रों का काम! ये शाक्य पुत्र कितने निर्लज्ज, अधर्मी, दुष्ट, झूठे और भ्रष्ट हैं! ये स्वयं को धार्मिक, पवित्र, पवित्र, सत्यवादी, गुणी और भले पुरुष कहते हैं! इनमें न तो समता का अंश है, न ही ब्राह्मण का। इनके समता का कोई अर्थ नहीं, इनके ब्राह्मणत्व का कोई अर्थ नहीं। इनका समता कहाँ है, इनका ब्राह्मणत्व कहाँ है? भला जो पुरुष अपने कर्तव्य का निर्वाह करता है, वह किसी स्त्री का प्राण कैसे छीन सकता है?” और सावत्थी के लोग जब भी भिक्षुओं को देखते, तो उन्हें अपशब्द कहते, गाली देते, परेशान करते और कठोर एवं अनुचित भाषा का प्रयोग करते हुए कहते: "ये शाक्य पुत्र निर्लज्ज, अधर्मी, दुष्ट, झूठे और भ्रष्ट हैं!"
और बहुत से भिक्षुओं ने सुबह के समय वस्त्र धारण करके, भिक्षापात्र और वस्त्र लेकर सावत्थी में भिक्षा मांगने के लिए प्रवेश किया। सावत्थी में परिक्रमा करने और भिक्षा प्राप्त करके भोजन करने के बाद वे भगवान बुद्ध के पास गए और उनके पास पहुँचकर उन्हें प्रणाम किया और अलग बैठ गए। इस प्रकार बैठे हुए उन भिक्षुओं ने भगवान बुद्ध से कहा, “सावत्थी के लोग जब भी भिक्षुओं को देखते हैं, तो वे उन्हें अपशब्द कहते हैं, गाली देते हैं, परेशान करते हैं और तंग करते हैं; “ये शाक्य पुत्र कितने निर्लज्ज हैं!” आदि।
हे भिक्षुओं, यह उपद्रव अधिक समय तक नहीं चलेगा, यह सात दिनों तक चलेगा और सातवें दिन के अंत में शांत हो जाएगा। इसलिए, हे भिक्षुओं, उन श्रावस्तीवासियों को, जो आपको देखकर अपशब्द, गाली-गलौज आदि करते हैं, इन श्लोकों से फटकारें: “झूठा नरक में जाता है, और वह भी जो कोई कर्म करके कहता है कि ‘मैंने यह नहीं किया’; परलोक में उनमें कोई भेद नहीं रहेगा, दूसरे जन्म में वे नीच आचरण वाले होंगे।”
और इन भिक्षुओं ने भगवान बुद्ध की उपस्थिति में इन श्लोकों को कंठस्थ कर लिया, और फिर श्रावस्ती के उन लोगों को फटकारा जिन्होंने उपरोक्त श्लोकों से उनका अपमान किया था।
और लोगों ने आपस में कहा: "ये समना, ये शाक्य पुत्र तर्कहीन हैं, हम इन शाक्य पुत्रों से अब और कोई संबंध नहीं रखेंगे।"
इस प्रकार यह हंगामा ज्यादा देर तक नहीं चला, केवल सात दिनों तक ही चला और सातवें दिन के अंत में शांत हो गया।
कई भिक्षु भगवान बुद्ध के पास गए और उनके पास पहुँचकर उन्हें प्रणाम किया और अलग बैठ गए। बैठे-बैठे उन्होंने भगवान बुद्ध से कहा, “हे प्रभु, यह अद्भुत है! भगवान बुद्ध के ये शब्द कितने सटीक थे: ‘यह शोरगुल अधिक समय तक नहीं रहेगा, सात दिनों तक रहेगा और सातवें दिन के अंत में शांत हो जाएगा।’ हे प्रभु, शोरगुल शांत हो गया है।”
और इस संदर्भ में, उस अवसर पर, भगवान बुद्ध ने यह गंभीर वचन कहा:--
"असंयमित लोग अपने शब्दों से दूसरों को चोट पहुंचाते हैं।"
जैसे युद्ध में एक हाथी दूसरे हाथी को चीर देता है, जब निर्मल हृदय वाला भिक्षु कठोर शब्दों का उच्चारण सुनता है,
वह उन्हें धैर्यपूर्वक सहन करता है।

9. मैंने ऐसा सुना है। एक बार भगवान बुद्ध राजगृह में, बांस के जंगल में, कलांदिकनिवापा में निवास कर रहे थे।
और जब पूज्य उपसेना, वांगंत के पुत्र, एकांतवास में अपने दिन बिता रहे थे, तो उनके मन में यह विचार आया: "कितना बड़ा लाभ है, कितना बड़ा फायदा है कि मुझे परम बुद्ध के रूप में गुरु प्राप्त हैं, कि मैंने सुचारु शिक्षाओं के अनुशासन में रहते हुए अपना घर त्यागकर तपस्वी जीवन व्यतीत किया है, कि मुझे धर्मात्मा और पुण्य पुरुषों के रूप में पवित्र साथी प्राप्त हैं, कि मैंने नियमों का पालन किया है, कि मैं स्थिर, शांत मन वाला, पापों का नाश करने वाला अर्हत, शक्ति में महान, सामर्थ्य में बलवान हूँ! मेरा जीवन धन्य है, मेरी मृत्यु धन्य है!"
और उस अवसर पर भगवान बुद्ध ने वंगंत के पुत्र पूज्य उपसेन के मन में इस संबंध में जो विचार थे, उन्हें अपने मन से ग्रहण करते हुए यह गंभीर वचन कहा:--
जिसे जीवन कष्ट नहीं देता,

जो मृत्यु के निकट आने पर शोक नहीं करता, यदि ऐसा व्यक्ति दृढ़ निश्चयी हो और निर्वाण प्राप्त कर चुका हो, तो वह दुःख में भी शोकरहित रहता है। शांत मन वाला भिक्षु, जिसने जीवन की लालसा को जड़ से उखाड़ फेंका हो, उसके द्वारा जन्म-जन्म का चक्र समाप्त हो जाता है।
अब उनका पुनर्जन्म नहीं होगा!

10. मैंने ऐसा सुना है। एक बार भगवान बुद्ध अनाथपिंडिका के उद्यान, जेतवन में, सावत्थी में निवास कर रहे थे।
उस समय पूज्य सारिपुत्त भगवान बुद्ध से कुछ ही दूरी पर, पालथी मारकर, शरीर सीधा करके बैठे हुए थे और अपनी स्वयं की शांति की अवस्था का चिंतन कर रहे थे।
और भगवान बुद्ध ने कुछ ही दूरी पर पूज्य सारिपुत्त को पालथी मारकर, शरीर सीधा करके, अपनी शांति की अवस्था का चिंतन करते हुए देखा।
और इस संदर्भ में, उस अवसर पर, भगवान बुद्ध ने यह गंभीर वचन कहा:--
"जिस भिक्षु का मन पूर्णतः शांत हो,
जिसने जीवन की इच्छा को जन्म देने वाले कारक को काट डाला है, उसी ने जन्म-जन्म के क्रम को समाप्त कर दिया है।
वह दुष्ट के बंधनों से मुक्त हो गया है।

अध्याय 5 - सोना थेरा
पाली संस्करण: पाली-अंग्रेजी संस्करण और पाली-देवनागरी संस्करण
1. एक बार भगवान बुद्ध सावत्थी में, जेतवन में, अनाथपिंडिका के उद्यान में निवास कर रहे थे।
उस समय राजा पसेनादि कोसला, देवी मल्लिका के साथ अपने प्रधान महल में आसीन हुए थे।
और राजा पसेनादि कोसल ने देवी मल्लिका से कहा:
"हे मल्लिका, क्या तुम स्वयं से अधिक किसी से प्रेम करती हो?"
"नहीं, महाराज, मैं खुद से बढ़कर किसी से प्यार नहीं करता। और वैसे भी, महाराज, आप भी खुद से बढ़कर किसी से प्यार नहीं करते।"
"मैं भी, हे मल्लिका, खुद से ज्यादा किसी से प्यार नहीं करता।"
राजा पसेनादि कोसल अपने महल से उतरकर भगवान बुद्ध के पास गए और पास आकर उन्हें प्रणाम किया और अलग बैठ गए। बैठे-बैठे उन्होंने भगवान बुद्ध से कहा, "हे प्रभु, अभी मैं देवी मल्लिका के साथ अपने प्रधान महल में गया था और मैंने देवी मल्लिका से पूछा, 'क्या आप अपने से बढ़कर किसी और से प्रेम करती हैं, मल्लिका?' इत्यादि।"
"मैं भी, हे मल्लिका, खुद से ज्यादा किसी से प्यार नहीं करता।"
और इस संदर्भ में, उस अवसर पर, भगवान बुद्ध ने यह गंभीर वचन कहा:--
"जैसे कोई मनुष्य पूरी पृथ्वी का भ्रमण करता है, उसे कहीं भी स्वयं से अधिक प्रेमयोग्य कोई वस्तु नहीं मिलती; इसलिए, क्योंकि स्वयं को सभी लोग इतना प्रेम करते हैं, जो मनुष्य स्वयं से इतना प्रेम करता है, उसे दूसरों को कोई हानि नहीं पहुँचानी चाहिए।"

2. मैंने ऐसा सुना है। एक बार भगवान बुद्ध अनाथपिंडिका के उद्यान, जेतवन में, सावत्थी में निवास कर रहे थे।
उस समय पूज्य आनंद संध्याकाल में अपने एकांत ध्यान से उठकर भगवान बुद्ध के पास गए और उन्हें प्रणाम करके अलग बैठ गए। बैठे-बैठे उन्होंने भगवान बुद्ध से कहा, "हे प्रभु, यह कितना विचित्र है, कितना अद्भुत है कि भगवान बुद्ध की माता जी का देहांत इतना अल्पकाल में हुआ! भगवान बुद्ध के जन्म के सातवें दिन उनकी माता जी का देहांत हो गया और वे तुषित देवों के समूह में पुनर्जन्म लेकर लौटीं।"
"आनंद, बोधिसत्वों की माताओं के साथ भी ऐसा ही होता है; उनका जीवनकाल अल्प होता है और बोधिसत्व के जन्म के सातवें दिन वे मर जाती हैं और तुषिता देवताओं के समूह में पुनर्जन्म लेती हैं।"
और इस संदर्भ में, उस अवसर पर, भगवान बुद्ध ने यह गंभीर वचन कहा:--
"सभी प्राणी जो जन्म लेंगे,
वे सब अपने शरीर छोड़कर चले जाएंगे। ज्ञानी व्यक्ति सभी चीजों के क्षय को समझता है।
पवित्रतापूर्ण जीवन जीने का प्रयास करना चाहिए।

3. मैंने ऐसा सुना है। एक बार भगवान बुद्ध कलंदिकनिवापा में बांस के जंगल में स्थित राजगृह में ठहरे हुए थे।
उस समय राजगृह में सुप्पबुद्ध नाम का एक कुष्ठ रोगी रहता था, जो एक नीच, अकेला और दयनीय प्राणी था। संयोगवश, भगवान बुद्ध उस समय लोगों की एक विशाल सभा से घिरे हुए वहाँ बैठे थे और धर्म का उपदेश दे रहे थे।

कुष्ठ रोगी सुप्पबुद्ध ने दूर से कई लोगों को इकट्ठा देखा, और उन्हें देखकर मन ही मन सोचा, "निःसंदेह उस स्थान पर पौष्टिक और पौष्टिक दोनों प्रकार का भोजन वितरित किया जा रहा होगा। यदि मैं उस सभा स्थल पर जाऊं तो शायद मुझे वहां कुछ पौष्टिक या पौष्टिक भोजन मिल जाए।"

और कुष्ठ रोगी सुप्पबुद्ध सभा स्थल पर गया। उसने भगवान बुद्ध को लोगों की एक बड़ी भीड़ से घिरे हुए, बैठकर उपदेश देते हुए देखा। भगवान बुद्ध को देखकर उसने मन ही मन कहा, "यहाँ न तो कोई भोजन वितरित किया जा रहा है, न ही कोई पौष्टिक भोजन: यहाँ समना गौतम लोगों को उपदेश दे रहे हैं। अगर मैं उपदेश सुनूँ तो क्या होगा?"

और वह वहाँ आदरपूर्वक अलग बैठ गया (मन ही मन कहते हुए): "मैं भी उपदेश सुनूंगा।"

और भगवान बुद्ध ने अपने मन से पूरी सभा के विचारों को ग्रहण करते हुए मन ही मन कहा, "इस स्थान पर कौन इस सिद्धांत को समझ सकता है?" तभी भगवान बुद्ध ने कुष्ठ रोगी सुप्पबुद्ध को सभा के मध्य में बैठे देखा और उन्हें देखकर मन ही मन कहा, "यही वह व्यक्ति है जो इस सिद्धांत को समझ सकता है।"

और कुष्ठ रोगी सुप्पबुद्ध की ओर से, उन्होंने क्रमबद्ध रूप से निम्नलिखित प्रवचन दिए; दान पर प्रवचन, धर्मपरायणता पर प्रवचन और स्वर्ग पर प्रवचन, और उन्होंने बुरी इच्छाओं की महत्वहीनता और नीचता तथा सभी पापों से मुक्ति के लाभ को दर्शाया।

और जब भगवान बुद्ध ने देखा कि कुष्ठ रोगी सुप्पबुद्ध का हृदय सत्य को ग्रहण करने के लिए तैयार, ग्रहणशील, बाधाओं से मुक्त, उदात्त और विश्वासयोग्य है, तो उन्होंने उन्हें बुद्ध द्वारा मूल रूप से खोजे गए सिद्धांत की व्याख्या की और उन्हें दुख के मूल और दुख को दूर करने के मार्ग को स्पष्ट किया।

जिस प्रकार एक शुद्ध और बेदाग कपड़ा आसानी से रंग सोख लेता है, उसी प्रकार कुष्ठ रोगी सुप्पबुद्ध ने उसी स्थान पर, जहाँ वे बैठे थे, शुद्ध और बेदाग 'धर्म की दृष्टि' प्राप्त की, अर्थात् यह ज्ञान कि जिसका भी कोई उद्गम है, उसका अंत भी है।

और कुष्ठ रोगी सुप्पबुद्ध ने, सिद्धांत को समझकर, सिद्धांत को प्राप्त करके, सिद्धांत में लीन होकर, संदेह से मुक्त होकर, दुविधा से मुक्त होकर, गुरु के धर्म में परम विश्वास प्राप्त करके, और किसी और चीज की आवश्यकता न होने पर, अपने आसन से उठकर भगवान बुद्ध के पास गए और निकट आकर भगवान बुद्ध को प्रणाम किया और अलग बैठ गए, और इस प्रकार बैठे हुए उन्होंने भगवान बुद्ध से कहा: "हे प्रभु, हे प्रभु; यह ऐसा ही है जैसे कोई मनुष्य गिरे हुए को उठाए, या छिपे हुए को प्रकट करे, या भटके हुए को मार्ग दिखाए, या अंधकार में दीपक जलाए, ताकि आँखों वाले लोग आकृतियों को देख सकें। ठीक इसी प्रकार भगवान बुद्ध ने अनेक तरीकों से सिद्धांत को स्पष्ट किया है। हे प्रभु, मैं भगवान बुद्ध की, धर्म की और भिक्षुओं के संघ की शरण लेता हूँ। कृपा करके भगवान बुद्ध मुझे स्वीकार करें।" मैं उनका शिष्य हूं; और आज से लेकर जीवन भर मैं उन्हीं की शरण में रहूंगा।"

और कुष्ठ रोगी सुप्पबुद्ध, भगवान बुद्ध के धार्मिक प्रवचनों से प्रेरित, उत्साहित और प्रसन्न होकर, भगवान बुद्ध के वचनों की प्रशंसा करते हुए धन्यवाद दिया। वे अपने आसन से उठे और भगवान बुद्ध को प्रणाम किया, और उनके दाहिनी ओर मुख करके परिक्रमा करते हुए चले गए। फिर ऐसा हुआ कि कुष्ठ रोगी सुप्पबुद्ध को एक जंगली बछड़े ने गिरा दिया और उनकी मृत्यु हो गई।

और बहुत से भिक्षु भगवान बुद्ध के पास गए और पास आकर उन्हें प्रणाम किया और आदरपूर्वक अलग बैठ गए। बैठे-बैठे उन्होंने भगवान बुद्ध से कहा, "हे प्रभु, भगवान बुद्ध द्वारा उपदेशित, प्रेरित, उत्साहित और प्रसन्न किए गए कुष्ठ रोगी सुप्पबुद्ध का निधन हो गया है। उनकी क्या स्थिति है और वे किस अवस्था में पुनर्जन्म लेंगे?"

"हे भिक्षुओं, सुप्पबुद्ध, जो कुष्ठ रोगी थे, एक बुद्धिमान व्यक्ति थे। उन्होंने उच्चतर अवस्था की प्राप्ति के लिए निम्नतर कर्तव्यों का पालन किया। उन्होंने मुझे धर्म संबंधी विवादों से परेशान नहीं किया। हे भिक्षुओं, कुष्ठ रोगी सुप्पबुद्ध ने तीन बंधनों को तोड़कर 'धारा में प्रवेश' किया था, वे दंड की अवस्थाओं के अधीन नहीं थे, मोक्ष के प्रति आश्वस्त थे और 'चार सत्यों' का ज्ञान उनके लिए आधार था।"

ये शब्द कहे जाने के बाद, एक भिक्षु ने भगवान बुद्ध से कहा: "हे प्रभु, इसका मुख्य कारण क्या था, हे प्रभु, इसका समवर्ती कारण क्या था कि कुष्ठ रोगी सुप्पबुद्ध (इस जन्म में) एक नीच, निर्धन और दयनीय प्राणी था?"

हे भिक्षुओं, पिछले जन्म में सुप्पबुद्ध नामक कुष्ठ रोगी इसी राजगृह नगर में एक धनी व्यक्ति का पुत्र था। एक उद्यान से गुजरते समय उसने पच्चेकबुद्ध, तगरसिखी को भिक्षा मांगने नगर में प्रवेश करते देखा। उसे देखकर उसने मन ही मन कहा, "यह कुष्ठ रोगी यहाँ क्या कर रहा है?" और उसने उस पर थूककर वहाँ से चला गया। इस कर्म के फलस्वरूप उसे अनेक वर्षों, सैकड़ों वर्षों, हजारों वर्षों, लाखों वर्षों तक नरक में धिक्कारा गया। इस कर्म के फलस्वरूप वह अब इसी राजगृह नगर में एक दीन, निर्धन और दयनीय प्राणी के रूप में रह रहा है। परन्तु अब सिद्ध पुरुष द्वारा ज्ञात कराए गए धर्म के अनुशासन से उसने धर्म, उपदेश, उच्च ज्ञान, आत्म-बलिदान और बुद्धि को अपना लिया है। सिद्ध पुरुष द्वारा प्रतिपादित धर्म के माध्यम से उसने धर्म, उपदेश और उच्च ज्ञान को अपना लिया है। ज्ञान, आत्म-बलिदान और बुद्धि से परिपूर्ण, शरीर के विलीन होने पर, मृत्यु के बाद, वह स्वर्ग के आनंदमय राज्य में जन्म लेता है, जहाँ वह तावतिंसा देवताओं का साथी होता है। वहाँ वह यश और सौंदर्य में अन्य सभी देवताओं को भी पीछे छोड़ देता है।

और इस संदर्भ में, उस अवसर पर, भगवान बुद्ध ने यह गंभीर वचन कहा:--

"जिसके पास अंतर्दृष्टि हो, वह मौजूदा कठिनाइयों से जूझने का प्रयास करे; बुद्धिमान व्यक्ति को इस संसार में बुराई को दूर भगाना चाहिए।"

4. मैंने ऐसा सुना है। एक बार भगवान बुद्ध अनाथपिंडिका के उद्यान, जेतवन में, सावत्थी में निवास कर रहे थे।
उस समय सावत्थी और जेतवन के बीच कुछ युवक मछलियों के साथ दुर्व्यवहार कर रहे थे।
और भगवान बुद्ध ने सुबह के समय वस्त्र धारण करके, भिक्षापात्र और वस्त्र लेकर सावत्थी में भिक्षा मांगने के लिए प्रवेश किया। सावत्थी और जेतवन के बीच उन्होंने कुछ युवकों को मछलियों के साथ दुर्व्यवहार करते देखा। उन्हें देखकर वे उनके पास गए और निकट आकर उनसे बोले, "हे युवकों, क्या तुम स्वयं पीड़ा से भयभीत हो? क्या पीड़ा तुम्हें घृणित लगती है?"
"हाँ, प्रभु, हम दर्द से डरते हैं, दर्द हमें घृणित लगता है।"
और इस संदर्भ में, उस अवसर पर, भगवान बुद्ध ने यह गंभीर वचन कहा:--
यदि आपको पीड़ा से घृणा है, तो सार्वजनिक रूप से या निजी तौर पर कोई बुरा काम न करें।
यदि तुम कोई बुरा काम करो, या अभी करो,
दर्द आदि से बचने का कोई रास्ता नहीं है।"

5. मैंने ऐसा सुना है। एक बार भगवान बुद्ध श्रावस्ती में पूर्वी मठ में मिगारमाता के मंडप में निवास कर रहे थे।
उस समय, उपोसथ द्वितीय दिन, भगवान बुद्ध भिक्षुओं से घिरे बैठे थे। रात के पहले पहर में, पूज्य आनंद अपने आसन से उठे और अपनी कमीज़ को केवल एक कंधे पर समेटकर (दूसरे कंधे को खुला छोड़कर) भगवान बुद्ध के पास गए और हाथ जोड़कर उनसे कहा, "हे प्रभु, रात आगे बढ़ रही है, पहला पहर बीत रहा है, भिक्षुओं ने बहुत प्रतीक्षा की है, कृपा करके भगवान बुद्ध भिक्षुओं को विधिशास्त्र का पाठ करें।"
ये शब्द कहे जाने के बाद, भगवान बुद्ध मौन रहे।

दूसरी बार, जब रात बढ़ती जा रही थी और मध्य पहर बीत रहा था, तो पूज्य आनंद अपने आसन से उठे और केवल एक कंधे पर अपनी कमीज को ठीक करते हुए, अपने जुड़े हुए हाथों को फैलाकर भगवान बुद्ध से कहा: "हे प्रभु, रात बढ़ती जा रही है, मध्य पहर बीत रहा है, भिक्षुओं ने लंबे समय तक प्रतीक्षा की है, कृपया भगवान बुद्ध भिक्षुओं को विधिशास्त्र का पाठ करें।"
दूसरी बार भगवान बुद्ध मौन रहे।
तीसरी बार, रात ढलते समय, जब अंतिम पहर बीत रहा था और भोर हो रही थी, और रात काफी बीत चुकी थी, पूज्य आनंद अपने आसन से उठे और केवल एक कंधे पर अपना कुर्ता ठीक करते हुए, अपने हाथ जोड़कर भगवान बुद्ध से कहा: "हे प्रभु, रात ढल रही है, अंतिम पहर बीत रहा है, भोर हो रही है, रात काफी बीत चुकी है, भिक्षुओं ने लंबे समय तक प्रतीक्षा की है, कृपया भगवान बुद्ध भिक्षुओं को विधि पाठ सुनाएं।"
"आनंदा, विधानसभा दूषित है।"
और आदरणीय महा मोग्गलाना के मन में यह विचार आया: "भगवान बुद्ध ने किस व्यक्ति के संदर्भ में कहा था: 'आनंद, सभा अपवित्र हो गई है'?"
और पूज्य महा मोग्गलाना ने अपने मन से उन सभी भिक्षुओं के मन में चल रहे विचारों को ग्रहण कर लिया।
और पूज्य महा मोग्गलाना ने भिक्षुओं की सभा के बीच एक ऐसे व्यक्ति को देखा जो अधर्मी, स्वभाव से पापी, अपवित्र, अस्थिर प्रवृत्ति वाला, गुप्त कर्म करने वाला, समन होते हुए भी समन नहीं, पवित्र ब्रह्मचर्य जीवन जीने का दावा करते हुए भी उसका पालन नहीं कर रहा, भीतर से दूषित, कामवासना से भरा हुआ, कूड़े का ढेर था; और जब उन्होंने उसे देखा तो वे अपने आसन से उठे और उस व्यक्ति के पास जाकर उससे बोले: "उठो, मित्र, भगवान बुद्ध ने तुम्हें देख लिया है, भिक्षुओं के बीच यहाँ तुम्हारे लिए कोई स्थान नहीं है।"
और वह व्यक्ति चुप रहा।
दूसरी बार पूज्य महा मोग्गलाना ने कहा: "उठो, मित्र, भगवान बुद्ध ने तुम्हें देख लिया है, यह जगह तुम्हारे लिए नहीं है, यहाँ भिक्षुओं के साथ।"
दूसरी बार भी वह व्यक्ति चुप रहा।
तीसरी बार पूज्य महा मोग्गलाना ने कहा: "उठो, मित्र, भगवान बुद्ध ने तुम्हें देख लिया है, यह जगह तुम्हारे लिए नहीं है, यहाँ भिक्षुओं के साथ।"
तीसरी बार भी वह व्यक्ति चुप रहा।

और पूज्य मोग्गलाना ने उसका हाथ पकड़कर उसे भवन के द्वार के बाहर खड़ा कर दिया और कुंडी कसकर बंद करके भगवान बुद्ध के पास जाकर कहा, "हे प्रभु, मैंने उस व्यक्ति को हटा दिया है। अब सभा अपवित्रता से मुक्त है। कृपया भगवान बुद्ध भिक्षुओं को विधिशास्त्र का पाठ करें।"
"कितना अजीब है! मोग्गलाना, कितना अद्भुत है! वह घमंडी आदमी उस जगह से आगे नहीं जाना चाहता जहाँ तक तुम उसे बांह पकड़कर ले गए थे।"
तब भगवान बुद्ध ने भिक्षुओं को अपने पास बुलाया और कहा: "हे भिक्षुओं, अब से मैं उपोसथा का पालन नहीं करूँगा, मैं विधि पाठ नहीं करूँगा। तुम भी अब से उपोसथा का पालन करो और उपदेशों की व्याख्या करो। हे भिक्षुओं, यह उचित अवसर नहीं है कि यह समझाया जाए कि सिद्ध पुरुष उपोसथा का पालन क्यों नहीं करेगा, विधि पाठ क्यों नहीं करेगा।"
हे भिक्षुओं, विशाल सागर में आठ विचित्र और अद्भुत गुण हैं, जिन्हें देखकर असुर विशाल सागर में आनंदित होते हैं।

ये आठ चीजें क्या हैं?
1. हे भिक्षुओं, महान सागर धीरे-धीरे ढलानों की एक श्रृंखला से गहराता जाता है; इसकी गुफा जैसी गहराइयों तक पहुँच क्रमिक है; इसमें किसी चट्टान की तरह अचानक गिरावट नहीं है।
हे भिक्षुओं, जैसे महान सागर धीरे-धीरे गहराता जाता है, [जैसा कि ऊपर बताया गया है। अनुवाद]; यह महान सागर की पहली विचित्र और अद्भुत स्थिति है, जिसे असुरों द्वारा देखे जाने पर वे महान सागर में आनंदित होते हैं।
2. इसके अलावा, हे भिक्षुओं, महान सागर स्वभाव से स्थिर है, यह अपनी सीमाओं से आगे नहीं बढ़ता।
इसके अतिरिक्त, हे भिक्षुओं, जिस प्रकार विशाल सागर स्वभाव से स्थिर है और अपनी सीमाओं से अधिक नहीं फैलता, यह दूसरी विचित्र और अद्भुत स्थिति है, जिसे असुरों द्वारा देखे जाने पर वे प्रसन्न होते हैं।
3. इसके अलावा, हे भिक्षुओं, महासागर का शवों से कोई संबंध नहीं है, क्योंकि जब महासागर में शव होते हैं, तो वह उन्हें किनारे पर फेंक देता है, उन्हें भूमि पर डाल देता है।
इसके अतिरिक्त, हे भिक्षुओं, जैसा कि महा सागर का शवों आदि से कोई संबंध नहीं है [जैसा कि ऊपर बताया गया है। अनुवाद]; यह तीसरी विचित्र और अद्भुत स्थिति है, जिसे असुरों द्वारा देखे जाने पर वे महा सागर में आनंदित होते हैं।
4. इसके अलावा, हे भिक्षुओं, वे बड़ी नदियाँ, गंगा, यमुना, अचिरावती, माही, जब महा सागर में पहुँचती हैं, तो अपने प्राचीन नाम और उत्पत्ति को त्याग देती हैं और केवल महा सागर के रूप में जानी जाती हैं।
इसके अतिरिक्त, हे भिक्षुओं, जैसे वे बड़ी नदियाँ आदि [जैसा ऊपर बताया गया है। अनुवाद]; यह महा सागर की चौथी विचित्र और अद्भुत स्थिति है, जिसे देखकर असुर महा सागर में आनंदित होते हैं।

5. इसके अलावा, हे भिक्षुओं, यद्यपि संसार की सभी नदियाँ और आकाश से गिरने वाली सभी वर्षाएँ महा सागर में समाहित होती हैं, फिर भी महा सागर में जल की कोई कमी या अधिकता दिखाई नहीं देती।
इसके अतिरिक्त, हे भिक्षुओं, यद्यपि संसार की सभी नदियाँ आदि [जैसा ऊपर बताया गया है]; यह महा सागर की पाँचवीं विचित्र और अद्भुत स्थिति है, जिसे देखकर असुर महा सागर में आनंदित होते हैं।
6. इसके अलावा, हे भिक्षुओं, महान सागर का एक ही स्वाद है, नमक का स्वाद।
और हे भिक्षुओं, जैसे विशाल सागर का केवल एक ही स्वाद होता है, नमक का स्वाद: यही छठी विचित्र और अद्भुत स्थिति है, जिसे देखकर असुर विशाल सागर में आनंदित होते हैं।
7. इसके अलावा, हे भिक्षुओं, महान सागर रत्नों और बहुमूल्य वस्तुओं से भरा हुआ है, जिनमें मोती, पन्ना, नीलमणि, सीप, पत्थर, मूंगा, चांदी, सोना, माणिक और खट्टी आंखें जैसी कई प्रकार की वस्तुएं शामिल हैं।
हे भिक्षुओं, जैसा कि ऊपर वर्णित है, महासागर रत्नों आदि से भरा हुआ है; यह सातवीं विचित्र और अद्भुत स्थिति है, जिसे देखकर असुर महासागर में आनंदित होते हैं।
8. इसके अलावा, हे भिक्षुओं, विशाल सागर असंख्य जीवों का निवास स्थान है; अर्थात्, वे सभी विशालकाय मछलियाँ जो 'सात पर्वतों' के बीच के महासागरों में निवास करती हैं, त्रिशूल, सर्प राजा, दिव्य संगीतकार और वे जीव जो एक, दो, तीन, चार और पाँच सौ मील लंबे हैं।
और हे भिक्षुओं, जैसा कि विशाल सागर असंख्य जीवों आदि का निवास स्थान है [जैसा ऊपर बताया गया है। अनुवाद]; यह आठवीं विचित्र और अद्भुत स्थिति है, जिसे देखकर असुर विशाल सागर में आनंदित होते हैं।
फिर भी, हे भिक्षुओं, धर्म के अनुशासन में आठ अद्भुत और आश्चर्यजनक स्थितियाँ हैं, जिन्हें देखकर भिक्षु धर्म के अनुशासन में आनंदित होते हैं।
ये आठ चीजें क्या हैं?
1. हे भिक्षुओं, जिस प्रकार विशाल सागर धीरे-धीरे ढलानों के क्रम से गहराता जाता है और उसकी असीम गहराई तक पहुँचने का मार्ग क्रमिक होता है, तथा उसमें अचानक कोई खाई नहीं होती, ठीक उसी प्रकार, हे भिक्षुओं, धर्म का अभ्यास है। प्रशिक्षण क्रमिक

होता है, कर्तव्यों का नियमित क्रम होता है, प्रगति धीरे-धीरे होती है; उच्चतर ज्ञान में अचानक कोई प्राप्ति नहीं होती। धर्म के अभ्यास की यह पहली अद्भुत और आश्चर्यजनक विशेषता है, जिसे जानकर भिक्षु धर्म के अभ्यास में आनंदित होते हैं।

2. हे भिक्षुओं, जिस प्रकार महान सागर स्वभाव से स्थिर है और अपनी सीमाओं से अधिक नहीं बढ़ता, उसी प्रकार, हे भिक्षुओं, मेरे शिष्यों, अपने अस्तित्व के लिए भी, मेरे द्वारा शिष्यों के लिए निर्धारित नियमों का उल्लंघन न करो।

यह धर्म के अनुशासन में पाई जाने वाली दूसरी विचित्र और अद्भुत स्थिति है, जिसे जानकर भिक्षु धर्म के अनुशासन में आनंदित होते हैं।

3. हे भिक्षुओं, जिस प्रकार महा सागर शवों से कोई संबंध नहीं रखता, और जब महा सागर में कोई शव होता है, तो वह उसे किनारे पर फेंक देता है, ठीक उसी प्रकार, हे भिक्षुओं, भिक्षु संघ अधर्मी, स्वभाव से दुष्ट, अपवित्र, अस्थिर, गुप्त कर्म करने वाले, स्वयं को समन कहने वाले पर समन न होने वाले, स्वयं को ब्राह्मण कहने वाले पर ब्राह्मण न होने वाले, भीतर से दूषित, कामवासना से भरे, कूड़े के ढेर जैसे व्यक्ति से कोई संबंध नहीं रखता—ऐसे व्यक्ति को सभा में बुलाते ही वह तुरंत बाहर निकाल देता है। यदि ऐसा व्यक्ति सभा के बीच में बैठता है, तो वह सभा से और सभा उससे दूर हो जाती है।

हे भिक्षुओं, जैसा कि ऊपर दिए गए अनुवाद में बताया गया है, जो व्यक्ति अधर्मी है, वह सभा से दूर है और सभा उससे दूर है; यह धर्म के अनुशासन में तीसरी विचित्र और आश्चर्यजनक स्थिति है, जिसे जानकर भिक्षु धर्म के अनुशासन में आनंदित होते हैं।

4. हे भिक्षुओं, जिस प्रकार गंगा, यमुना, अचिरवती, सरभू, माही जैसी महान नदियाँ जब महा सागर में पहुँचती हैं, तो अपने पुराने नाम और वंश को त्यागकर केवल एक ही नाम 'महा सागर' धारण करती हैं, उसी प्रकार हे भिक्षुओं, क्षत्रिय, ब्राह्मण, वेस, शुद्ध, चारों जातियाँ, पूर्ण पुरुष द्वारा सिखाए गए धर्म के अनुशासन के अनुसार, अपने घर छोड़कर बेघर अवस्था में चली जाती हैं, अपने पुराने नाम और वंश को पीछे छोड़ देती हैं, और साक्य वंश के पुत्र, समन कहलाती हैं।

हे भिक्षुओं, जैसा कि ऊपर वर्णित है, चारों जातियों आदि को समना, शाक्य वंश के पुत्र कहा जाता है। यह विधि के अनुशासन में चौथी विचित्र और अद्भुत स्थिति है, जिसे जानकर भिक्षु विधि के अनुशासन में आनंदित होते हैं।

5. हे भिक्षुओं, जिस प्रकार (यद्यपि संसार की समस्त नदियाँ और आकाश से बरसने वाली समस्त वर्षाएँ महा सागर में समाहित होती हैं) महा सागर में जल की कोई कमी या अधिकता नहीं होती, उसी प्रकार, हे भिक्षुओं, यदि असंख्य भिक्षु निर्वाण तत्व के माध्यम से उस निर्वात अवस्था को प्राप्त कर लें जिसमें निर्वाण के गुणों का कोई अंश शेष न रहे, तो निर्वाण तत्व में कोई कमी या अधिकता नहीं होती।

हे भिक्षुओं, असंख्य भिक्षुओं [जैसा कि ऊपर बताया गया है] आदि, निर्वाण तत्व में कोई कमी या अधिकता नहीं देखी जा सकती; हे भिक्षुओं, यह पाँचवीं विचित्र और अद्भुत अवस्था है, जिसे जानकर भिक्षु धर्म के अनुशासन में आनंदित होते हैं।

6. हे भिक्षुओं, जिस प्रकार विशाल सागर का केवल एक ही स्वाद होता है, नमक का स्वाद, उसी प्रकार, हे भिक्षुओं, इस सिद्धांत का भी केवल एक ही स्वाद होता है, मुक्ति का स्वाद; और हे भिक्षुओं, इस सिद्धांत का भी केवल एक ही स्वाद होता है, मुक्ति का स्वाद; यही वह छठा और अद्भुत पहलू है जिसे जानकर भिक्षु धर्म के अनुशासन में आनंदित होते हैं।

7. हे भिक्षुओं, जिस प्रकार महान सागर अनेक रत्नों आदि से भरा है, उसी प्रकार, हे भिक्षुओं, यह सिद्धांत अनेक रत्नों और बहुमूल्य वस्तुओं से भरा है; चार 'गंभीर ध्यान' और 'महान प्रयास', चार 'अलौकिक शक्ति के घटक', पाँच 'नैतिक गुण', पाँच 'बल', पाँच 'परम ज्ञान के घटक' और 'अष्टांगिक मार्ग'।

और चूंकि यह सिद्धांत अनेक रत्नों आदि से परिपूर्ण है [जैसा कि ऊपर अनुवाद है] और 'आठ गुना श्रेष्ठ मार्ग'; यह धर्म के अनुशासन में सातवीं विचित्र और अद्भुत स्थिति है, जिसे जानकर भिक्षु धर्म के अनुशासन में आनंदित होते हैं।

8. हे भिक्षुओं, जिस प्रकार विशाल सागर अनेक जीवों आदि का निवास स्थान है, उसी प्रकार, हे भिक्षुओं, धर्म के इस अनुशासन में अनेक सदस्य हैं: सोतापन्न1 जिसने सोतापन्न के फल का अहसास प्राप्त किया है, सकदगामिनी2 जिसने सकदगामिनी के फल का अहसास प्राप्त किया है, अनगामिनी1 जिसने अनगामिनी के फल का अहसास प्राप्त किया है, और अरहत2 जिसने अरहतत्व प्राप्त किया है।

हे भिक्षुओं, धर्म के इस अनुशासन में अनेक अंग आदि हैं [जैसा ऊपर बताया गया है]। यह धर्म के अनुशासन की आठवीं अवस्था है, जिसे जानकर भिक्षु धर्म के अनुशासन में आनंदित होते हैं। हे भिक्षुओं, ये धर्म के अनुशासन की आठ विचित्र और अद्भुत अवस्थाएँ हैं, जिन्हें जानकर भिक्षु उसमें आनंदित होते हैं।

और इस संदर्भ में, उस अवसर पर, भगवान बुद्ध ने यह गंभीर वचन कहा:--

अच्छी छत वाले घर पर बारिश मूसलाधार बरस रही है
यह विरलन उस घर पर नहीं पड़ता जिसकी छत नहीं है, इसलिए जो बंद है उसे खोल दो।
और उस पर बारिश नहीं होगी।3

6. मैंने ऐसा सुना है। एक बार भगवान बुद्ध अनाथपिंडिका के उद्यान, जेतवन में, सावत्थी में निवास कर रहे थे।

उस समय पूज्य महाकच्चना अवंती देश में, कुराराघरा में स्थित चट्टान नामक पहाड़ी पर निवास कर रहे थे, और उस समय गृहस्थ शिष्य सोना कोटिकन्ना पूज्य महाकच्चना के सेवक थे।

एकांत के आनंद में डूबे हुए, गृहस्थ शिष्य सोना कोटिकन्ना के मन में यह विचार आया: "पूजनीय महाकच्चना द्वारा प्रतिपादित सिद्धांत के अनुसार, घर में रहने वाले व्यक्ति के लिए पूर्ण संतुष्टि, पूर्ण पवित्रता और समस्त प्रकाशमान पूर्णता के साथ उच्चतर जीवन जीना आसान नहीं है। यदि मैं अपना सिर और दाढ़ी मुंडवा लूँ, पीला वस्त्र धारण कर लूँ और घर छोड़कर संन्यासी जीवन व्यतीत करने चला जाऊँ तो क्या होगा?"
और गृहस्थ शिष्य सोना कोटिकन्ना, पूज्य महाकच्चना के पास गए और उनके निकट आकर उन्हें प्रणाम किया और अलग बैठ गए। बैठे-बैठे उन्होंने पूज्य महाकच्चना से कहा, "हे प्रभु, अभी जब मैं एकांत के आनंद का अनुभव कर रहा था, तभी मेरे मन में यह विचार आया: 'उपरोक्त सिद्धांत आदि के अनुसार...'"
"हे महाकच्चना भगवान, कृपा करके मुझे संसार का त्याग करने वालों के संघ में शामिल कर लें।"
ये शब्द कहे जाने के बाद, पूज्य महाकच्चना ने गृहस्थ शिष्य सोना कोटिकन्ना से कहा, "हे सोना, जीवन भर उच्चतर जीवन व्यतीत करना, दिन में एक बार भोजन करना और अलग सोना कितना कठिन है। हे सोना, मैं तुमसे प्रार्थना करता हूँ कि तुम वर्तमान में गृहस्थ अवस्था में रहो, बुद्धों के उपदेशों का पालन करो, दिन में एक बार भोजन करो और अलग सोओ।"
और गृहस्थ शिष्य सोना कोटिकन्ना के मन में तपस्वी जीवन के प्रति जो आकर्षण था, वह शांत हो गया।
दूसरी बार, जब गृहस्थ शिष्य सोना कोटिकन्ना एकांत के आनंद में डूबे हुए थे, तब उनके मन में यह विचार आया: "ऊपर दिए गए सिद्धांत आदि के अनुसार: क्या होगा यदि मैं अपने घर से निकलकर संन्यासी अवस्था में चला जाऊं?"
दूसरी बार पूज्य महाकच्चना ने कहा: "हे सोना, यह कठिन है, इत्यादि [जैसा ऊपर है। अनुवाद]।"

तीसरी बार, जब गृहस्थ शिष्य सोना कोटिकन्ना आनंद का अनुभव कर रहे थे, आदि। [जैसा ऊपर बताया गया है। अनुवाद]
"हे महाकच्चना भगवान, कृपा करके मुझे संसार का त्याग करने वालों के संघ में शामिल कर लें।"
और पूज्य महाकच्चना ने गृहस्थ शिष्य सना कोटिकन्ना को संसार का त्याग करने वालों के संघ में शामिल कर लिया।
उस समय अवंती देश के दक्षिणी जिलों में भिक्षुओं की संख्या बहुत कम थी।
तीन वर्षों के अंत में, पूज्य महाकच्चना ने बड़ी कठिनाई और परेशानी से, इधर-उधर से भिक्षुओं को एकत्रित करके, दस भिक्षुओं का एक संघ गठित करने में सफलता प्राप्त की। और पूज्य सोना को संघ के उच्च पदों में प्रवेश दिया गया।
जब पूज्य सोना वर्षा ऋतु एकांतवास में बिता रहे थे, तब उनके मन में यह विचार आया: "मैंने भगवान बुद्ध को प्रत्यक्ष रूप से नहीं देखा है, परन्तु मैंने सुना है कि वे अमुक हैं। यदि मेरे गुरु अनुमति दें, तो मैं जाकर उस परम पूज्य (भगवान बुद्ध), उस संत, उस सर्वोच्च बुद्ध के दर्शन करूंगा।"
और पूज्य सोना संध्याकाल में अपने एकांत ध्यान से उठकर पूज्य महाकच्चना के पास गए और उनके पास आकर उन्हें प्रणाम किया और अलग बैठ गए। बैठे-बैठे पूज्य सोना ने उनसे कहा, "हे प्रभु, वर्षा ऋतु में एकांतवास करते समय मेरे मन में यह विचार आया: 'मैंने भगवान बुद्ध के दर्शन नहीं किए हैं। मैं जाकर उनके दर्शन करूंगा... सर्वोच्च बुद्ध के दर्शन करूंगा।'"
"यह अच्छा है, सोना, यह अच्छा है; जाओ और परम पूज्य (भगवान बुद्ध), उस संत, परम बुद्ध के दर्शन करो। तुम पवित्र, कृपालु, आनंद के दाता, जिनकी इंद्रियाँ शांत हैं, जिनकी आत्मा विश्राम में है; जिन्होंने परम आत्म-विजय प्राप्त की है, - वीर, वश में, संरक्षित, जिनकी इच्छाएँ शांत हैं, उन्हें देखोगे; और जब तुम उनके दर्शन करो, तो मेरे नाम से उनके चरणों में प्रणाम करो और कहो: "हे मेरे स्वामी, आदरणीय महाकच्चना परम पूज्य (भगवान बुद्ध) के चरणों में प्रणाम करते हुए सिर झुकाते हैं और पूछते हैं, 'क्या उन्हें कोई मामूली बीमारी है, क्या वे शारीरिक थकान से मुक्त हैं, क्या वे बलवान, मजबूत और स्वस्थ हैं'।"
“ऐसा ही हो,” पूज्य सोना ने कहा और पूज्य महाकच्चना के शब्दों की प्रशंसा करते हुए धन्यवाद दिया। उन्होंने अपने विश्राम स्थल को व्यवस्थित किया और भिक्षापात्र तथा वस्त्र लेकर सावत्थी की ओर प्रस्थान किया। स्थान-स्थान भटकते हुए वे सावत्थी में स्थित अनाथपिंडिका के उद्यान, जेतवन पहुँचे, जहाँ भगवान बुद्ध निवास करते थे। वहाँ पहुँचकर उन्होंने भगवान बुद्ध को प्रणाम किया और एकांत में बैठ गए। बैठे-बैठे उन्होंने भगवान बुद्ध से कहा, “मेरे स्वामी पूछते हैं कि क्या आपको कोई मामूली बीमारी है, इत्यादि।”
"हे भिक्षु, मुझे विश्वास है कि तुम कुशल मंगल हो, जीवनयापन करने में सक्षम हो, तुमने अपनी यात्रा कम थकान के साथ पूरी की है, और भिक्षा मांगने में तुम थके नहीं हो।"
"हे परम पूज्य (भगवान बुद्ध), मैं स्वस्थ हूँ, मैं जीवनयापन करने में सक्षम हूँ, मैंने कम थकान के साथ यात्रा पूरी की है, मैंने भिक्षा की खोज में स्वयं को नहीं थकाया है।"
और भगवान बुद्ध ने पूज्य आनंद को अपने पास बुलाया और कहा: "आनंद, इस नए आए भिक्षु के लिए एक विश्राम स्थल तैयार करो।"
और पूज्य आनंद के मन में यह विचार आया: "चूंकि भगवान बुद्ध ने मुझे इस नए आए भिक्षु के लिए विश्राम स्थल तैयार करने का आदेश दिया है, इसलिए भगवान बुद्ध पूज्य सोना के साथ एकांत में रहना चाहते हैं"; और उन्होंने भगवान बुद्ध के निवास वाले मठ में पूज्य सोना के लिए विश्राम स्थल तैयार किया। और भगवान बुद्ध ने रात का अधिकांश समय खुले में बैठकर बिताया, अपने चरण धोए और मठ में प्रवेश किया। और पूज्य सोना ने भी रात का अधिकांश समय खुले में बैठकर बिताया, अपने चरण धोए और मठ में

प्रवेश किया। और भगवान बुद्ध सुबह उठकर पूज्य सोना को अपने पास बुलाकर बोले: "यह उपदेश इतना स्पष्ट हो जाए कि आप इसे भिक्षुओं को सुना सकें।"1
"ऐसा ही हो", पूज्य सोना ने भगवान बुद्ध की बात से सहमति जताते हुए कहा और उन्होंने 'अत्थक' के सभी सोलह अध्यायों का पाठ किया।
और आदरणीय सोना के पाठ के समापन पर, भगवान बुद्ध ने अपनी प्रसन्नता व्यक्त करते हुए कहा: "हे भिक्षु, उत्तम! अट्ठक के वे सोलह अध्याय आपने भली-भांति समझ लिए हैं, उन पर गहन चिंतन किया है और उन्हें आत्मसात कर लिया है। आप मधुर, स्पष्ट और दोषरहित वाणी से संपन्न हैं और बातों का अर्थ समझाने में सक्षम हैं। आपको दीक्षा लिए हुए कितने वर्ष हो गए हैं?"
"एक साल, प्रभु।"
"हे भिक्षु, आपने इसमें इतनी देर क्यों की?"
"हे प्रभु, मैंने बहुत समय से इच्छाओं की निरर्थकता देखी है; इसके अलावा गृहस्थ का जीवन कामों और अनेक चिंताओं से भरा रहता है।"
और इस संदर्भ में, उस अवसर पर, भगवान बुद्ध ने यह गंभीर वचन कहा:
जिसने सांसारिक जीवन की बुराइयों को देख लिया है,
जिसने सत्य को समझ लिया है और उपाधि से मुक्त है,2; जिसने मार्ग पर चलना शुरू कर दिया है, वह बुराई में आनंद नहीं लेता।
पवित्र हृदय वाले को पाप में कोई आनंद नहीं मिलता।

7. मैंने ऐसा सुना है। एक बार भगवान बुद्ध अनाथपिंडिका के उद्यान, जेतवन में, सावत्थी में निवास कर रहे थे।
उस समय पूज्य कंखारवता भगवान बुद्ध से कुछ ही दूरी पर, पालथी मारकर, शरीर सीधा करके बैठे हुए थे और अपनी पवित्रता और संदेह से मुक्ति की स्थिति पर चिंतन कर रहे थे।
और भगवान बुद्ध ने पूज्य कंखारेवत को पास में ही पालथी मारकर, शरीर सीधा करके बैठे हुए, अपनी पवित्रता और संदेह से मुक्ति की अवस्था का चिंतन करते हुए देखा।
और इस संदर्भ में, उस अवसर पर, भगवान बुद्ध ने यह गंभीर वचन कहा:
"वे सभी ध्यानमग्न, उत्साही संत संदेह करते हैं,
चाहे इस दुनिया में हो या अगली दुनिया में, चाहे स्वयं द्वारा व्यक्त किया गया हो या दूसरों द्वारा,
वे ही हैं जो उच्चतर जीवन जीते हैं।

8. मैंने ऐसा सुना है। एक बार भगवान बुद्ध राजगृह में, बांस के जंगल में, कलांदकनिवापा में निवास कर रहे थे।
उस समय पूज्य आनंद, उपोसथ दिवस होने के कारण, दोपहर के समय वस्त्र धारण करके और अपना भिक्षापात्र और वस्त्र लेकर भिक्षा मांगने के लिए राजगृह में प्रवेश किया।
और देवदत्त ने राजगृह में पूज्य आनंद को भिक्षा मांगते हुए देखा और जब उसने उन्हें देखा तो वह उनके पास गया और उनके निकट आकर उनसे कहा: "आज से मैं उपोसथ दिवस मनाऊंगा और भगवान बुद्ध या भिक्षुओं के संप्रदाय का संदर्भ लिए बिना संघ का कार्य करूंगा।"
और पूज्य आनंद ने राजगृह में परिक्रमा करने और भोजन समाप्त करने के बाद भगवान बुद्ध के पास जाकर उन्हें प्रणाम किया और अलग बैठ गए। इस प्रकार बैठे हुए उन्होंने भगवान बुद्ध से कहा, "हे प्रभु, अभी-अभी मैंने सुबह के समय वस्त्र धारण करके और भिक्षापात्र एवं वस्त्र लेकर भिक्षा मांगने के लिए राजगृह में प्रवेश किया था।"
और देवदत्त ने जब मुझे राजगृह में चक्कर लगाते देखा तो वह मेरे पास आया और बोला: "आज से मैं उपोसथा दिवस मनाऊंगा, इत्यादि [जैसा ऊपर बताया गया है। अनुवाद]।"
आज, हे प्रभु, देवदत्त सभा भंग कर देंगे और उपोसथा दिवस मनाएंगे तथा स्वयं सभा का कार्य आगे बढ़ाएंगे।
और इस संदर्भ में, उस अवसर पर, भगवान बुद्ध ने यह गंभीर वचन कहा:
"अच्छे लोगों के लिए अच्छा करना आसान होता है।"
अच्छे लोगों के लिए बुराई करना कठिन है, बुरे लोगों के लिए बुराई करना आसान है।
संत के लिए बुराई करना कठिन है।

9. मैंने ऐसा सुना है। एक बार भगवान बुद्ध अपने बहुत से भिक्षुओं के साथ कोसल देश में अकेले घूम रहे थे।
उस समय भगवान बुद्ध से कुछ ही दूरी पर कुछ युवक शोर मचा रहे थे। भगवान बुद्ध ने उन युवकों को शोर मचाते हुए देखा।
और इस संदर्भ में, उस अवसर पर भगवान बुद्ध ने यह गंभीर वचन कहा:
"वाक्पटुता के धनी व्यक्ति के चतुर शब्द भी भ्रमित कर देते हैं। वे अपने मुंह जितना चाहें उतना खोलते हैं। उन्हें नहीं पता कि वे किसके द्वारा निर्देशित हैं।"1

10. मैंने ऐसा सुना है। एक बार भगवान बुद्ध अनाथपिंडिका के उद्यान, जेतवन में, सावत्थी में निवास कर रहे थे।
उस समय पूज्य चुलपंथक भगवान बुद्ध से कुछ ही दूरी पर, पालथी मारकर, शरीर सीधा करके बैठे थे और स्मृति को सीधे अपने सामने रखे हुए थे।
और भगवान बुद्ध ने पूज्य चुलपंथक को कुछ ही दूरी पर पालथी मारकर, शरीर सीधा करके, स्मृति को सीधे अपने सामने रखते हुए बैठे देखा।
और इस संदर्भ में, उस अवसर पर, भगवान बुद्ध ने यह गंभीर वचन कहा:
वह भिक्षु जो खड़ा हो, बैठा हो या लेटा हो,
इस प्रकार, जो व्यक्ति अपने शरीर और मन को एकाग्र करके स्मृति पर ध्यान केंद्रित करता है, उसे 'क्रमिक लाभ' प्राप्त होंगे। और जो व्यक्ति 'क्रमिक लाभ' प्राप्त करता है...
मृत्यु के राजा को दर्शन नहीं होंगे।

अध्याय 6 - जक्कन्ध
पाली संस्करण: पाली-अंग्रेजी संस्करण और पाली-देवनागरी संस्करण
1. मैंने ऐसा सुना है। एक बार भगवान बुद्ध वैशाली में महावन के पगोडा हॉल में निवास कर रहे थे।
और भगवान बुद्ध ने दोपहर के समय वस्त्र धारण करके, भिक्षापात्र और वस्त्र लेकर वैशाली में भिक्षा मांगने के लिए प्रवेश किया। जब वे अपने परिक्रमा पूरी करके लौटे और भोजन समाप्त कर लिया, तो उन्होंने पूज्य आनंद को अपने पास बुलाया और कहा: "आनंद, चटाई उठा लो, मैं आज की तपिश चपाल मंदिर में बिताऊंगा।"
"ऐसा ही हो, प्रभु," आदरणीय आनंद ने भगवान बुद्ध की बात मानते हुए कहा और चटाई उठाकर, कदम-दर-कदम भगवान बुद्ध के पीछे चलने लगे।
भगवान बुद्ध चपाल मंदिर गए और पास आकर निर्धारित आसन पर बैठ गए। बैठे-बैठे उन्होंने पूज्य आनंद को अपने पास बुलाया और कहा, “हे आनंद, गौतमक मंदिर कितना रमणीय है, सत्तम्बा मंदिर कितना रमणीय है, बहुपुत्त मंदिर कितना रमणीय है, सरंददा मंदिर कितना रमणीय है, चपाल मंदिर कितना रमणीय है! हे आनंद, जिसने भी जादुई शक्ति के तत्वों का ध्यान लगाया हो, उन्हें बढ़ाया हो, उन्हें वाहन के रूप में उपयोग किया हो, उन्हें साकार किया हो, उन्हें आधार बनाया हो, उनमें समाहित किया हो और उनके साथ पूर्णतः संघर्ष किया हो, वह चाहे तो एक कल्प या शेष कल्प तक इस संसार में रह सकता है। हे आनंद, जिसने भी जादुई शक्ति के तत्वों का ध्यान लगाया हो, उन्हें बढ़ाया हो, उन्हें वाहन के रूप में उपयोग किया हो, उन्हें साकार किया हो, उन्हें आधार बनाया हो, उनमें समाहित किया हो और उनके साथ पूर्णतः संघर्ष किया हो, वह चाहे तो एक कल्प या शेष कल्प तक इस संसार में रह सकता है।”
और पूज्य आनंद, भगवान बुद्ध द्वारा दिए गए प्रत्यक्ष संकेत और स्पष्ट इशारे का अर्थ समझने में असफल रहे, और उन्होंने भगवान बुद्ध से यह प्रार्थना नहीं की: "हे भगवान बुद्ध, कृपा करके इस संसार में एक कल्प के रूप में रहें, हे सुखी, कृपा करके अनेकों के कल्याण के लिए, अनेकों की खुशी के लिए, लोगों के प्रति करुणा के साथ, मनुष्यों और देवताओं के लाभ, फायदे और आनंद के लिए एक कल्प के रूप में रहें"—दुष्ट के प्रभाव में आनंद का हृदय इतना ग्रस्त था।
दूसरी बार भगवान बुद्ध ने पूज्य आनंद को अपने पास बुलाया और कहा इत्यादि (ऊपर दिए गए अनुसार पुनरावृत्ति)।
तीसरी बार इत्यादि। [ऊपर दिए गए अनुसार पुनरावृति]
और भगवान बुद्ध ने पूज्य आनंद को अपने पास बुलाया और कहा: "अब जाओ, आनंद, और जो चाहो करो।"
"हे प्रभु, ऐसा ही हो," पूज्य आनंद ने भगवान बुद्ध की बात मानते हुए कहा और अपने आसन से उठकर भगवान बुद्ध को प्रणाम किया, और उनके दाहिनी ओर मुंह करके उनके चारों ओर चक्कर लगाते हुए, पास ही एक वृक्ष के चरणों में जाकर बैठ गए।
और पूज्य आनंद के चले जाने के तुरंत बाद, दुष्ट मारा भगवान बुद्ध के पास आया और पास आकर आदरपूर्वक अलग खड़ा हो गया। इस प्रकार खड़े होकर दुष्ट मारा ने भगवान बुद्ध से कहा, “हे परम पूज्य (भगवान बुद्ध), अब आप चले जाइए, सुखी बुद्ध अब मर जाएँ; अब परम पूज्य (भगवान बुद्ध) के इसलोक से चले जाने का समय आ गया है, क्योंकि परम पूज्य (भगवान बुद्ध) ने ये शब्द कहे हैं: ‘हे दुष्ट, मैं तब तक इसलोक से नहीं जाऊँगा जब तक मुझे ऐसे भिक्षु शिष्य न मिल जाएँ जो बुद्धिमान और अनुशासित हों, सुशिक्षित हों, धर्म में दृढ़ हों, विद्वान हों, विधि के ज्ञाता हों, उच्च और निम्न धर्मों के ज्ञाता हों, अपने आचरण में सही हों, लघु कर्तव्यों का अभ्यासी हों, अपने गुरु से जो कुछ सीखा है उसे घोषित करें, सिखाएँ, ज्ञात कराएँ, स्पष्ट करें, विश्लेषण करें और स्पष्ट करें, अपने ज्ञान से धर्म के किसी भी दुष्प्रचार का खंडन और नाश करें, और चमत्कारिक सत्य का प्रसार करें। विदेश में। अब, हे प्रभु, भगवान बुद्ध ने बुद्धिमान और अनुशासित भिक्षुओं को शिष्य के रूप में प्राप्त कर लिया है। [जैसा ऊपर है। अनुवाद]: हे भगवान बुद्ध, अब आप इस दुनिया से विदा हो जाइए: हे सुखी बुद्ध, अब आपका निधन हो जाए: अब भगवान बुद्ध के इस दुनिया से विदा होने का

समय आ गया है। और भगवान बुद्ध ने ये शब्द भी कहे हैं: 'हे दुष्ट, मैं तब तक इस दुनिया से विदा नहीं होऊंगा जब तक मुझे भिक्षुणियां शिष्य के रूप में प्राप्त न हो जाएं। [जैसा ऊपर है, पुनरावृति। अनुवाद]।
जब तक मुझे पुरुष अनुयायी आदि प्राप्त नहीं हो जाते।
जब तक मुझे महिला अनुयायी आदि प्राप्त नहीं हो जाते।
भगवान बुद्ध ने आगे कहा है: "हे दुष्ट, मैं तब तक इसलोक से विदा नहीं होऊंगा जब तक 'पवित्र जीवन' सफल, समृद्ध, समस्त मानव जाति में व्यापक रूप से फैल न जाए और देवताओं एवं मनुष्यों के समक्ष पूर्णतः प्रकट न हो जाए।" हे प्रभु, अब भगवान बुद्ध द्वारा वर्णित 'पवित्र जीवन' सफल, समृद्ध, समस्त मानव जाति में व्यापक रूप से फैल चुका है और देवताओं एवं मनुष्यों के समक्ष पूर्णतः प्रकट हो चुका है। हे भगवान बुद्ध, अब आप इसलोक से विदा हो जाइए, सुखी बुद्ध अब इसलोक में प्रवेश करें, अब भगवान बुद्ध के निर्वाण में प्रवेश करने का समय आ गया है।
ये शब्द कहे जाने के बाद, भगवान बुद्ध ने दुष्ट मारा से कहा: "चिंता मत करो, हे दुष्ट; शीघ्र ही पूर्ण पुरुष इसलोक से विदा हो जाएंगे: तीन माह बाद पूर्ण पुरुष निर्वाण प्राप्त करेंगे।"
और भगवान बुद्ध, वहां चपाला मंदिर में, सचेत और जागरूक अवस्था में, जीवन की स्वाभाविक अवधि का त्याग कर दिया, और जब भगवान बुद्ध ने जीवन की स्वाभाविक अवधि का त्याग किया, तो पृथ्वी कांप उठी, और आकाश से भयानक और प्रचंड गर्जना हुई।
और इस संदर्भ में, उस अवसर पर, भगवान बुद्ध ने यह गंभीर वचन कहा:
"ऋषि ने अपने जीवन का, अपने जीवन के उद्देश्य का, चाहे वह दीर्घ हो या लघु, त्याग कर दिया। आंतरिक शांति और आनंद के साथ, उन्होंने कवच की तरह अपने जीवन के उद्देश्य को ही तोड़ डाला।"1

2. मैंने ऐसा सुना है। एक बार भगवान बुद्ध श्रावस्ती में, पूर्वी मठ में, मिगारमाता के मंडप में निवास कर रहे थे।
उस समय, भगवान बुद्ध संध्याकाल में अपने एकांत ध्यान से उठकर बाहर बरामदे में बैठे थे।
और राजा पसेनादि कोसल भगवान बुद्ध के पास गए और उनके निकट आकर भगवान बुद्ध को प्रणाम किया और आदरपूर्वक अलग बैठ गए।
उस समय, लंबे जटाधारी बालों वाले सात तपस्वी, सात निगंथ,2 सात अचेला,2 केवल एक वस्त्र धारण किए हुए सात भिक्षु, और बढ़े हुए नाखूनों और बालों वाले सात घुमंतू भिक्षु, अपने साथ भिक्षुओं की विभिन्न आवश्यक वस्तुएँ लिए हुए, भगवान बुद्ध से कुछ ही दूरी पर से गुजर रहे थे।
और जब राजा पसेनादि कोसल ने इन सात तपस्वियों आदि को भगवान बुद्ध के पास से गुजरते देखा, तो वे अपने आसन से उठे और अपना ऊपरी वस्त्र केवल एक कंधे पर रखकर (दूसरे कंधे को नंगा छोड़कर), दाहिना घुटना जमीन पर रखकर, हाथ जोड़कर तीन बार तपस्वियों को अपना नाम पुकारा: "हे पूज्यवरों, मैं राजा पसेनादि कोसल हूँ।"
तपस्वियों के चले जाने के तुरंत बाद, राजा पसेनादि कोसल भगवान बुद्ध के पास गए और उनके निकट आकर उन्हें प्रणाम किया और अलग बैठ गए। बैठे-बैठे राजा पसेनादि कोसल ने भगवान बुद्ध से कहा, "हे प्रभु, क्या ये तपस्वी इस संसार में संतों में गिने जाते हैं, या क्या इन्होंने संतत्व की ओर ले जाने वाले मार्ग पर चलना शुरू कर दिया है?"
"हे महाराज, आपके लिए गृहस्थ जीवन का आनंद लेते हुए, पुत्रों से घिरे रहकर, बनारस के चंदन का पाउडर लगाते हुए, सुगंधित मालाएँ धारण करते हुए और सोने-चाँदी के धन-संपत्ति से युक्त होकर यह बताना कठिन है कि ये तपस्वी संत हैं या संतत्व के मार्ग पर अग्रसर हैं। हे महाराज, इनके साथ लंबे समय तक रहकर ही इनके गुणों का पता लगाया जा सकता है, और इसके लिए गहन चिंतन, मनन, बुद्धि और ज्ञान की आवश्यकता होती है। हे महाराज, इनके जीवन शैली में इनके साथ लंबे समय तक संगति करने से ही इनकी सत्यनिष्ठा का पता लगाया जा सकता है, और इसके लिए [उपरोक्त] आवश्यकता होती है। आदि। हे महाराज, इनके कष्टों में लंबे समय तक इनके साथ संगति करने से ही इनके धैर्य का पता लगाया जा सकता है, और इसके लिए [उपरोक्त] आवश्यकता होती है।"
"हे महाराज, उनसे लंबे समय तक बातचीत करने से ही उनकी बुद्धिमत्ता का पता लगाया जा सकता है, और इसके लिए बहुत चिंतन, विचार, बुद्धि और ज्ञान की आवश्यकता होती है।"
"हे प्रभु, भगवान बुद्ध द्वारा कहे गए शब्द कितने अद्भुत और आश्चर्यजनक हैं: 'यह कठिन है, इत्यादि [जैसा कि ऊपर बताया गया है]।"

हे प्रभु, मेरे कुछ लोग देश में घूम रहे हैं, जो डाकुओं के समान हैं, क्योंकि वे संसार का त्याग किए बिना भीख मांगते हैं। जब ये लोग 'मार्ग' पर चल पड़ेंगे, तब मैं भी ऐसा ही करूंगा।1 हे प्रभु, अभी तक इन लोगों ने (इच्छाओं के) ढेर को नहीं हटाया है, और वे तेल से अभिषेक किए हुए, सिर और दाढ़ी मुंडवाए हुए, सफेद वस्त्र पहने हुए, पाँचों इंद्रिय सुखों से परिपूर्ण होकर घूम रहे हैं।
और इस संदर्भ में, उस अवसर पर, भगवान बुद्ध ने यह गंभीर वचन कहा:
यदि मनुष्य प्रत्येक अवसर पर स्वयं को प्रयास में न लगाए, तो वह दूसरे के लिए अस्तित्व में नहीं रहेगा।

दूसरों के लिए जीना नहीं,
सचमुच, वह पवित्र जीवन नहीं जीता है।"2.

3. मैंने ऐसा सुना है। एक बार भगवान बुद्ध अनाथपिंडिका के उद्यान, जेतवन में, सावत्थी में निवास कर रहे थे।
उस समय भगवान बुद्ध बैठे हुए थे और अपने द्वारा त्यागी गई विभिन्न बुरी और दुष्ट परिस्थितियों पर विचार कर रहे थे, तथा अपने द्वारा पूर्ण की गई अनेक अच्छी परिस्थितियों का चिंतन कर रहे थे।
और भगवान बुद्ध ने अपने द्वारा त्यागी गई विभिन्न बुरी और दुष्ट परिस्थितियों पर विचार करते हुए और अपनी पूर्ण की गई अनेक अच्छी परिस्थितियों का चिंतन करते हुए, उस अवसर पर यह गंभीर वचन कहा:
जो था, वह अब नहीं है; जो पहले नहीं था, वह अब है; वह न कभी था, न कभी होगा, और न ही अब है।

4. मैंने ऐसा सुना है। एक बार भगवान बुद्ध अनाथपिंडिका के उद्यान, जेतवन में, सावत्थी में निवास करते थे।
उस समय अनेक संख्या में समन, ब्राह्मण और विभिन्न विधर्मी संप्रदायों के घुमंतू भिक्षु, जो अनेक मतों को धारण करते थे, अनेक विविध आकांक्षाओं वाले थे और विभिन्न विधर्मों से संबंधित चीजों का सहारा लेते थे, भिक्षा मांगने के लिए सावत्थी में प्रवेश कर गए।
इनमें से कुछ समन और ब्राह्मणों का मानना था कि संसार शाश्वत है और उनका तर्क था कि यह विचार सत्य है और बाकी सभी असत्य हैं।
कुछ लोगों ने कहा: दुनिया शाश्वत नहीं है।
कुछ लोगों ने कहा: दुनिया सीमित है।
कुछ लोगों ने कहा: दुनिया अनंत है।
कुछ लोगों का कहना था कि आत्मा और शरीर एक ही हैं।
कुछ लोगों ने कहा: आत्मा और शरीर एक समान नहीं हैं।
कुछ लोगों का कहना था: पूर्ण पुरुष मृत्यु के बाद भी विद्यमान रहता है।
कुछ लोगों ने कहा: पूर्ण पुरुष की मृत्यु के बाद उसका अस्तित्व समाप्त हो जाता है।
कुछ लोगों ने कहा: परिपूर्ण व्यक्ति का अस्तित्व है और मृत्यु के बाद उसका अस्तित्व नहीं रहता।
कुछ लोगों ने कहा: पूर्ण पुरुष मृत्यु के बाद न तो अस्तित्व में रहता है और न ही अस्तित्वहीन होता है।
प्रत्येक व्यक्ति अपने दृष्टिकोण को सत्य और बाकी सभी को असत्य साबित करने का दावा कर रहा था।
ये झगड़ालू, उग्र और नुक्ताचीनी करने वाले भिक्षु एक-दूसरे को तीखे शब्दों (शाब्दिक रूप से मुख-भाले) से घायल करते हुए कहते थे: "यही सत्य है, ऐसा सत्य नहीं है: सत्य ऐसा नहीं है, ऐसा सत्य है।"
और बहुत से भिक्षुओं ने सुबह के समय वस्त्र धारण करके, भिक्षापात्र और वस्त्र लेकर सावत्थी में भिक्षा मांगने के लिए प्रवेश किया। जब वे अपने परिक्रमा पूरी करके भोजन समाप्त करके लौटे, तो वे भगवान बुद्ध के पास गए और उनके निकट आकर उन्हें प्रणाम किया और अलग बैठ गए। इस प्रकार बैठे हुए उन्होंने भगवान बुद्ध से कहा, "हे प्रभु, अभी-अभी बहुत से समन, ब्राह्मण और विभिन्न मतों को मानने वाले भिक्षु सावत्थी में भिक्षा मांगने के लिए आए हैं और वे आपस में वाद-विवाद कर रहे हैं, कह रहे हैं: 'यह सत्य है, वह सत्य नहीं है, इत्यादि।'"
हे भिक्षुओं, ये विधर्मी भिक्षु अंधे हैं, दृष्टिहीन हैं; इन्हें न सही का ज्ञान है, न गलत का, न सत्य का, न असत्य का। ये भिक्षु, न सही का ज्ञान रखते हैं, न गलत का, न सत्य का, न असत्य का, और वाद-विवाद करते हुए कहते हैं, 'यह सत्य है, यह सत्य नहीं है' इत्यादि। [जैसा ऊपर बताया गया है। अनुवाद]
हे भिक्षुओं, पुराने समय में सावत्थी नामक नगर में एक राजा रहता था। हे भिक्षुओं, राजा ने एक व्यक्ति को अपने पास बुलाया और कहा: "तुम जाओ और सावत्थी में जन्म से अंधे सभी पुरुषों को इकट्ठा करके यहाँ ले आओ।"
"हे प्रभु," उस व्यक्ति ने राजा की बात मानकर सहमति जताई और वह सावत्थी गया तथा वहाँ जन्म से अंधे सभी पुरुषों को राजा के पास ले आया और राजा के निकट आकर बोला, "हे प्रभु, सावत्थी में जन्म से अंधे सभी पुरुष यहाँ उपस्थित हैं।"
"तो फिर, उनके सामने एक हाथी लाओ।"
"हे प्रभु," उस व्यक्ति ने राजा की बात मानकर सहमति जताई और राजा अंधों के सामने एक हाथी लेकर आया और बोला: "हे अंधों, यह एक हाथी है।"
उसने कुछ अंधों को हाथी का सिर दिखाते हुए कहा, 'हे अंधों, हाथी ऐसा होता है।'
कुछ लोगों को उसने शव दिखाते हुए कहा: 'यह एक हाथी है।'
कुछ लोगों को उसने हाथी के पैर दिखाते हुए कहा: 'यह हाथी है।'
कुछ लोगों को उसने हाथी की पीठ दिखाते हुए कहा: 'हाथी ऐसा दिखता है।'
कुछ लोगों को उसने पूंछ दिखाते हुए कहा: 'हाथी ऐसा दिखता है।'

कुछ लोगों को उसने पूंछ का बालों वाला गुच्छा दिखाते हुए कहा: 'हाथी ऐसा दिखता है।'
हे भिक्षुओं, तमाशा दिखाने वाले ने इन अंधों को हाथी भेंट करने के बाद राजा के पास जाकर उनसे कहा, "हे प्रभु, हाथी को अंधों के सामने लाया गया है, अब आप जो उचित समझें वही करें।"
और राजा उन अंधों के पास गया और उनके करीब आकर उनसे कहा: "क्या अब तुम जानते हो कि हाथी कैसा दिखता है?"
"निश्चित रूप से, प्रभु: अब हम जानते हैं कि हाथी कैसा होता है।"
"तो मुझे बताओ, हे अंधों, हाथी कैसा दिखता है?"
और हे भिक्षुओं, उन अंधे लोगों ने, जिन्होंने हाथी का सिर महसूस किया था, कहा: 'हे प्रभु, हाथी एक बड़े गोल घड़े के समान होता है।'
जिन लोगों ने इसके कान छूकर देखे, उन्होंने कहा: 'यह सूप की टोकरी की तरह है।'
जिन लोगों ने इसके दांतों को महसूस किया था, उन्होंने कहा: 'यह हल के फाल जैसा है।'
जिन लोगों ने इसके तने को छूकर देखा था, उन्होंने कहा: 'यह हल की तरह है।'
जिन लोगों ने इसकी संरचना को महसूस किया, उन्होंने कहा: 'यह एक अन्न भंडार की तरह है।'
जिन लोगों ने इसके पैरों को महसूस किया था, उन्होंने कहा: 'यह एक खंभे की तरह है।'
जिन लोगों ने इसकी पीठ को महसूस किया था, उन्होंने कहा: 'यह एक ओखली की तरह है।'
जिन लोगों ने इसकी पूंछ को छुआ था, उन्होंने कहा: 'यह मूसल की तरह है।'
जिन लोगों ने इसकी पूंछ के गुच्छे को छुआ था, उन्होंने कहा: 'यह झाड़ू की तरह है।'
और वे सब आपस में मुट्ठियों से लड़ते हुए कहने लगे, 'हाथी ऐसा होता है, हाथी ऐसा नहीं होता, हाथी ऐसा नहीं होता, हाथी ऐसा होता है।'
और हे भिक्षुओं, राजा अत्यंत प्रसन्न हुए।
हे भिक्षुओं, ठीक इसी प्रकार ये विधर्मी लोग, जो अंधे और अंतर्दृष्टिहीन हैं, आपस में यह कहते हुए विवाद करते हैं कि 'यह सिद्धांत सत्य है, बाकी सभी असत्य हैं'।
और इस संदर्भ में, उस अवसर पर, भगवान बुद्ध ने यह गंभीर वचन कहा:
"यह सर्वविदित है कि कुछ समन और ब्राह्मण,
जो विश्लेषण की विधियों से जुड़े रहते हैं, और किसी मामले के केवल एक पक्ष को ही समझते हैं,
एक दूसरे से असहमत होना।

5. मैंने ऐसा सुना है। एक बार भगवान बुद्ध अनाथपिंडिका के उद्यान, जेतवन में, सावत्थी में निवास कर रहे थे।
उस समय अनेक विधर्मी संप्रदायों से संबंधित, विभिन्न मतों वाले, अनेक विषयों पर संशयी, विविध आकांक्षाओं वाले और विभिन्न विधर्मों से संबंधित बातों का सहारा लेने वाले बहुत से घुमंतू भिक्षु, समन और ब्राह्मण भिक्षा मांगने के लिए सावत्थी में प्रवेश कर गए।
इन समन और ब्राह्मणों के विभिन्न मत थे, जैसे कि:
आत्मा और संसार शाश्वत हैं।
स्वयं और संसार दोनों ही परिमित और अनंत हैं।
स्वयं और संसार न तो परिमित हैं और न ही अनंत।
स्वयं और संसार दोनों ही स्वयं-निर्मित हैं।
स्वयं और संसार दोनों ही स्वयं द्वारा निर्मित और दूसरों द्वारा निर्मित हैं।
स्वयं और संसार न तो स्वयं द्वारा उत्पन्न होते हैं और न ही दूसरों द्वारा।
स्वयं और संसार का अस्तित्व बिना किसी कारण के उत्पन्न होता है।
स्वयं और संसार, सुख और दुख शाश्वत हैं।
स्वयं और संसार, सुख और दुख, शाश्वत नहीं हैं।

(उपरोक्त) परिमित और अनंत दोनों हैं।
(उपरोक्त) स्वयं निर्मित हैं।
(उपरोक्त) अन्य द्वारा उत्पादित हैं।
(उपरोक्त) स्वयं द्वारा निर्मित और दूसरों द्वारा निर्मित दोनों हैं।
(उपरोक्त) न तो स्वयं उत्पन्न हैं और न ही अन्य द्वारा उत्पन्न हैं, और न ही वे बिना किसी कारण के अस्तित्व में आए हैं।
इस प्रकार उनमें मतभेद हो गया, और प्रत्येक ने घोषणा की कि 'यह दृष्टिकोण सत्य है, बाकी सभी असत्य हैं।'
और कई भिक्षु आदि भगवान बुद्ध के पास गए और बोले: 'हे प्रभु, अभी-अभी कई समन और ब्राह्मण आदि [पहले की तरह] कह रहे हैं कि 'यह मत सत्य है, बाकी सभी असत्य हैं।'

हे भिक्षुओं, ये भटकते हुए भिक्षु अंधे हैं, अंतर्दृष्टिहीन हैं, विभिन्न विधर्मी संप्रदायों से संबंधित हैं, न तो सही का बोध करते हैं और न ही गलत का, न ही सत्य का ज्ञान रखते हैं और न ही असत्य का, और सही या गलत का बोध न होने और सत्य या असत्य का ज्ञान न होने के कारण, आपस में वाद-विवाद करते हैं, इत्यादि कहते हैं। [जैसा ऊपर बताया गया है। अनुवाद]
और इस संदर्भ में, उस अवसर पर, भगवान बुद्ध ने यह गंभीर वचन कहा:
"यह तो सर्वविदित है कि कुछ समन और ब्राह्मण,
ऐसे विचारों से चिपके रहो, उनमें डूब जाओ,
और निर्वाण को प्राप्त न करो।

6. ऊपर जैसा ही, लेकिन निम्नलिखित अंत के साथ।
ये लोग 'मैं कर्ता हूँ' और 'दूसरा कर्ता है' जैसी धारणाओं से ग्रस्त हैं। वे यह नहीं समझते (कि ये दो विधर्म हैं)। उन्हें इनमें कोई हानि नहीं दिखती। जो इनमें हानि देखता है, वह 'मैं कर्ता हूँ' और 'दूसरा कर्ता है' जैसे विचारों को नहीं अपनाता।
यह लोग, जो अहंकार में डूबे हुए हैं, अहंकार में हठी हैं, अहंकार के गुलाम हैं, विधर्मी बातों में शोर मचाते हैं, जन्म और मृत्यु के सागर को पार नहीं कर पाते।

7. मैंने ऐसा सुना है। एक बार भगवान बुद्ध अनाथपिंडिका के उद्यान, जेतवन में, सावत्थी में निवास कर रहे थे।
उस समय पूज्य सुभूति भगवान बुद्ध से कुछ ही दूरी पर पालथी मारकर सीधे बैठे थे और ध्यानमग्न अवस्था में लीन थे। भगवान बुद्ध ने पूज्य सुभूति को पास ही पालथी मारकर सीधे बैठे हुए देखा, वे ध्यानमग्न अवस्था में लीन थे।
और इस संदर्भ में, उस अवसर पर, भगवान बुद्ध ने यह गंभीर वचन कहा:
जिसके द्वारा बुरे विचार नष्ट हो जाते हैं,
और प्रत्येक आंतरिक चिंतन पर अच्छी तरह से विचार किया जाता है, वह शारीरिक रूप से बेखबर होकर, 'आसक्ति' से परे चला जाता है।
'चार बंधनों' को पार करना पुनर्जन्म नहीं है।

8. मैंने ऐसा सुना है। एक बार भगवान बुद्ध राजगृह में, बांस के जंगल में, कलांदिकनिवापा में निवास कर रहे थे।
उस समय राजगाह के दो पुरुष एक वेश्या के प्रति गहरे प्रेम में लीन थे।
वे आपस में झगड़ते, बहस करते और एक-दूसरे पर करछुल, मिट्टी के ढेलों, लाठियों और तलवारों से हमला करते रहे। इस लड़ाई में वे मृत्यु और मृत्यु की पीड़ा सहने को भी तैयार थे।
और बड़ी संख्या में भिक्षुओं ने सुबह के समय वस्त्र धारण करके, भिक्षापात्र और वस्त्र लेकर राजगृह में भिक्षा मांगने के लिए प्रवेश किया। जब उन्होंने राजगृह में परिक्रमा पूरी कर ली और भोजन कर लिया, तो वे भगवान बुद्ध के पास गए और निकट आकर उन्हें प्रणाम किया और अलग बैठ गए। बैठे-बैठे उन्होंने उनसे कहा, "हे प्रभु, अभी-अभी राजगृह के दो पुरुष एक वेश्या आदि के प्रति गहरे प्रेम में लीन हैं।"
और इस संदर्भ में, उस अवसर पर, भगवान बुद्ध ने यह गंभीर वचन कहा:
कुछ लोग उपद्रव फैलाने वाले की शिक्षा को मूलभूत सत्य मानते हैं, उनका मानना है कि जो कुछ भी हासिल किया गया है या हासिल करना है, वह बुराई से भरा हुआ है। कुछ लोग नैतिकता, सुजीवन और पवित्रता को सहायक मानते हैं। यही उस व्यक्ति का एकमात्र आदर्श (लक्ष्य) है जो इस प्रकार तर्क देता है।

और एक दूसरा आदर्श है: यह कि कामवासनाओं में कोई हानि नहीं है। जीवन के ये दोनों आदर्श—अच्छाई से विमुख होने का आदर्श और इंद्रिय सुख का आदर्श—मृत्यु के दायरे को बढ़ाते हैं, और यह बदले में चिंतन को बढ़ावा देता है। कुछ लोग इन आदर्शों की वास्तविक प्रकृति को न समझकर इनसे चिपके रहते हैं, कुछ इनसे आगे निकल जाते हैं। जो लोग इन्हें भली-भांति समझते हैं, वे इनमें नहीं उलझते, इस प्रकार नहीं सोचते, उनकी यात्रा बोध से परे होती है (अर्थात, वे संसार के चक्र में नहीं घूमते, वे इसी जीवन में निर्वाण प्राप्त कर लेते हैं और पुनर्जन्म-मृत्यु के अधीन नहीं होते)।

9. मैंने ऐसा सुना है। एक बार भगवान बुद्ध अनाथपिंडिका के उद्यान, जेतवन में, सावत्थी में निवास कर रहे थे।
उस समय भगवान बुद्ध खुले में बैठे थे, रात घोर अंधेरी थी और तेल के दीपक जल रहे थे।

और असंख्य पतंगे बार-बार इन तेल के दीयों में गिरकर विपत्ति, विनाश और पूर्ण विनाश का शिकार हो रहे थे। और भगवान बुद्ध ने इन पतंगों को बार-बार तेल के दीयों में गिरते हुए और विपत्ति, विनाश और पूर्ण विनाश का शिकार होते हुए देखा।
और इस संदर्भ में, उस अवसर पर, भगवान बुद्ध ने यह गंभीर वचन कहा:
वे इसके पास और उससे आगे तक दौड़ते हैं।
लेकिन वे कभी सार तक नहीं पहुँच पाते। वे अपने लिए नए-नए बंधन बना लेते हैं। जैसे पतंगे आग की ओर आकर्षित होते हैं, वैसे ही कुछ लोग इस सिद्धांत की ओर खिंचे चले जाते हैं।
जो देखा और सुना जाता है, उसी में सार निहित है।

10. मैंने ऐसा सुना है। एक बार भगवान बुद्ध अनाथपिंडिका के उद्यान, जेतवन में, सावत्थी में निवास कर रहे थे।
और पूज्य आनंद भगवान बुद्ध के पास गए और उन्हें प्रणाम करके अलग बैठ गए। बैठे-बैठे उन्होंने भगवान बुद्ध से कहा, “हे प्रभु, जब तक सिद्ध पुरुष, संत, परम बुद्ध संसार में जन्म नहीं लेते, तब तक विधर्मी संप्रदाय और भिक्षुणियों का आदर, पूजा, सम्मान और आदर किया जाता है और उन्हें भिक्षुओं की सभी आवश्यक वस्तुएँ, जैसे वस्त्र, भिक्षा, विश्राम स्थल और रोग की स्थिति में औषधियाँ प्राप्त होती हैं। परन्तु जब सिद्ध पुरुष, संत, परम बुद्ध पृथ्वी पर प्रकट होते हैं, तब इन विधर्मी संप्रदायों और भिक्षुणियों का आदर, पूजा, सम्मान और आदर नहीं किया जाता और उन्हें भिक्षुओं की सभी आवश्यक वस्तुएँ, जैसे वस्त्र, भिक्षा, विश्राम स्थल और रोग की स्थिति में औषधियाँ प्राप्त नहीं होतीं। अब, हे प्रभु, भगवान बुद्ध और भिक्षुओं का संघ आदर आदि के योग्य है और उन्हें आदि और रोग की स्थिति में औषधियाँ प्राप्त होती हैं।” बीमारी।"
"ऐसा ही है, आनंद; जब तक सिद्ध पुरुष, संत, परम बुद्ध आदि प्राप्त नहीं कर लेते, तब तक विधर्मी संप्रदाय आदि को आवश्यक वस्तुएँ प्राप्त नहीं हो जातीं।"
और इस संदर्भ में, उस अवसर पर, भगवान बुद्ध ने यह गंभीर वचन कहा:
सूर्योदय होने तक जुगनू की रोशनी दिखाई देती है;
सूर्योदय की भव्यता में उसका प्रकाश फीका पड़ जाता है और फिर लुप्त हो जाता है। यही हाल विधर्मियों के प्रकाश का भी है। जब तक परम बुद्ध पृथ्वी पर प्रकट नहीं होते, तब तक ज्ञानी और शिष्यों को ज्ञान प्राप्त नहीं होता।
विधर्मी विचार रखने वाले लोग भी दुख से बच नहीं सकते।
अध्याय 7 - कुला
पाली संस्करण: पाली-अंग्रेजी संस्करण और पाली-देवनागरी संस्करण
1. मैंने ऐसा सुना है। एक बार भगवान बुद्ध अनाथपिंडिका के उद्यान, जेतवन में, सावत्थी में निवास कर रहे थे।
उस समय पूज्य सारिपुत्त अनेक धार्मिक प्रवचनों से पूज्य बौने भद्दिया को उपदेश दे रहे थे, उन्हें प्रेरित कर रहे थे, उनमें उत्साह भर रहे थे और उन्हें प्रसन्न कर रहे थे।
और इस प्रकार पूज्य सारिपुत्त के अनेक धार्मिक प्रवचनों से शिक्षित, जागृत, उत्साहित और प्रसन्न होकर, पूज्य बौने भद्दिया का हृदय 'आसक्ति' और पापों से मुक्त हो गया।
और भगवान बुद्ध ने यह अनुभव किया कि पूज्य सारिपुत्त के अनेक धार्मिक प्रवचनों के माध्यम से पूज्य भद्दिया का हृदय 'आसक्ति' और पापों से मुक्त हो गया था।
और इस संदर्भ में, उस अवसर पर, भगवान बुद्ध ने यह गंभीर वचन कहा:
ऊपर, नीचे, हर तरह से मुक्त,
यह जानकर कि 'अहंकार' का कोई अस्तित्व नहीं है, ऐसा मुक्त व्यक्ति उस बाढ़ को पार कर चुका है जिसे पहले कभी पार नहीं किया गया था।
और उसका पुनर्जन्म नहीं होता।
2. मैंने ऐसा सुना है। उस समय भगवान बुद्ध सावत्थी में, जेतवन में, अनाथपिंडिका के उद्यान में निवास करते थे।
और पूज्य सारिपुत्त ने यह सोचकर कि पूज्य बौने भद्दिया अभी नौसिखिया ही हैं, उन्हें अनेक धार्मिक प्रवचनों से उपदेश दिया, प्रेरित किया, उत्साहित किया और प्रसन्न किया।
और भगवान बुद्ध ने पूज्य सारिपुत्त को पूज्य बौने भद्दिया (जिन्हें वे अभी नौसिखिया समझते थे) को अनेक धार्मिक प्रवचनों से उपदेश देते, प्रेरित करते, उत्साहित करते और प्रसन्न करते हुए देखा।
और इस संदर्भ में, उस अवसर पर भगवान बुद्ध ने यह गंभीर वचन कहा:
"पहिया टूट गया है। 'इच्छाहीनता' प्राप्त हो गई है।"
नदी का तल सूख गया है, पानी नहीं बह रहा है, टूटा हुआ पहिया अब और नहीं लुढ़केगा;
यह दुःख का अंत है।

3. मैंने ऐसा सुना है। एक बार भगवान बुद्ध अनाथपिंडिका के उद्यान, जेतवन में, सावत्थी में निवास कर रहे थे।
उस समय सावत्थी में बहुत से पुरुष रहते थे और वे सभी कामवासनाओं के बंधन में थे, अत्यधिक कामवासना से ग्रस्त, लहूलुहान, मोहित और अत्यधिक वासना से ग्रस्त होकर पाप में लिप्त और कामवासना से गर्भवती हो चुके थे।
और बहुत से भिक्षुओं ने सुबह के समय वस्त्र धारण करके, भिक्षापात्र और वस्त्र लेकर सावत्थी में भिक्षा मांगने के लिए प्रवेश किया। सावत्थी में अपने परिक्रमा पूरी करके और भोजन समाप्त करके वे भगवान बुद्ध के पास गए और उनके निकट आकर उन्हें प्रणाम किया और अलग बैठ गए। इस प्रकार बैठे हुए उन्होंने भगवान बुद्ध से कहा, “हे प्रभु, इस समय बहुत से लोग सावत्थी में अपने दिन कामवासनाओं आदि के बंधन में बिता रहे हैं।”
और इस संदर्भ में, उस अवसर पर, भगवान बुद्ध ने यह गंभीर वचन कहा:
"ये ऐसे प्राणी हैं जो वासना से ग्रस्त हैं।"
वासना के बंधनों में जकड़े हुए, जो इन बंधनों में कोई बुराई नहीं देखते। निश्चय ही, जो मानवीय वासना के बंधनों से जकड़े हुए हैं, वे इस महान और शक्तिशाली बाढ़ को पार नहीं कर सकते।
(उस बुराई के बारे में जो मानवता को कुचल देती है।)

4. मैंने ऐसा सुना है। एक बार भगवान बुद्ध अनाथपिंडिका के उद्यान, जेतवन में, सावत्थी में निवास कर रहे थे।
उस समय सावत्थी में कई पुरुष रहते थे, और वे सभी कामवासनाओं के बंधन में जकड़े हुए थे, अत्यधिक कामवासना से ग्रस्त, लहूलुहान, मोहित और पागल होकर पाप में लिप्त हो गए थे, अंधे हो गए थे और कामवासना से गर्भ धारण कर चुके थे।
और भगवान बुद्ध ने दोपहर के समय वस्त्र धारण करके और अपना भिक्षापात्र और वस्त्र लेकर भिक्षा मांगने के लिए सावत्थी में प्रवेश किया।
और भगवान बुद्ध ने सावत्थी में रहने वाले इन लोगों को देखा और वे सभी कामवासनाओं के बंधन में जकड़े हुए थे, उत्तेजित थे आदि। [जैसा ऊपर बताया गया है। अनुवाद]
और इस संदर्भ में, उस अवसर पर, भगवान बुद्ध ने यह गंभीर वचन कहा:
"ये लोग वासना से अंधे होकर, उलझ गए हैं,
इच्छाओं के वस्त्रों में लिपटे, आलस्य के बंधनों में जकड़े, जैसे मछली किसी फंदे के जाल में फंसी हो, वे क्षय और मृत्यु की ओर तेजी से बढ़ते हैं।
जैसे एक बछड़ा अपनी माँ का दूध पीता है।

5. मैंने ऐसा सुना है कि एक बार भगवान बुद्ध सावत्थी में, जेतवन में, अनाथपिंडिका के उद्यान में निवास कर रहे थे।
उस समय पूज्य बौने भद्दिया, बड़ी संख्या में भिक्षुओं के पदचिन्हों पर कदम-दर-कदम चलते हुए, उस स्थान पर पहुँचे जहाँ भगवान बुद्ध थे।
और जब भगवान बुद्ध ने भिक्षुओं के पीछे-पीछे आ रहे आदरणीय बौने भद्दिया को देखा, जो बदसूरत, देखने में बुरा, नीची चाल वाला और अधिकांश भिक्षुओं द्वारा तिरस्कृत था, तो उन्होंने भिक्षुओं को अपने पास बुलाया और कहा: "हे भिक्षुओं, दूर से आ रहे इस भिक्षु को देखो, जो बदसूरत, देखने में बुरा, नीची चाल वाला और अधिकांश भिक्षुओं द्वारा तिरस्कृत है।"
"फिर भी, प्रभु।"
"हे भिक्षुओं, यह भिक्षु सामर्थ्य में बलवान और बलवान है: यह पूर्णता की अवस्था, जो इस भिक्षु ने पहले कभी प्राप्त नहीं की, आसानी से प्राप्त नहीं होती; जिसके लिए कुलीन परिवारों के वंशज अपने घर छोड़कर संन्यासी जीवन व्यतीत करते हैं और स्वयं इसी जन्म में उच्च ज्ञान के माध्यम से उस सर्वोच्च पूर्णता, पवित्र जीवन को प्राप्त कर लेते हैं।"
और इस संदर्भ में, उस अवसर पर, भगवान बुद्ध ने यह गंभीर वचन कहा:
गाड़ी एक ही पहिये पर आगे बढ़ती रहती है।
लेकिन शरीर से निर्दोष, सफेद आवरण से ढका हुआ: तो, इस (दुखी बौने) को आते हुए देखो; इसने दुःख पर विजय प्राप्त कर ली है, कामवासना की धाराओं को काट दिया है।
और उसने स्वयं को (भविष्य के जीवन की इच्छा के बंधनों से) मुक्त कर लिया।

6. मैंने ऐसा सुना है। एक बार भगवान बुद्ध अनाथपिंडिका के उद्यान, जेतवन में, सावत्थी में निवास करते थे।
उस समय पूज्य अन्नातकोंदन्ना भगवान बुद्ध से कुछ ही दूरी पर, पांव बैठे हुए, शरीर सीधा रखते हुए, इच्छाओं के नाश से प्राप्त होने वाली मुक्ति का चिंतन कर रहे थे।

और भगवान बुद्ध ने पूज्य अन्नतकोंदन्ना को कुछ ही दूरी पर पालथी मारकर, शरीर सीधा करके बैठे हुए देखा, जो इच्छाओं के नाश से प्राप्त होने वाली मुक्ति का चिंतन कर रहे थे।
और इस संदर्भ में, उस अवसर पर, भगवान बुद्ध ने यह गंभीर वचन कहा:
"जहां न तो जड़ है, न मिट्टी है, न पत्ता है,"
रेंगने वाला पौधा कैसे हो सकता है?1 बंधनों से मुक्त हुए बलवान पुरुष को दोष देने का अधिकार किसे है?
ऐसे व्यक्ति की प्रशंसा देवता भी करते हैं और ब्रह्मा भी उनकी स्तुति करते हैं।

7. मैंने ऐसा सुना है। एक बार भगवान बुद्ध अनाथपिंडिका के उद्यान, जेतवन में, सावत्थी में निवास कर रहे थे।
उस समय भगवान बुद्ध चेतना और तर्क के त्याग पर ध्यान में लीन बैठे थे, जो उन्होंने बाधाओं से संबंधित था।2
और भगवान बुद्ध ने अपनी चेतना और तर्कशक्ति के त्याग और बाधाओं को भांपते हुए उस समय यह गंभीर वचन कहा:
"जिसके लिए कोई बाधा शेष न रहे, जिसने सभी बंधनों और बाधाओं को पार कर लिया हो, ऐसा संत जो इच्छा से मुक्त जीवन जीता है, न तो देवता और न ही मनुष्य उसका तिरस्कार करते हैं।"

8. मैंने ऐसा सुना है। एक बार भगवान बुद्ध अनाथपिंडिका के उद्यान, जेतवन में, सावत्थी में निवास कर रहे थे।
उस समय पूज्य महाकच्चना भगवान बुद्ध से कुछ ही दूरी पर, पालथी मारकर, शरीर को सीधा रखते हुए, शरीर की अशुद्धता पर गहन चिंतन कर रहे थे।
और भगवान बुद्ध ने पूज्य महाकच्चना को पास में ही पालथी मारकर सीधे बैठे हुए देखा, जो शरीर की अशुद्धता पर गहन आत्मिक चिंतन कर रहे थे।
और इस संदर्भ में, उस अवसर पर, भगवान बुद्ध ने यह गंभीर वचन कहा:
जो व्यक्ति हर समय और निरंतर शरीर की अशुद्धता पर ध्यान करता रहता है;
(यह नहीं है, मेरे लिए यह नहीं हो सकता है, यह नहीं होगा, मेरे लिए यह नहीं होगा): वह, उचित समय पर, एक राज्य से दूसरे राज्य में जाता हुआ,
इच्छा की विषैली धाराओं को पार करेंगे।

9. मैंने ऐसा सुना है। उस समय भगवान बुद्ध भिक्षुओं के साथ मल्ल देश की यात्रा कर रहे थे और वे मल्ल देश के एक ब्राह्मण गाँव थुना में आए।
और थुना के ब्राह्मण गृहस्थों ने यह सुनकर कि समना गौतम—जो शाक्य परिवार से निकले थे—भिक्षुओं के संघ के साथ मल्ल देश की यात्रा कर रहे हैं और थुना पहुँच गए हैं, उन्होंने कुएँ को घास और भूसे से लबालब भर दिया, ताकि इन मुंडे हुए भिक्षुओं (जैसा कि वे उन्हें कहते थे) को पीने के लिए पानी न मिल सके।
और भगवान बुद्ध मार्ग छोड़कर एक वृक्ष की तलहटी में गए और पास आकर निर्धारित आसन पर बैठ गए और बैठे-बैठे आनंद से कहा: "आनंद, कृपया मुझे उस कुएँ से थोड़ा पानी ला दो।"
ये शब्द कहे जाने के बाद, पूज्य आनंद ने भगवान बुद्ध से कहा: "हे प्रभु, उस कुएँ को थून के ब्राह्मण गृहस्थों ने घास और भूसे से लबालब भर दिया है, ताकि हम, जिन्हें वे मुंडे हुए भिक्षु कहते हैं, पीने के लिए पानी न पा सकें।"
दूसरी बार भगवान बुद्ध ने पूज्य आनंद से कहा: "आनंद, कृपया मुझे उस कुएं से थोड़ा पानी लाकर दो।"
दूसरी बार पूज्य आनंद ने भगवान बुद्ध से कहा: 'हे प्रभु, वह कुआँ भर गया है, इत्यादि।' [जैसा ऊपर अनुवाद किया गया है।]
तीसरी बार भगवान बुद्ध ने पूज्य आनंद से कहा: "आनंद, कृपया मुझे उस कुएं से थोड़ा पानी लाकर दो।"
"ऐसा ही हो, प्रभु," आदरणीय आनंद ने भगवान बुद्ध की बात मानते हुए कहा और वे एक कटोरा लेकर कुएँ की ओर चल दिए।
और जब वह कुएं पर पहुंचा तो उसने पाया कि सारी घास और भूसा हटा दिया गया था और वह शुद्ध, स्वच्छ, पारदर्शी पानी से लबालब भरा हुआ था, यहां तक कि पानी छलक रहा था।
और पूज्य आनंद के मन में यह विचार आया: "पूर्ण पुरुष की अपार शक्ति और सामर्थ्य कितनी आश्चर्यजनक और अद्भुत है कि मेरे आगमन पर सारी घास और भूसा हटा दिया गया था और कुआँ साफ, शुद्ध और पारदर्शी पानी से लबालब भरा हुआ था, यहाँ तक कि छलक रहा था।"
और कटोरे में थोड़ा पानी लेकर वह भगवान बुद्ध के पास गया और भगवान बुद्ध से कहा: "पूर्ण पुरुष की अपार शक्ति और सामर्थ्य कितनी अद्भुत और आश्चर्यजनक है, जिसके द्वारा घास और भूसा आदि हटा दिए गए।" [जैसा ऊपर अनुवाद है]
हे परम पूज्य (भगवान बुद्ध), जल पियो; हे सुखी, जल पियो।
और इस संदर्भ में, उस अवसर पर, भगवान बुद्ध ने यह गंभीर वचन कहा:--
"जब हर जगह पानी है, तो कुएं की क्या जरूरत है?"
जब इच्छा जड़ से उखाड़ दी गई हो,

मनुष्य को किस चीज की तलाश में भटकना चाहिए?

10. मैंने ऐसा सुना है। एक बार भगवान बुद्ध कोसंबी के घोसिता उद्यान में निवास कर रहे थे।
उस समय राजा उदेना के उद्यान में राजसी महिलाओं के लिए अलग रखा गया महल जलकर राख हो गया और समवती सहित 500 महिलाएं मारी गईं।
और सुबह के समय बहुत से भिक्षु वस्त्र धारण करके, भिक्षापात्र और वस्त्र लेकर कोसंबी में भिक्षा मांगने के लिए प्रवेश किया। जब उन्होंने परिक्रमा पूरी कर ली और भोजन कर लिया, तो वे भगवान बुद्ध के पास गए और उनके निकट आकर उन्हें प्रणाम किया और अलग बैठ गए। बैठे-बैठे उन्होंने भगवान बुद्ध से कहा, "हे प्रभु, अभी-अभी राजा उदेना के उद्यान में राजसी महिलाओं के लिए बना महल जल गया और समवती समेत 500 महिलाएं मर गईं। ये महिला भक्त कहाँ गईं और उनका भविष्य क्या होगा?"
"हे भिक्षुओं, कुछ ऐसे शिष्य हैं जो इस धारा में प्रवेश कर चुके हैं, कुछ ऐसे हैं जो फिर से (इस संसार में) लौट आते हैं, और कुछ ऐसे हैं जो कभी नहीं लौटते। ये सभी मृत शिष्य व्यर्थ नहीं गए।"
और इस संदर्भ में, उस अवसर पर, भगवान बुद्ध ने यह गंभीर वचन कहा:--
"भ्रमों की यह दुनिया अच्छी प्रतीत होती है;
अंधकार से घिरा मूर्ख, 'उपाधि' से बंधा हुआ,1 इसे शाश्वत मानता है।
जो सही दृष्टि रखता है, उसके लिए यह सब कुछ भी नहीं है।

अध्याय 8 - पातालगामी
पाली संस्करण: पाली-अंग्रेजी संस्करण और पाली-देवनागरी संस्करण
1. मैंने ऐसा सुना है। एक बार भगवान बुद्ध अनाथपिंडिका के उद्यान, जेतवन में, सावत्थी में निवास कर रहे थे।
उस समय भगवान बुद्ध निर्वाण विषय पर धार्मिक प्रवचन देकर भिक्षुओं को उपदेश दे रहे थे, उनमें जोश भर रहे थे, उन्हें उत्साहित कर रहे थे और उन्हें आनंदित कर रहे थे।
और ये भिक्षु अर्थ को समझकर, उस पर विचार करके और संपूर्ण सिद्धांत को अपने हृदय से स्वीकार करके ध्यानपूर्वक सुनने लगे।
और इस संदर्भ में, उस अवसर पर, भगवान बुद्ध ने यह गंभीर वचन कहा:
हे भिक्षुओं, एक ऐसी अवस्था है जहाँ न तो पृथ्वी है, न जल, न ऊष्मा, न वायु, न अनंत अंतरिक्ष, न अनंत चेतना, न शून्यता, न बोध, न अबोध, न यह संसार, न वह संसार, न सूर्य और न चंद्रमा।

हे भिक्षुओं, मैं इसे न तो आना कहता हूँ, न जाना, न खड़ा होना, न जन्म और न मृत्यु। यह स्थिरता रहित है, न क्रम रहित है, न आधार रहित है: यही दुःख का अंत है।

2. और इस संदर्भ में, उस अवसर पर, भगवान बुद्ध ने यह गंभीर वचन कहा:
"मूल तत्व को समझना कितना कठिन है,"
सत्य को आसानी से नहीं समझा जा सकता, इच्छा पर उसी का अधिकार है जो इसे जानता है।
जो सही ढंग से देखता है, उसके लिए सब कुछ व्यर्थ है।
3. और इस संदर्भ में, उस अवसर पर, भगवान बुद्ध ने यह गंभीर वचन कहा:
हे भिक्षुओं, एक अजन्मा, अनादि, अनिर्मित, निराकार रूप विद्यमान है। हे भिक्षुओं, यदि यह अजन्मा, अनादि, अनादि, निराकार रूप विद्यमान न होता, तो जन्म लेने वाले, जन्म लेने वाले, निर्मित होने वाले, निर्मित होने वाले के संसार से कोई मुक्ति न होती।

हे भिक्षुओं, क्योंकि एक अजन्मा, अनादि, अनिर्मित, निराकार है, इसलिए जन्म लेने वाले, उत्पन्न होने वाले, निर्मित होने वाले, निर्मित होने वाले से मुक्ति का मार्ग है।

4. [संख्या 1, 2 और 3 के समान] और इस संदर्भ में, उस अवसर पर, भगवान बुद्ध ने यह गंभीर वचन कहा:

जहां निर्भरता है, वहां अस्थिरता है; जहां निर्भरता नहीं है, वहां अस्थिरता नहीं है; जहां अस्थिरता नहीं है, वहां शांति है; जहां शांति है, वहां इच्छा नहीं है; जहां इच्छा नहीं है, वहां आना-जाना नहीं है; जहां आना-जाना नहीं है, वहां जन्म-मृत्यु नहीं है; जहां जन्म-मृत्यु नहीं है, वहां न यह संसार है, न वह संसार है, न दोनों हैं: यही दुःख का अंत है।

5. मैंने ऐसा सुना है। उस समय भगवान बुद्ध भिक्षुओं के साथ मल्ल देश से होते हुए पावा पहुंचे।
और भगवान बुद्ध पावा में, कुम्हार के पुत्र चुंडा के आम के बाग में ठहरे।
और कुम्हार के पुत्र चुंडा ने सुना कि भगवान बुद्ध मल्ला देश से गुजरते हुए पावा पहुंचे हैं और उसके आम के बाग में ठहरे हुए हैं।
और कुम्हार का पुत्र चुंडा, भगवान बुद्ध के पास गया और उनके निकट आकर उन्हें प्रणाम किया और अलग बैठ गया। भगवान बुद्ध ने धार्मिक प्रवचनों से कुम्हार के पुत्र चुंडा को उपदेश दिया, प्रेरित किया, उत्साहित किया और प्रसन्न किया।
और कुम्हार के पुत्र चुंडा ने, भगवान बुद्ध के धार्मिक प्रवचन से प्रेरित, उत्साहित और प्रसन्न होकर कहा: "भगवान बुद्ध और भिक्षुओं के संघ को प्रसन्नता हो कि वे कल का भोजन मेरे साथ करें।"
और भगवान बुद्ध ने अपनी मौनता से सहमति व्यक्त की।
और कुम्हार के पुत्र चुंडा ने जब देखा कि भगवान बुद्ध ने सहमति दे दी है, तो वह अपने आसन से उठा और भगवान बुद्ध को प्रणाम किया, और उनके दाहिनी ओर मुंह करके परिक्रमा करते हुए वहां से चला गया।
और उस रात के अंत में कुम्हार के पुत्र चुंडा ने अपने घर में कठोर और नरम दोनों प्रकार के मीठे व्यंजन और शुक्रमद्दव की एक मात्रा तैयार करने के बाद भगवान बुद्ध से कहा: "हे प्रभु, समय आ गया है, भोजन तैयार है।"
और भगवान बुद्ध ने दोपहर के समय वस्त्र धारण करके, भिक्षापात्र और वस्त्र लेकर भिक्षुओं के साथ कुम्हार के पुत्र चुंडा के घर गए और वहाँ पहुँचकर निर्धारित आसन पर बैठ गए। बैठे-बैठे उन्होंने कुम्हार के पुत्र चुंडा को अपने पास बुलाया और कहा, "चुंडा, तुमने जो सुकरमद्दव तैयार किया है, वह मुझे दे दो और अन्य भोजन, चाहे नरम हो या कठोर, भिक्षुओं को अर्पित कर दो।"
"हे प्रभु, ऐसा ही हो," कुम्हार के पुत्र चुंडा ने भगवान बुद्ध की बात मानते हुए कहा, और उसने अपने द्वारा तैयार किया हुआ सुकरमद्दव भगवान बुद्ध को दे दिया, और अन्य सभी प्रकार के भोजन, चाहे वह कठोर हो या नरम, भिक्षुओं को दे दिए।
और भगवान बुद्ध ने कुम्हार के पुत्र चुंडा को अपने पास बुलाया और कहा: "सुकरमद्दव के अवशेषों को हे चुंडा, उन्हें जमीन में एक गड्ढे में गाड़ दो, क्योंकि मार या ब्रह्मा के लोकों में, या समन या ब्राह्मणों के बीच, या देवताओं और मनुष्यों के लोकों में, मैं किसी ऐसे व्यक्ति को नहीं जानता जो इस प्रकार के भोजन को पचा सके, सिवाय उस पूर्ण पुरुष के।"
"ऐसा ही हो, प्रभु," कुम्हार के पुत्र चुंडा ने भगवान बुद्ध की बात मानते हुए कहा, और सुकरमद्दव के अवशेषों को एक गड्ढे में दफनाकर वह भगवान बुद्ध के पास गया और पास आकर उन्हें प्रणाम किया और अलग बैठ गया।
और भगवान बुद्ध ने कुम्हार के पुत्र चुंडा को धार्मिक प्रवचन देकर उपदेश दिया, उसे प्रेरित किया, उसमें उत्साह भर दिया और उसे प्रसन्न किया, फिर वे अपने आसन से उठे और चले गए।
और कुम्हार के पुत्र चुंडा द्वारा दिए गए भोजन को खाने के बाद, भगवान बुद्ध एक गंभीर बीमारी से ग्रसित हो गए, और उन्हें भयंकर पीड़ा हुई, जिसके बाद रक्तस्राव हुआ और अंततः उनकी मृत्यु हो गई।
उस समय भगवान बुद्ध, जो अत्यंत सचेत और एकाग्रचित्त थे, ने बिना किसी शिकायत के पीड़ा सहन की।
और भगवान बुद्ध ने पूज्य आनंद को अपने पास बुलाया और कहा: "चलो, आनंद; हम कुशीनारा की ओर चलेंगे।"
"ऐसा ही हो, प्रभु;" पूज्य आनंद ने भगवान बुद्ध की बात स्वीकार करते हुए कहा।
मैंने ऐसा सुना है। उसने कुम्हार के पुत्र चुंडा का भोजन ग्रहण किया।
उसने धैर्यपूर्वक असहनीय, जानलेवा पीड़ा सहन की:
जब गुरु ने सुकरमद्दव खाया,
उन्हें भीषण बीमारी हो गई:
राहत मिलने के बाद, भगवान बुद्ध ने कहा: "मैं कुसिनारा नगर के लिए प्रस्थान करूंगा।"
और भगवान बुद्ध मार्ग छोड़कर एक वृक्ष के नीचे जाकर बैठ गए, और पूज्य आनंद को अपने पास बुलाकर बोले, "आनंद, कृपया चार तह वाला वस्त्र तैयार कीजिए, मैं थक गया हूँ और बैठना चाहता हूँ।" भगवान बुद्ध निर्धारित आसन पर बैठ गए, और इस प्रकार बैठे हुए उन्होंने पूज्य आनंद को अपने पास बुलाकर कहा, "आनंद, कृपया मेरे लिए थोड़ा पानी ला दीजिए, मुझे प्यास लगी है और मैं पीना चाहता हूँ।"
ये शब्द कहे जाने पर पूज्य आनंद ने भगवान बुद्ध से कहा, “हे भगवान, अभी-अभी लगभग 500 रथ गुजर चुके हैं, और पहियों के कारण उथला पानी मटमैला और गंदा हो गया है। हे भगवान, पास ही कुकुत्था नदी है, जिसका जल स्वच्छ, ताजगी भरा, शीतल, निर्मल और सुंदर है। भगवान बुद्ध वहां का जल पीकर अपने अंगों को शीतल कर सकते हैं।”
दूसरी बार भगवान बुद्ध ने पूज्य आनंद को अपने पास बुलाया और कहा: "आनंद, कृपया मेरे लिए थोड़ा पानी लाओ, मुझे प्यास लगी है और मैं पीना चाहता हूँ।"

दूसरी बार पूज्य आनंद ने भगवान बुद्ध से कहा, “हे भगवान, अभी-अभी लगभग 500 रथ गुजरे हैं, और पहियों के कारण उथला पानी मटमैला और गंदा हो गया है। हे भगवान, पास ही कुकुत्था नदी है जिसका जल स्वच्छ, ताजगी भरा, शीतल, निर्मल और सुंदर है। भगवान बुद्ध वहां से जल पीकर अपने अंगों को शीतलता प्रदान कर सकते हैं।”

तीसरी बार भगवान बुद्ध ने पूज्य आनंद को अपने पास बुलाया और कहा: "आनंद, कृपया मेरे लिए थोड़ा पानी लाओ: मुझे प्यास लगी है और मैं पीना चाहता हूँ, आनंद।"

"ऐसा ही हो, प्रभु"; पूज्य आनंद ने भगवान बुद्ध की बात मानते हुए कहा और अपना कटोरा लेकर नदी की ओर चल दिए।

और वह नदी, जिसका उथला पानी पहियों के कारण अस्त-व्यस्त होकर मैला और कीचड़युक्त हो गया था, आनंद के आगमन पर स्वच्छ, चमकदार और निर्मल बह रही थी।

और आनंद ने सोचा, “परमेश्वर की महान शक्ति और सामर्थ्य कितनी अद्‌भुत और आश्चर्यजनक है! यह नदी, जिसका उथला जल पहियों से अस्त-व्यस्त होकर मैला और प्रदूषित था, मेरे आने पर शुद्ध, प्रकाशमान और निर्मल बह रही है।” और अपने कटोरे में जल भरकर वे भगवान बुद्ध के पास गए और निकट आकर बोले, “हे प्रभु, परम परमेश्वर की महान शक्ति और सामर्थ्य कितनी अद्‌भुत और आश्चर्यजनक है! यह नदी, जिसका जल आदि [जैसा ऊपर बताया गया है] अब शुद्ध, प्रकाशमान और निर्मल है। हे परम पूज्य (भगवान बुद्ध), इस जल को पियो, हे सुखी, इस जल को पियो।”

और भगवान बुद्ध ने उस जल को पिया।

और भगवान बुद्ध भिक्षुओं के एक बड़े समूह के साथ कुकुत्था नदी पर गए, और वहाँ पहुँचकर उन्होंने नदी में प्रवेश किया और स्नान किया और पानी पिया; और जब वे बाहर आए, तो वे आम के बाग में गए और पूज्य चुंडक को अपने पास बुलाकर कहा: "हे चुंडक, कृपया मेरे लिए चार तह वाला वस्त्र बिछा दीजिए, मैं थक गया हूँ, चुंडक, और लेटना चाहता हूँ।"

"ऐसा ही हो, प्रभु"; पूज्य चुंडक ने भगवान बुद्ध की सहमति में कहा और उन्होंने चार परतों वाला वस्त्र फैला दिया।

और भगवान बुद्ध शेर की तरह अपनी दाहिनी ओर लेट गए, एक पैर दूसरे पर रखकर, सचेत और जागरूक होकर, उठने के विचार में लीन हो गए।

और आदरणीय चुंडक भगवान बुद्ध के सामने वहां बैठे थे।

"बुद्ध शुद्ध, आनंददायी, निर्मल कुकुत्था नदी की ओर गए;
थके-हारे, गुरु, परिपूर्ण पुरुष, इस संसार में अद्वितीय, नदी में कूद पड़े:
गुरु ने स्नान किया और जल पिया;
वह शिष्यों की भीड़ से आगे बढ़ते हुए पार चला गया।
गुरु, परम पूज्य (भगवान बुद्ध), जिन्होंने धर्म का प्रतिपादन किया, आम के बाग में गए।
उसने भिक्षु चुंडा से कहा: 'मेरे लिए चार परतों वाला वस्त्र बिछा दो।'
कुंडा ने ईश्वर की बात मानी और तुरंत ही चार परतों वाला कपड़ा बिछा दिया।
थके-हारे गुरु लेट गए;
और कुंडा उसके बगल में बैठ गया।

और भगवान बुद्ध ने पूज्य आनंद को अपने पास बुलाया और कहा: "हे आनंद, ऐसा हो सकता है कि कोई कुम्हार के पुत्र चुंडा को यह कहकर पश्चाताप का शिकार बना दे: 'हे भिक्षु चुंडा, यह आपके लिए हानि है, यह आपके लिए हानि है, भिक्षु चुंडा, कि सिद्ध पुरुष आपके हाथों से अपना अंतिम भोजन ग्रहण करके इस दुनिया से चले गए।' कुम्हार के पुत्र चुंडा के मन में इस प्रकार का कोई भी पश्चाताप उत्पन्न हो तो उसे इस प्रकार दूर किया जाना चाहिए: 'हे भिक्षु चुंडा, यह आपके लिए लाभ है, यह आपके लिए लाभ है, कि पूर्ण पुरुष आपके हाथों से अपना अंतिम भोजन ग्रहण करके इसलोक को प्राप्त करें। हे भिक्षु चुंडा, मैंने स्वयं उनकी उपस्थिति में ये शब्द सुने हैं, ये शब्द मुझे भगवान बुद्ध के मुख से प्राप्त हुए हैं: 'दो दान हैं जो मुझे सर्वोच्च लाभ, सबसे अधिक लाभ प्रदान करते हैं, अन्य सभी दानों से बढ़कर, अधिक फलदायी, अधिक परिपूर्ण हैं।' ये दो दान क्या हैं? एक वह दान जो पूर्ण पुरुष ने परम ज्ञान प्राप्त करते समय ग्रहण किया था, और दूसरा वह दान जो उन्होंने इसलोक को प्राप्त करते समय ग्रहण किया था, उस पूर्ण अंतःकरण में जिसमें 'आसक्ति' का नाश हो जाता है। ये दो दान हैं, जो परिणाम में सबसे परिपूर्ण, अपने परिणाम में सबसे पूर्ण, अन्य सभी दानों से बढ़कर, लाभ में अधिक, फल में अधिक हैं। आदरणीय चुंडा, कुम्हार के पुत्र ने ऐसे कर्म संचित किए हैं जो दीर्घायु, स्तुति, स्वर्ग, यश और सद्‌गुणों के मार्ग पर चलने के लिए प्रेरित करने वाले प्रभाव का कारण बनते हैं। हे आनंद, कुम्हार के पुत्र चुंडा के मन में जो भी पश्चाताप उत्पन्न हो, वह इसी प्रकार दूर हो जाना चाहिए।

और इस संदर्भ में, उस अवसर पर, भगवान बुद्ध ने यह गंभीर वचन कहा:

"दान देने वाले का पुण्य बढ़ता है;"

जब इंद्रियों पर नियंत्रण होता है तो क्रोध उत्पन्न नहीं होता। ज्ञानी लोग बुराई का त्याग करते हैं, इच्छा, पाप और मोह का नाश करके। मनुष्य निर्वाण प्राप्त कर लेता है।

6. मैंने ऐसा सुना है। उस समय भगवान बुद्ध कई भिक्षुओं के साथ मगध देश में घूमते हुए पाटलिगमा (पटना) पहुंचे।
और पाटालिगमा के गृहस्थ शिष्यों ने यह सूचना सुनी कि भगवान बुद्ध, कुछ भिक्षुओं के साथ, मगध क्षेत्र में भ्रमण करने के बाद पाटालिगमा पहुंचे थे।
और पाटालिगमा के गृहस्थ शिष्य भगवान बुद्ध के पास गए और उनके निकट आकर उन्हें प्रणाम किया और अलग बैठ गए। इस प्रकार बैठे हुए पाटालिगमा के गृहस्थ शिष्यों ने भगवान बुद्ध से कहा, "कृपा हो कि भगवान बुद्ध हमारे घर आएं।"
और भगवान बुद्ध ने अपनी मौनता से सहमति व्यक्त की।
पाटालिगमा के शिष्यों ने जब देखा कि भगवान बुद्ध ने सहमति दे दी है, तो वे अपने आसनों से उठकर भगवान बुद्ध को प्रणाम किया और उनके दाहिनी ओर परिक्रमा करते हुए अपने विश्रामगृह लौट गए। वहाँ पहुँचकर उन्होंने विश्रामगृह को व्यवस्थित किया, आसन लगाए, जलपात्र रखे और दीपक जलाए। यह सब करने के बाद वे भगवान बुद्ध के पास गए और उनके निकट आकर उन्हें प्रणाम किया और आदरपूर्वक अलग खड़े हो गए। इस प्रकार खड़े होकर पाटालिगमा के शिष्यों ने भगवान बुद्ध से कहा, “हे प्रभु, विश्रामगृह व्यवस्थित है, आसन लगे हुए हैं, जलपात्र रखे हुए हैं और दीपक जलाए हुए हैं। अब भगवान बुद्ध अपनी इच्छा अनुसार कार्य करें।”
और भगवान बुद्ध ने दोपहर के समय वस्त्र धारण करके, भिक्षापात्र और वस्त्र लेकर भिक्षुओं के साथ विश्रामगृह की ओर प्रस्थान किया। वहाँ पहुँचकर, भगवान बुद्ध ने अपने पैर धोए और विश्रामगृह में प्रवेश कर पूर्व दिशा की ओर मुख करके मध्य स्तंभ के पास बैठ गए। भिक्षुओं ने भी अपने पैर धोकर विश्रामगृह में प्रवेश किया और पूर्व दिशा की ओर मुख करके मध्य दीवार के पास बैठ गए; भगवान बुद्ध उनके सामने थे। पाटालिगमा के गृहस्थ शिष्यों ने भी अपने पैर धोकर विश्रामगृह में प्रवेश किया और पश्चिम दिशा की ओर मुख करके पूर्व दीवार के पास बैठ गए; भगवान बुद्ध उनके सामने थे।
और इस प्रकार भगवान बुद्ध ने पाटालिगमा के गृहस्थ शिष्यों को संबोधित किया:
"हे गृहस्वामियों, दुराचारी के कारण दुराचारी को पाँच प्रकार की हानियाँ उठानी पड़ती हैं। ये पाँच हानियाँ क्या हैं?"
(1) हे गृहस्वामियों, इस संसार में दुराचारी आलस्य के कारण सत्य में चूक करता है और उसे संपत्ति का भारी नुकसान होता है। सत्य में चूक के कारण दुराचारी को होने वाला यह पहला नुकसान है।
(2) इसके अतिरिक्त, ऐ गृहस्वामियों, दुराचारी के मामले में, जो सद्‌गुण में विफल हो जाता है, उसकी बदनामी होती है। सद्‌गुण में विफल होने वाले दुराचारी को यह दूसरी हानि होती है।
(3) ऐ गृहस्वामियों, जब भी कोई दुराचारी, जो सद्‌गुणों में विफल है, क्षत्रिय, ब्राह्मण, गृहस्थ या समन जैसी सभाओं में जाता है, तो वह उनके सामने लज्जित और परेशान हो जाता है। सद्‌गुणों में विफल दुराचारी को यही तीसरी हानि होती है।
(4) इसके अतिरिक्त, ऐ गृहस्वामियों, जो दुराचारी सद्‌गुण में विफल हो जाता है, वह अशांति की अवस्था में मरता है। सद्‌गुण में विफल होने वाले दुराचारी को यह चौथी हानि होती है।
(5) ऐ गृहस्वामियों, दुराचारी, जो धर्महीन है, मृत्यु के बाद शरीर के नष्ट होने पर नरक में दंड, पीड़ा और यातना की अवस्था में जन्म लेता है। धर्महीनता के कारण दुराचारी को होने वाली यह पाँचवीं हानि है।
हे गृहस्वामियों, ये वे पाँच हानियाँ हैं जो दुराचारी को सत्यनिष्ठा के अभाव के कारण होती हैं।
हे गृहस्वामियों, सदाचारी व्यक्ति को सद्‌गुणों के अभ्यास से पाँच लाभ प्राप्त होते हैं। ये पाँच लाभ क्या हैं?
(1) हे गृहस्वामियों, इस संसार में सदाचारी पुरुष परिश्रम के बल पर प्रचुर धन-संपत्ति अर्जित करता है। सदाचारी पुरुष को मिलने वाला यह पहला लाभ है।
(2) इसके अतिरिक्त, ऐ गृहस्वामियों, सदाचार का अभ्यास करने वाले धर्मनिष्ठ व्यक्ति के मामले में, अच्छी प्रतिष्ठा उत्पन्न होती है। यह सदाचार का अभ्यास करने वाले धर्मनिष्ठ व्यक्ति का दूसरा लाभ है।
(3) हे गृहस्वामियों, जब भी कोई धर्मनिष्ठ पुरुष, जो सद्‌गुणों का पालन करता है, क्षत्रिय, ब्राह्मण, गृहस्थ या समन जैसी सभाओं में जाता है, तो वह उनके पास जाने में लज्जित या विचलित नहीं होता। यह धर्मनिष्ठ पुरुष को मिलने वाला तीसरा लाभ है।
(4) इसके अलावा, ऐ गृहस्वामियों, सदाचारी पुरुष शांतिपूर्वक मरता है। सदाचारी पुरुष को मिलने वाला यह चौथा लाभ है।
(5) ऐ गृहस्वामियों, सदाचारी पुरुष, मृत्यु के बाद शरीर के नष्ट होने पर, स्वर्ग में सुखमयी अवस्था में जन्म लेता है। यह सदाचारी पुरुष को प्राप्त होने वाला पाँचवाँ लाभ है। ऐ गृहस्वामियों, सदाचारी पुरुष को प्राप्त होने वाले ये पाँच लाभ हैं।
और भगवान बुद्ध ने गृहस्थ शिष्यों को इस धार्मिक प्रवचन से उपदेशित, प्रेरित, उत्साहित और प्रसन्न करते हुए उन्हें विदा किया और कहा: "हे गृहस्थों, रात्रि ढल चुकी है। अब आप जो उचित समझें वही करें।"
और पाटालिगमा के गृहस्थ शिष्यों ने भगवान बुद्ध के वचनों की प्रशंसा करते हुए और धन्यवाद देते हुए, अपने स्थानों से उठकर, उनके दाहिनी ओर मुख करके परिक्रमा करते हुए प्रस्थान किया।
और पाटालिगमा के गृहस्थ शिष्यों के चले जाने के तुरंत बाद, भगवान बुद्ध अपने निजी कक्ष में प्रवेश कर गए।
उस समय मगध के मंत्री सुनीधवसकरों ने वज्जियों को खदेड़ने के लिए पाटलिगमा में एक किला बनवाया था। उस समय भी हजारों की संख्या में देवता पाटलिगमा के घरों में निवास करते थे। जहाँ सबसे शक्तिशाली देवता निवास करते थे, वहाँ वे सबसे शक्तिशाली राजाओं और उनके मंत्रियों को निवास स्थान बनवाने के लिए प्रेरित करते थे। जहाँ कम शक्तिशाली देवता निवास करते थे, वहाँ वे

कम शक्तिशाली राजाओं और उनके मंत्रियों को निवास स्थान बनवाने के लिए प्रेरित करते थे, और जहाँ सबसे निम्न स्तर के देवता निवास करते थे, वहाँ वे सबसे निम्न स्तर के राजाओं और उनके मंत्रियों को निवास स्थान बनवाने के लिए प्रेरित करते थे।
और भगवान बुद्ध ने अपनी दिव्य, मनुष्यों से परे स्पष्ट दृष्टि से, पाटालिगमा के घरों में विचरण करने वाले इन हजारों देवताओं को देखा, और जहाँ कहीं भी सबसे शक्तिशाली देवता, आदि निवास करते थे। [जैसा ऊपर बताया गया है। अनुवाद]
और उस रात के बाद भोर में, भगवान बुद्ध ने पूज्य आनंद को अपने पास बुलाया और कहा: "हे आनंद, पाटालिगमा में इस किले का निर्माण किसने किया?"
"मगध के मंत्री सुनीधवसकरों ने वज्जियों को खदेड़ने के लिए पाटालिगमा में इस किले का निर्माण किया था।"
"आनंद, ऐसा प्रतीत होता है मानो मगध के मंत्री सुनीधवस्करों ने तावतिंसा देवताओं से परामर्श करने के बाद, वज्जियों को खदेड़ने के लिए पाटलिगामा में इस किले का निर्माण किया था। आनंद, मैंने अभी-अभी अपनी दिव्य और निर्मल दृष्टि से, जो मनुष्यों की दृष्टि से कहीं अधिक है, पाटलिगामा के घरों में विचरण करने वाले हजारों देवताओं की इस विशाल संख्या को देखा है। जहाँ कहीं भी सबसे शक्तिशाली देवता आदि विराजमान होते हैं..." [जैसा ऊपर बताया गया है। अनुवाद]
हे आनंद, चाहे कितने ही प्रसिद्ध स्थान हों, व्यापार केंद्र हों, यह किलेबंद शहर उनमें सबसे आगे रहेगा, वाणिज्य का एक प्रमुख केंद्र होगा। परन्तु हे आनंद, पाटालिगमा पर तीन विपत्तियाँ आएंगी - आग, जल और आंतरिक कलह।
और मगध के मंत्री सुनीधवस्कर भगवान बुद्ध के पास गए और उनके निकट आकर उनसे मैत्रीपूर्ण अभिवादन किया। मित्रता और शिष्टाचार का आदान-प्रदान करने के बाद वे आदरपूर्वक एक तरफ खड़े हो गए और इस प्रकार खड़े होकर मगध के मंत्री सुनीधवस्करों ने भगवान बुद्ध से कहा: "कृपा हो कि भगवान गौतम और भिक्षु आज हमारे साथ भोजन करें।"
भगवान बुद्ध ने मौन रहकर सहमति व्यक्त की।
और मगध के मंत्री सुनीधवसकाराओं ने जब देखा कि भगवान बुद्ध ने सहमति दे दी है, तो वे अपने घर गए और वहाँ पहुँचकर उन्होंने मीठे और नरम दोनों प्रकार के भोजन तैयार करने का आदेश दिया और भगवान बुद्ध को बताया कि समय आ गया है; "हे गौतम जी, समय आ गया है, भोजन तैयार है।"
और भगवान बुद्ध ने दोपहर के समय वस्त्र धारण करके, भिक्षापात्र और वस्त्र लेकर भिक्षुओं के साथ सुनीधवस्सकरों के घर गए; और वहाँ पहुँचकर वे निर्धारित स्थानों पर बैठ गए।
और सुनीधिवसकरों ने अपने हाथों से बुद्ध के नेतृत्व में भिक्षुओं को कठोर और नरम दोनों प्रकार के मीठे भोजन परोसे और भेंट किए।
और जब भगवान बुद्ध ने कटोरे से अपना हाथ हटाकर भोजन समाप्त कर लिया, तो सुनीधिवसकर नीचे की ओर अलग बैठ गए, और जब वे इस प्रकार बैठे थे, तब भगवान बुद्ध ने इन श्लोकों से सुनीधिवसकरों को प्रसन्न किया:
जिस भी देश में ज्ञानी व्यक्ति निवास करता है, वह सद्‌गुणी, संयमी और पवित्र लोगों का संरक्षण करते हुए, वहां के देवताओं को भेंट अर्पित करे। इस प्रकार, वे देवता उसका आदर और सम्मान करेंगे, और भविष्य में उस पर माता के समान दया दिखाएंगे। जिसे देवताओं की दया प्राप्त होती है, उसे कभी सौभाग्य की कमी नहीं होती।
और जब भगवान बुद्ध ने इन श्लोकों से सुनीधवस्सकरों को प्रसन्न कर दिया, तो वे अपने आसन से उठे और चले गए।
उस समय सुनीधिवसकार भगवान बुद्ध के पीछे-पीछे कदम-दर-कदम चलते हुए कह रहे थे: "जिस द्वार से समना गौतम आज प्रस्थान कर रहे हैं, उसे गौतम द्वार कहा जाएगा, जिस घाट से वे गंगा नदी पार कर रहे हैं, उसे गौतम घाट कहा जाएगा।"
और जिस द्वार से भगवान बुद्ध निकले थे, उसे गौतम द्वार कहा जाता था।
और भगवान बुद्ध गंगा नदी के किनारे पहुँचे। उस समय नदी किनारों तक भरी हुई थी, इतनी कि एक कौआ भी उसमें से पानी पी सकता था। कुछ लोग नदी पार करने के लिए उत्सुक थे और नाव की तलाश में थे, कुछ बेड़ा खोज रहे थे, और कुछ बेड़ा बनाने में लगे हुए थे।
और भगवान बुद्ध, जैसे कोई बलवान व्यक्ति अपनी मुड़ी हुई भुजा को फैलाता है या अपनी फैली हुई भुजा को वापस मोड़ता है, वैसे ही वे गंगा नदी के इस किनारे से गायब हो गए और भिक्षुओं के साथ दूसरे किनारे पर खड़े हो गए।
और भगवान बुद्ध ने उन लोगों को देखा, जो पार करने के लिए उत्सुक थे, कुछ नाव की तलाश में थे, कुछ बेड़ा ढूंढ रहे थे और कुछ बेड़ा बनाने में लगे हुए थे।
और इस संदर्भ में, उस अवसर पर, भगवान बुद्ध ने यह गंभीर वचन कहा:
"जो लोग दलदल को छोड़कर पुल बनाकर समुद्र पार करते हैं—जबकि दुनिया बेड़ा बना रही होती है—वे बुद्धिमान लोग बच निकलते हैं।"1

7. मैंने ऐसा सुना है। उस समय भगवान बुद्ध आदरणीय नागसमला के साथ कोसल देश के मुख्य मार्ग पर पहुँचे थे।
और पूज्य नागसमला ने रास्ते में देखा कि मार्ग दो भागों में बँट रहा है, और यह देखकर उन्होंने भगवान बुद्ध से कहा, "हे प्रभु, यही मार्ग है, आइए हम इसी दिशा में चलें।"
ये शब्द कहे जाने के बाद, भगवान बुद्ध ने पूज्य नागसमला से कहा: "यही मार्ग है, नागसमला, आइए हम इस दिशा में चलें।"

[भाषण और उत्तर की पुनरावृत्ति। अनुवाद]
तीसरी बार पूज्य नागसमला ने भगवान बुद्ध से कहा, "हे प्रभु, यही मार्ग है, आइए हम इसी दिशा में चलें।" और पूज्य नागसमला ने भगवान बुद्ध का कुंड और वस्त्र जमीन पर पटकते हुए कहा, "हे प्रभु, ये रहे आपके कुंड और वस्त्र।"
जब पूज्य नागसमला मार्ग पर आगे बढ़ रहे थे, तभी लुटेरे आए और उन्होंने उन पर लाठियों से हमला किया, उनका भिक्षापात्र तोड़ दिया और उनके वस्त्र फाड़ डाले। पूज्य नागसमला टूटे हुए भिक्षापात्र और फटे हुए वस्त्रों के साथ भगवान बुद्ध के पास गए और उनके निकट आकर उन्हें प्रणाम किया और आदरपूर्वक अलग बैठ गए। इस प्रकार बैठे हुए उन्होंने भगवान बुद्ध से कहा, "हे प्रभु, अभी जब मैं मार्ग पर आगे बढ़ रहा था, तभी लुटेरे आए और उन्होंने मुझ पर लाठियों से हमला किया, मेरा भिक्षापात्र तोड़ दिया और मेरे वस्त्र फाड़ डाले।"
और इस संदर्भ में, उस अवसर पर, भगवान बुद्ध ने यह गंभीर वचन कहा:--
जो किसी दूसरे के साथ चलता है, उसके साथ रहता है, उसके साथ मेलजोल रखता है,
वह विद्वान, बुराई को भांपकर उसका त्याग कर देता है।
जैसे ही नन्हा बगुला नदी को छोड़कर चला जाता है।"

8. मैंने ऐसा सुना है। एक बार भगवान बुद्ध सावत्थी में, पूर्वी मठ में, विशाखा-मिगारमाता के मंडप में निवास कर रहे थे।
उस समय विशाखा-मिगारमाता के प्रिय पोते का निधन हो गया।
और विशाखा-मिगारमाता असमय, आँसुओं से भीगे हाथों और बालों के साथ, भगवान बुद्ध के पास गईं और पास आकर उन्हें प्रणाम किया और अलग बैठ गईं। तब भगवान बुद्ध ने वहाँ बैठे-बैठे विशाखा-मिगारमाता से कहा, “हे विशाखा, तुम असमय यहाँ आँसुओं से भीगे हाथों और बालों के साथ क्यों आई हो?”
"हे प्रभु, मेरे प्रिय पोते की मृत्यु हो गई है; इसीलिए मैं यहाँ असमय, आँसुओं से भीगे हाथों और बालों के साथ आई हूँ।"
"हे विशाखा, क्या आपको लगता है कि सावत्थी में पुरुषों की संख्या के अनुपात में पुत्र और पोते हैं?"
"हे भगवान बुद्ध, मैंने पाया है कि पुरुषों की संख्या के अनुपात में पुत्र और पोते होते हैं।"
"और सावत्थी, विशाखा के कितने पुरुष प्रतिदिन मरते हैं?"
"हे प्रभु, कभी-कभी श्रावस्ती में प्रतिदिन दस पुरुष मर जाते हैं, कभी नौ, आठ, सात, छह, पांच, चार, तीन, दो; कभी-कभी, हे प्रभु, दिन में केवल एक ही पुरुष मरता है। श्रावस्ती में मरने वालों की कोई कमी नहीं है, हे प्रभु।"
"विशाखा, तुम क्या सोचती हो; क्या तुमने कभी कहीं ऐसे पुरुषों को देखा है जिनके वस्त्र (आंसुओं से) भीगे न हों, जिनके बाल (आंसुओं से) भीगे न हों?"
"ऐसा नहीं है, प्रभु; इतने सारे बेटों और पोतों के साथ यह कैसे संभव है?"
"हे विशाखा, जिनके सौ प्रियजन हैं, उनके सौ दुख हैं; जिनके नब्बे प्रियजन हैं, उनके नब्बे दुख हैं; जिनके अस्सी प्रियजन हैं, उनके अस्सी दुख हैं; इत्यादि, जिनके एक प्रियजन है, उनका एक दुख है।"
जिनके पास कोई प्रियजन नहीं होता, उनके लिए कोई दुख नहीं होता।
मैं घोषणा करता हूँ, ये वे लोग हैं जो शोक रहित हैं, मानवीय भावनाओं से मुक्त हैं, निराशा से रहित हैं।"
संसार में जो भी दुःख, विलाप और पीड़ा है, वह सब आसक्ति से उत्पन्न होती है; जहाँ आसक्ति नहीं होती, वहाँ ये सब नहीं होते। इसलिए सुखी और दुःखरहित वे हैं जो संसार की किसी वस्तु से आसक्ति नहीं रखते। पृथ्वी की वस्तुओं से अपना आलिंगन मत करो।

9. मैंने ऐसा सुना है। एक बार भगवान बुद्ध राजगृह में, बांस के जंगल में, कलांदकनिवापा (गिलहरियों का अभयारण्य) में निवास करते थे।
और पूज्य दुब्बा मल्लपुत्त भगवान बुद्ध के पास गए और उनके निकट आकर उन्हें प्रणाम किया और आदरपूर्वक अलग बैठ गए, और इस प्रकार बैठे हुए उन्होंने भगवान बुद्ध से कहा: "हे सुखी, मेरे इस दुनिया से चले जाने का समय आ गया है।"
"करो, हे दुब्बा, जैसा उचित लगे।"
और पूज्य दुब्बा मल्लपुत्त अपने आसन से उठे और भगवान बुद्ध को प्रणाम किया, और उनके दाहिनी ओर मुंह करके परिक्रमा करते हुए आकाश में पालथी मारकर बैठ गए, और जब उन्होंने एक प्रमुख विचार (इस मामले में अग्नि का) पर स्थिर ध्यान केंद्रित करने से प्रेरित रहस्यमय ध्यान की उस अवस्था को प्राप्त कर लिया, तो वे और भी ऊपर उठे और अंततः निर्वाण को प्राप्त हुए।
और जब पूज्य दुब्बा मल्लपुत्त इस प्रकार आकाश में विलीन हो गए; आकाश में पालथी मारकर बैठे हुए, और एक प्रमुख विचार (इस मामले में, अग्नि का) पर स्थिर ध्यान द्वारा प्रेरित रहस्यमय ध्यान की उस अवस्था को प्राप्त करते हुए, और उससे भी ऊपर उठकर निर्वाण को प्राप्त कर गए, तो उनके शरीर का, जो ज्वालाओं से जलकर भस्म हो गया था, राख या कालिख का कोई अवशेष नहीं बचा था।

जैसे मक्खन या तेल को आग में जलाकर भस्म कर देने पर राख या कालिख का कोई अवशेष नहीं बचता, वैसे ही पूज्य दुब्बा मल्लपुत्त के साथ भी हुआ। जब उनका शरीर आग में जलकर भस्म हो गया, तो राख या कालिख का कोई अवशेष नहीं बचा, क्योंकि वे आकाश में उठकर पालथी मारकर बैठ गए थे। उन्होंने एक प्रमुख विचार (अग्नि) पर एकाग्र ध्यान केंद्रित करके रहस्यमय ध्यान की अवस्था प्राप्त कर ली थी और उससे भी ऊपर उठकर निर्वाण को प्राप्त कर लिया था।
और इस संदर्भ में, उस अवसर पर, भगवान बुद्ध ने यह गंभीर वचन कहा:
"शरीर विलीन हो गया है, बोध नष्ट हो गया है, सभी संवेदनाएं समाप्त हो गई हैं, अस्तित्व के तत्व मिट गए हैं, चेतना विश्राम में डूब गई है।"

10. मैंने ऐसा सुना है। एक बार भगवान बुद्ध अनाथपिंडिका के उद्यान, जेतवन में, सावत्थी में निवास कर रहे थे।
और भगवान बुद्ध ने अपने शिष्यों को अपने पास बुलाया और कहा: "हे शिष्यों।"
"हे प्रभु," उन शिष्यों ने भगवान बुद्ध की ओर ध्यान देते हुए कहा।
और भगवान बुद्ध ने कहा: "हे शिष्यों, जब दुब्बा मल्लपुत्त वायु में उठे और आकाश में पालथी मारकर बैठ गए, तो कोई अवशेष नहीं बचा, इत्यादि। [जैसा ऊपर बताया गया है। अनुवाद]।"
और इस संदर्भ में, उस अवसर पर, भगवान बुद्ध ने यह गंभीर वचन कहा:
"जैसे भट्टी से निकलने वाली ज्वलंत चिंगारियां एक-एक करके बुझ जाती हैं..."
और कोई नहीं जानता कि वे कहाँ गए हैं; ऐसा ही उन लोगों के साथ होता है जिन्होंने पूर्ण मुक्ति प्राप्त कर ली है, जिन्होंने इच्छाओं के सैलाब को पार कर लिया है, जिन्होंने निर्वाण के शांत आनंद में प्रवेश कर लिया है।
इनका कोई निशान बाकी नहीं बचा है।